माटि बजा रहल अछि

माटि बजा रहल अछि

यात्रा प्रसंग

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-340-5748-5

दाम : 350 रूपया
सर्वाधिकार सुरक्षित © : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पहिल संस्करण :2024

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

माटि बजा रहल अछि A travelogue by Shri.Rabindra Narayan Mishra.

एहि पोथीक सर्वाधिकार पुस्तकक लेखक श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र लग सुरक्षित अछि । काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति एवम् रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि ।

माटि बजा रहल अछि

यात्रा प्रसंग

रबीन्द्र नारायण मिश्र

स्नेहार्पण

जीवन यात्राक सहगामिनी

श्रीमती आशा मिश्रकेँ

लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र
माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी
जन्म तिथिः२ जनबरी १९५४(प्रमाण पत्र)

२४ अगस्त १९५२(जन्मपत्र)
पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह
मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी
वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)/
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)
शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे
प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

श्री रबीन्द्र नारायण मिश्रक प्रकाशित कृति :मैथिलीमे:-

प्रकाशन वर्ष:2017
१. ‘भोरसँ साँझ धरि’ (आत्म कथा), २. ‘प्रसंगवश’ (निवंध), ३. ‘स्वर्ग एतहि अछि’ (यात्रा प्रसंग),

प्रकाशन वर्ष:2018

४. ‘फसाद’ (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै’ (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2019

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

प्रकाशन वर्ष:2020

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

<u>प्रकाशन वर्ष:2021</u>

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

<u>प्रकाशन वर्ष:2022</u>

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३. संयोग(कथा संग्रह) २४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

<u>प्रकाशन वर्षः2023</u>

२५.दीप जरैत रहए(उपन्यास) २६.ठेहा परक मौलायल गाछ(उपन्यास) २७.पटाक्षेप(उपन्यास)

<u>प्रकाशन वर्षः2024</u>

२८ माटि बजा रहल अछि(यात्रा प्रसंग) २९ जयतु जानकी(उपन्यास)

In English: -

<u>Year of publication:2018</u>

1. The Lost House (Collection of short stories)
2. Life is an art

हिन्दी में –

प्रकाशन वर्ष:2019
१.न्याय की गुहार

अनुक्रम

१ जय सोमनाथ ९

२ जय महाकाल ३३

३ गया गेल रही ४९

४ चित्रकुटक घाटपर ६२

५ वृंदावनक कुंज गलीमे ७२

६ माटि बजा रहल अछि ८४

७ नीलांचल पर्वत वासिनी १०२

जय सोमनाथ !

बहुत दिनसँ सोमनाथ महादेवक दर्शन करबाक इच्छा छल। द्वारकाधीश जेबाक सेहो इच्छा छल। सन्२०१२मे हम सरकारी यात्रापर अहमदाबाद गेलो रही। हम गुजरात सरकारक राजकीय अतिथि छलहुँ । बहुत स्वागत भेल रहए। गुजरात सरकारक अधिकारीलोकनि अहमदाबाद आ लगपासक प्रमुख स्थानसभ देखओने रहथि। ओहि समयमे स्टैच्यू ऑफ यूनिटी बनल नहि रहैक। ओकर स्थान जरूर निर्धारित कएल गेल रहैक। नर्मदानदीपर बनल बान्ह हम देखने रही। मुदा सोमनाथ आ द्वारकाधीश नहि जा सकल रही। कारण ओ स्थानसभ अहमदाबादसँ बेसी फटकी अछि। श्रीमतीजी से संगमे नहि रहथि। भेल जे बादमे दुनूगोटे संगे ओहि स्थानसभपर जाएब ।

अहमदाबाद पहिल बेर सन् २०१२मे गेल रही। तकर एगारह सालक बाद १८अक्टुबर २०२३क हमदुनूगोटे हबाइ जहाजसँ अहमदाबाद बिदा भेलहुँ। ताहि हेतु दूमास पहिनेसँ सभटा योजना बनओने रही। गुगलपर बहुत जानकारी उपलब्ध भेल । अहमदाबादमे रहि रहल हमर एकटा मित्र सेहो किछु जानकारी देलनि। हमरासभकेँ सोमनाथ आ द्वारकाधीश जेबाक मूल कार्यक्रम छल। से कोना जाइ? दिल्लीसँ द्वारकाक हेतु सप्ताहमे मात्र एकटा रेलगाड़ी अछि। ओ ट्रेन पहिनेसँ भरल छल। बहुत दिन आगूओक टिकट नहि भेटि रहल छल। सोमनाथ वा द्वारकाधीशसँ सटले हबाइ अड्डा नहि अछि। जामनगर,राजकोट वा अहमदाबाद तीनू हबाइ अड्डा द्वारकासँ क्रमशः १४० किलोमीटर, २२५किलोमीटर, ३८६किलोमीटर फटकी अछि। तकर बाद ट्रेन, बस वा टैक्सीसँ जाए पड़त। बहुत सोच-विचारक बाद हमसभ अहमदाबाद होइत जेबाक निर्णय केलहुँ। तकर एकटा कारण ईहो छल जे अहमदाबादमे केन्द्र सरकारक अतिथिगृहमे रहबाक हेतु कोठरी भेटि जेबाक संभावना छल। हमसभ दिल्लीसँ अहमदाबाद जेबाक १८ अक्टुबर २०२३क टिकट लए लेलहुँ। वापसी सेहो अहमदाबादेसँ २८अक्टुबर २०२३क टिकट लए लेलहुँ । अहमदाबादसँ सोमनाथ आ सोमनाथसँ द्वारकाधीश जेबाक योजना छल। तदनुसार

हमसभ ओहिसभठाम पहुँचबाक हेतु रेलक टिकट लेलहुँ । अहमदाबादसँ सोमनाथ जेबाक हेतु बहुत नीक ट्रेन (सोमनाथ एक्सप्रेस) छैक । अहमदाबादमे ट्रेनमे चढ़लाक बाद भोरे हमसभ सोमनाथ पहुँचि सकैत छलहुँ । तहिना सोमनाथसँ द्वारकाधीशक हेतु ट्रेनक टिकट भेटि गेल। द्वारकाधीशसँ अहमदाबाद जेबाक हेतु सेहो रेलमे आरक्षण करबा लेलहुँ । बस वा टैक्सी यात्रा करब हमरा लोकनिकेँ पसिंद नहि भेल । ट्रेन बेसी सुविधाजनक बुझाएल ।

रेल ,हबाइ जहाजक टिकटक ओरिआन भए गेलाक बाद हमसभ ओहि स्थानसभपर रहबाक व्यवस्थामे लागि गेलहुँ। अहमदाबादमे केन्द्र सरकारक होलीडे होम छैक। हमरा उम्मीद रहए जे ओहिमे जगह भेटि जाएत। नियमानुसार सेवानिवृत्त लोकनि ४५दिन पहिने ओहिमे आनलाइन आरक्षण करबा सकैत छथि। मुदा से भेल नहि। जहिए ओ खुजल ताहिसँ पहिने ओ भरि चुकल छल। आब की कएल जाए? होटलसभ महग बुझाएल। बारह साल पहिने सन्२०१२मे जे हम अहमदाबाद गेल रही तखन गुजरात सरकारक एकटा वरिष्ठ अधिकारीसँ परिचय भेल रहए। हुनके अपन समस्या कहलिअनि। यद्यपि ओ पछिला साल सेवानिवृत्त भए गेल छथि तथापि अहमदाबादक राजकीय अतिथिगृहमे हमरासभक रहबाक जोगार करबा देलनि। अस्तु,अहमदाबादमे रहबाक समस्याक समाधान तँ भए गेल। आब सोमनाथ आ द्वारकाधीशक व्यवस्था करबाक छल। गुगलपर बहुत खोज केलहुँ । ताहि आधारपर सोमनाथमे सोमनाथ मंदिर ट्रस्टक वेबसाइटक जनतब भेल । ओतहिसँ ट्रस्ट द्वारा संचालित धर्मशालाक आनलाइन आरक्षणक जानकारी सेहो भेटल। हम तुरंत माहेश्वरी धर्मशालामे तीनदिनक हेतु एकटा सूट ६००० रुपया भुगतान कए आरक्षित करबा लेलहुँ। एहिमे सँ लगभग तेरहसँ रुपया बादमे वापसी काल हमरा वापस कए देल गेल ।

आब रहि गेल द्वारकाधीशमे रहबाक समस्या। ओहिठामक मंदिर ट्रस्टक धर्मशालामे आनलाइन आरक्षण नहि होइत छैक। ओतए पहुँचलाक बादे खाली रहलापर डेरा भेटि सकैत अछि। आर धर्मशालासभ आनलाइन देखाएल। मुदा हमर एकटा मित्र इस्कान मंदिरक आवासमे जोगार करबाक

परामर्श देलनि। गुगलक माध्यमसँ ओहिठामक मोबाइल नंबर भेटल । मोबाइल नंबरपर फोन केलहुँ । फोन लागि गेल । ओ जेना-जेना कहलाह से सभ करैत आनलाइन तीनदिनक ४५०० टाका जमा करा देलिऐक। तकर बाद तीनदिनक हेतु एकटा कोठरी हमरासभक हेतु आरक्षित करबा देलनि आ ह्वात्सएपपर तकर पुष्टिओ केलनि । एहि तरहेँ अहमदाबाद,सोमनाथ आ द्वारका तीनूठाम रहबाक व्योंत सेहो भए गेल । आब ईश्वरसँ एतबे प्रार्थना रहए जे हमसभ शुभ-शुभ कए यात्रा संपन्न कए ली,कोनो विघ्न-वाधा नहि होअए। समय नीकसँ कटि जाए ।

१८ अक्टुबर २०२३क भोरे पाँच बजे हम दुनू बेकती टैक्सीसँ दिल्ली हबाइ अड्डाक टर्मिनल तीन हेतु बिदा भेलहुँ । एकदिन पहिने आनलाइन चेक इन करा चुकल रही। तकर प्रिंट आउट संगमे राखि लेने रही। आधार कार्ड सेहो संगमे छलहे । भोरुका समय ,सड़क एकदम खालीए रहैक। हमसभ छओ बजे हबाइ अड्डा पहुँचि गेल रही। तकर बाद जल्दीए आवश्यक जाँच-पड़तालक बाद हमरासभकेँ बत्तीस नंबर द्वारि लग जेबाक अनुमति भेटि गेल। हबाइ जहाजकेँ उड़बामे अखन बहुत समय बाँचल रहैक। हमसभ चैनसँ ओतए चाह पीलहुँ आ प्रतीक्षा करए लगलहुँ हबाइ जहाजमे बैसबाक । करीब घंटा भरि बैसलाक बाद लोकसभकेँ पाँतिमे आगू ससरैत देखि हमहूँसभ ठाढ़ भए गेलहुँ । थोड़बे कालमे हम दुनू बेकती हबाइ जहाजमे अपन-अपन सीटपर बैसि गेल रही। देखिते-देखिते जहाज भरि गेलैक। थोड़े कालक बाद ओ गुड़गुड़ाए लगलैक। क्रमशः हबाइ जहाजक पहिआसभ पहिने अस्थिरे,फेर तेजीसँ आगू बढ़ि रहल छल। हम बाहर देखैत रही कि ताबतेमे जहाज जमीन छोड़ि देलक,हुर्र दए आकाशमे उड़ए लागल। दू सँ तीन मिनटक भीतरे ओ ततेक ऊपर चलि गेल जे नीचाँक सभ किछु बहुत छोट-छोट देखाए लागल। यात्रीसभ अपना-अपनामे मगन छलाह। हमहूँसभ आपसमे किछु-किछु बतिआइत रहलहुँ।

थोड़बे कालक बाद जलखै परसल गेल,पानिक बोतल देल गेल। जलखै खतम कए हमसभ पानि पीबिए रहल छलहुँ कि उद्घोषणा होमए लागल-

"हमसभ दस मिनटमे अहमदाबाद पहुँचि रहल छी। ओहिठामक मौसम सामान्य अछि।"

आश्चर्यो भेल जे कनीके काल पहिने तँ दिल्लीमे हबाइ जहाजपर चढ़ल रही । आब अहमदाबाद पहुँचिओ रहल छी। इएह छैक हबाइ जहाजमे यात्रा करबाक फएदा। अहमदाबाद दिल्लीक तुलनामे बहुत छोट हबाइ अड्डा छैक। हबाइ जहाजसँ उतरि हमसभ बसमे चढ़ि कनीके कालमे बेल्ट संख्या छओ लग पहुँचि अपन-अपन झोरा लेलहुँ आ हबाइ अड्डासँ शुभ-शुभ बाहर भए गेलहुँ । ओहिठामसँ ओलाक टैक्सी आरक्षित केलहुँ आ आधा घंटासँ पहिने राजकीय अतिथि गृह पहुँचि गेलहुँ । हमरासभ लेल कोठरी संख्या २०५ आरक्षित छल। ओहि कोठरीमे पहुँचि हमसभ बहुत आश्वस्त छलहुँ ,निश्चिन्तो । कारण यात्राक पहिल चरण सफलतापूर्वक पूर्ण भेल आ हमसभ दिल्लीसँ अहमदाबाद अतिथिगृह पहुँचि गेल रही। अतिथिगृहमे पहुँचितहि चारिकप चाहक आदेश फोनपर देलिऐक। ओ दोबारा पुछलक-

“चारि कप।”

हम कहलिऐक-

“हँ, हँ चारि कप।”

बात ई छैक जे हमसभ दिनभरिमे एक्के बेर चाह पीबैत छी,भोरमे,मुदा सामान्य चाहक कपक तुलनामे कैकगुणा बेसी चाह रहैत अछि। तेँ हम चारि कप चाहक आदेश देलिऐक जाहिसँ कम सँ कम दोबर चाह तँ रहबे करत । अतिथिगृहमे चाह,जलखै आ भोजनक उत्तम प्रबंध छल। बस समयपर आदेश दए दिऔक। से यदि नहि देबैक तखन चुकि जाएब । बड़काटा छिपलीमे चाहसँ भरल चाहक केतली आ चारिटा खाली कप संगमे फराकसँ राखल चिन्नी। ईश्वरक कृपासँ हमसभ चिन्नी सहित चाह पीबैत छी। तेँ आगूसँ चिन्नी पहिने मिला कए आनबाक हेतु कहलिऐक । तेहन चाहक स्वाद बेसी नीक रहैत छैक । चाह पीलाक बाद हमसभ जलखैओ केलहुँ। भोजनक आदेश सेहो दए देलिऐक आ निचेन भए थोड़े काल विश्राम केलहुँ।

एकबजेक आसपास भोजन बनि जेबाक सूचना भेटल। ओ पुछलक-

"अपनेक आज्ञा होअए तँ कोठरीएमे लेने आबी।"

"ठीक छैक।"

थोड़बे कालमे बड़का-बड़का थारमे भोजन लेने एकगोटे आबि गेल। थारीक आकार आ प्रकार तँ देखैत बनैत छल। पर्याप्त मात्रामे भात,सोहारी ,कैकटा तरकारी राखल छल। संगमे घोर तँ छलहे। सौंसे गुजरातमे भोजनमे दूटा बात देखबामे आएल-एक तँ सभकिछुमे कनीमनी मिठ्ठ अबस्स मिलाएल भेटत,दोसर घोर अबस्स परसल जाएत । हमसभ कहबो केलिऐक –

"एतेक तँ नहि खा सकब।"

"कोनो बात नहि। जतबे खाएल होअए ततबे खाएब ।"

भोजन कए हमसभ थोड़े काल विश्रामो केलहुँ । बाहर रौद बहुत करगर बुझाएल ।

"आब की करी? अजुका दिन केमहर घुमी?"

"थोड़े काल आर ठहरि जाइत छी। रौद कनी आर कमि जाइक।"-ओ कहलनि।

"ठीके कहलहुँ।"

कनी कालक बाद ओलाक टैक्सी आरक्षित कए हमसभ साबरमती आश्रम पहुँचलहुँ । साबरमती आश्रम हम एकबेर पहिनहुँ गेल छी। तकर बहुत दिन भए गेलैक। तथापि बहुत किछु मोने छल। मुदा आश्रमक भीतर किछु-किछु बदलिओ गेल छल। मुख्यद्वारिसँ भीतर होइते करीब पचास गोटे एक्केठाम ठाढ़ छलाह। एकटा मार्गदर्शक हुनकासभकेँ अंग्रेजीमे किछु-किछु बता रहल छल। हम पता करबाक प्रयास केलहुँ जे आखिर ओ छथि के? आश्रम परिसरमे पुलिस से पर्याप्त मात्रामे छल । बादमे पता लागल जे अहमदाबादमे जी ट्वेन्टी देशक प्रतिनिधिसभक बैसार आयोजित छैक। ओहीमे सँ कोनो देशक प्रतिनिधि गांधी आश्रम देखबाक हेतु आएल छथि। हुनका संगे बहुत रास ताम-झाम छलनि । हमसभ ताबे दोसर दिस घुमबाक प्रयास केलहुँ । महात्मा गांधीक जीवनपर आधारित म्युजिअम देखलहुँ । तरह-तरहक फोटोसभ बहुत व्यवस्थापूर्वक राखल छल। महात्मा गांधीक

कोठरी,हुनकर पत्नीक कोठरी आ अतिथिलोकनिक हेतु एकटा कोठरी अगले-बगल अछि। बहुत साधारण सुविधा ओहिमे छल। कनीके फटकी नान्हिटा कोठरी अछि जाहिमे संत विनोबा भावे दू साल धरि रहैत छलाह । ई आश्रम साबरमती नदीसँ सटले अछि। आब तँ बीचमे देबाल बना देल गेल अछि। अन्यथा पहिने ओहि नदीमे नीचाँ धरि गेल जा सकैत छल। आश्रम परिसरमे कान,मुँह,आ आँखि मुनने महात्मा गांधीक प्रसिद्ध बानरक तीनटा मूर्ति से राखल छल। करीब एकघंटा धरि हमसभ ओतए रहलहुँ । विदेशी अतिथिसभ आब ऊपर आबि गेल रहथि आ हमसभ बाहर द्वारि लग । साबरमती आश्रमसँ हमसभ साबरमती रीभर फ्रान्टपर बनल अटल ब्रिज देखबाक हेतु बिदा भेलहुँ ।

साबरमती आश्रमक हातासँ साबरमती नदीक हरिअर कंचन पानि देखैत बनैत अछि। पानिक हिलकोरसँ नदीक सुदंरता अनुपम भए जाइत छल। हम बड़ीकाल धरि सोचैत रहि गेलहुँ जे किएक ने आर नदीसभक जल एहने पवित्र आ स्वच्छ रहि पबैत अछि?जखन की सरकार एहि हेतु निरंतर प्रयत्नशील अछि। गंगा नदीक जे हालति अछि से सभ जनैत छी। जमुना नदीक हालति सेहो तेहने अछि। सहरसभक सभटा नाला नदीएमे मिलैत अछि। लोकसभ लास नदीमे फेकि दैत अछि। दुर्गापूजा,काली पूजा ,गणेश पूजाक बाद लाखोंक संख्यामे मूर्तिसभ नदीमे भसा देल जाइत अछि। परिणाम सामने अछि। नदीसभक पानि विषाक्त भए गेल अछि।

अहमदाबादक साबरमती नदीपर कतेको पुल बनल अछि जाहिमे अटल ब्रिज नामसँ प्रख्यात पुल वस्तुतः बहुत मनोरम आ आकर्षक अछि। तीन सए मीटर नमगर ई पुल सहरक पूब आ पश्चिमी भागकेँ जोड़ैत अछि। पुलक बीचमे भोजनालय बनल अछि। पुलक बीच-बीचमे बैसबाक प्रबंध अछि। ओतए बैसलाक बाद मधुर संगीत सुनाइत रहैत अछि। नीचाँ नदीक कलकल बहैत जल आ चारूकात पसरल नदीक विस्तार देखि मोन होइत रहैत अछि जे ओतहि रहि जाइ। ओहिठाम फोटो खिचओलहुँ,अमुलक दोकानसँ कीनल गेल लस्सी पीलहुँ । थोड़े काल ओहिपर घुमैत रहलहुँ । कैकटा नवविवाहित जोड़ासभ ओतए आबि रहल छलाह। क्रमशः भीड़ बढ़िते जा रहल छल। आब हमसभ ओहिठामसँ निकलि पुलक पश्चिमी

भागमे फ्लावर पार्क पहुँचलहुँ । साबरमती नदीक काते-काते बहुत दूर धरि बनल फ्लावर पार्कमे हजारों तरहक फूल देखबामे आएल । जतबा घुमि सकलहुँ आगू बढ़ैत गेलहुँ । फेर ओही रस्ता बाटे वापसो भेलहुँ। फ्लावर पार्कसँ निकलि हमसभ थोड़े काल सुस्तेलहुँ । तकर बाद टैक्सीसँ वापस अपन डेरा आबि गेलहुँ ।

काल्हि ओलासँ टैक्सी आरक्षित कए हमसभ रिभरफ्रान्ट जाइत रही । टैक्सी बला गुगुलक नकसा देखि कए हमरासभकेँ उतारि देलक। हम कहबो केलिऐक जे हमरासभकेँ तँ रिभर फ्रान्ट जेबाक छल।

“मुदा अहाँक गुगुलक नकसामे गंतव्य तँ एतुके आबि रहल अछि। कनीके फटकी रिभर फ्रान्ट छैक।”- हाथसँ इसारा कए देखओलक। हम ओकरा कहबो केलिऐक जे हमरासभकेँ ओहिठाम धरि छोड़ि दिअए। मुदा ओ नहि मानलक। हमसभ की करितहुँ?टैक्सीसँ उतरि गेलहुँ। भेल जे कनीके दूर छैक तँ पैरे-पैरे चलि जाइत छी। रिभर फ्रान्ट तँ नदीक काते-काते बड़ी दूर धरि पसरल अछि। ओहिमे थोड़ेक-थोड़ेक दूरपर कैकटा पुल छैक। ओहीमे सँ एकटा अटल ब्रिजक नामसँ जानल जाइत अछि। ओहिठाम जेबाक हेतु टिकट लेबए पड़ैत छैक। लगेमे फ्लाबर पार्क सेहो छैक। तकरो टिकट लेबए पड़ैत छैक। टिकट घर धरि पैरे-पैरे जाइत-जाइत हमसभ नीकसँ थाकि गेलहुँ। टिकट लेला बाद हमसभ जखन अटल ब्रिजपर पहुँचि गेलहुँ तखन तँ सभ दुख बिला गेल। ओहिठामसँ हटबाक मोने नहि होअए। साँझ पड़ि रहल छलैक। हमरासभकेँ फ्लाबर पार्क सेहो घुमबाक छल। तेँ अछता-पछता कए अटल ब्रिजसँ ससरलहुँ । थोड़े काल फ्लाबर पार्कमे घुमलहुँ । तकर बाद फेर ओलाक मारफत टैक्सी आरक्षित करओलहुँ । मुदा ओहिमे बहुत समय लागि गेल। अस्तु,निर्णय केलहुँ जे काल्हि भरिदिना टैक्सी राखब जाहिसँ बीच-बीचमे स्थान परिवर्तनमे सुविधा रहत आ बेर-बेर टैक्सी आरक्षित करबाक आ तकर आगमनक प्रतीक्षा नहि करए पड़त।

आइ अहमदाबादमे हमरसभक दोसर दिन छल। हम आठ घंटाक हेतु उबेरक टैक्सी आरक्षित केने रही। लगभग नओ बजे ओ आबि गेल। हमहूँसभ जलखै कए तैयारे रही। सभसँ पहिने गांधी नगर स्थित स्वामी नारायण मंदिर जेबाक विचार बनल। अहमदाबादसँ गांधी नगर पचीस

किलोमीटर फटकी अछि। रस्तामे तरह-तरहक चीज-वस्तुसभ देखबामे आएल। अदानी समूहक मुख्यालय सेहो ओही मार्गमे देखाइत छल। ओना अहमदाबाद सहरमे कोनो बहुत आकर्षक स्थिति नहि बुझाएल। ओएह पुरान-पुरान मकान आ दोकान,चारूकात गंदगी भरल । हमरा मोनमे रहए जे एतेक दिनक बाद अहमदाबाद दोबारा जा रहल छी। बहुत किछु परिवर्तन भए गेल होएत। मुदा से सभ किछु नहि बुझाएल। गांधी नगर पहुँचलाक बाद जरूर किछु बदललसन बुझाएल। साफ,स्वच्छ आ चाकर रस्तासभ देखाएल। स्वामी नारायण मंदिर हमसभ पहुँचलहुँ तखन ओ बाहरसँ बंदे छल। थोड़े काल प्रतीक्षा केलाक बाद मोबाइल जमा करबाक हेतु गेलहुँ । संबंधित खिड़कीपर कैमरा दिस ताकू आ अहाँक आकृतिकैँ कैमरामे सुरक्षित कए लेल जाएत। तकर बाद अहाँकैँ एकटा टोकन देल जाएत। टोकन लए कए ओएह आदमी वापसीमे जाएत जाहिसँ कैमरा ओकरा चिन्हतैक आ तखने मोबाइल वापस कएल जाएत। एहि तरहेँ मोबाइल बहुत सुरक्षित तरीकासँ राखल जाइत छल। आनो कैकठाम मोबाइल जमा करए पड़ल छल.मुदा एतेक नीक व्यवस्था कतहु नहि रहैक।

स्वामी नारायण मंदिर गेलाक बाद हमसभ बहुत नीक जकाँ मंदिरमे आरती होइत देखलहुँ । मंदिरक परिक्रमा केलहुँ ,लगीचेमे मंदिर द्वारा संचालित दोकानमे किछु-किछु कीनलहुँ आ वापस फेर ओही खिड़कीपर आबि गेलहुँ जतए मोबाइल जमा केने रही। बिना कोनो परेसानीकैँ मोबाइल वापस भेटि गेल। ओहिठामक स्वामी नारायण मंदिर दिल्लीक अक्षरधाम मंदिरसँ बहुत मिलैत अछि। अपितु,दिल्लीक अक्षरधाम बेसीए पैघ अछि। तेँ हमरा लोकनिकैँ एहिठाम कोनो ततेक नबीनता नहि बुझाएल । हँ, दर्शन जरूर बहुत सुविधासँ भए गेल। माहौल एकदम शांतिपूर्ण छल। कोनो प्रकारक असौकर्य नहि छल।

स्वामी नारायण मंदिरसँ निकलि हमसभ वैष्णव देबीक प्रतिकृति मंदिर पहुँचलहुँ । पता लागल जे बारह बजेसँ दर्शन प्रारंभ होएत। हमसभ थोड़ेकाल ओतहि प्रतीक्षा केलहुँ । ओहिठाम कार्यरत प्रहरी तरह-तरहक कबाइत करैत रहैत छल। हमरा लग आबि कए कहैत अछि-

"कहने छलहुँ जे पैताबा निकालि लिअ। एनामे अहाँ भीतर नहि जा सकब। निकालू पैताबा ।" ककरो किछु ककरो किछु ओ बजिते रहैत छल। कैकगोटेसँ तँ झगड़ा सेहो करैत रहल। लगैत छलैक जे सौंसे मंदिरक छार-भार ओकरे कप्पारपर छैक। बारह बजे लोकसभ पाँतिमे लागि गेल। देखिते-देखिते लोक कतएसँ कतए पहुँचि गेल। हमसभ देखिते रहि गेलहुँ । ताबे बेगुसरायक एकटा महिला मैथिलीमे बजैत देखेलीह। ओएह हमरा दुनू बेकतीकेँ अपना आगू ठाढ़ होमए देलनि जाहिसँ हमसभ जल्दीए मंदिर लग पहुँचि सकलहुँ । मंदिरमे तँ तेहन सुरंग बनल छल जे भेल जे जाने चलि जाएत। मुदा आब तँ ओहिमे पैसि गेल रही। वापसो नहि भए सकैत छलहुँ। हमर श्रीमतीजी हमरासँ आगूए रहथि। जेना-तेना दर्शन कए हमसभ बाहर निकललहुँ तखन जानमे जान आएल। केओ कहलक जे बूढ़सभक हेतु फराक रस्ता छैक। मुदा से हमसभ नहि देखि सकलहुँ । ओहि सुरंगेमे गेलाक बाद हमर श्रीमतीजीक ठेहुन कचकि गेलनि,की भेलनि की नहि जे पछिला एक माससँ परेसानीमे छथि। अखनो इलाज चलिए रहल छनि।

एहिठामसँ निकलि हमसभ पहुँचलहुँ कांकरिया ताल। ई अहमदाबादक दोसर सभसँ पैघ ताल मानल जाइत अछि। एकर चारूकात मनोरंजनक तरह-तरहक साधनसभ उपलब्ध अछि। एहिसँ सटले चिड़याखाना सेहो अछि। एकटा आटोरिक्सामे हमसभ चिड़िया घर घुमलहुँ। संगे-संग तालक चारूकात सेहो घुमा देलक। धिआ-पुतासभक हेतु तरह-तरहक खेलक सामग्रीसभ सेहो ओतए उपलब्ध अछि। एहिठामसँ हमसभ रुड़ाबाइक बाबरी पहुँचलहुँ । कहल जाइत अछि जे बाघेला वंशक राजाराणा वीर सिंह छोटसन हिंदू देश दंडई देश पर शासन करैत छलाह । ओ जनताक सुविधाक हेतु एकटा बाबरीक निर्माण शुरू केलथि। मुदा किछु दिनक बाद हुनकर पड़ोसी मुसलमान राजा मोहम्मद बेगदा हुनकापर आक्रमण कए देलक। ओ युद्धमे मारल गेलाह। हुनकर पत्नी रुडाबाइ बहुत सुंदर छलीह । मुसलमान राजा मोहम्मद बेगदा हुनकर सुंदरतासँ मोहित भए बिआहक प्रस्ताव देलक । रानी रुडाबाइ कहलखिन जे यदि मोहम्मद बेगदा बाबरीक काज पूरा करबा देथि तखन ओ हुनकासँ बिआह कए लेतीह। मोहम्मद बेगदा तुरंत हुनकर बात मानि लेलनि । मुदा जखन ओ बाबरी तैयार भए गेल तँ रुडाबाइ ओकर परिक्रमा केलनि आ ओहीमे कुदि

कए प्राण दए देलथि। आब तँ ओ स्थान एकदम उजरल लगैत अछि। भीतरमे बहुत गंध करैत रहैत अछि। तेँ हमसभ बाहरे-बाहर देखलहुँ,थोड़ेकाल ओकर सीढ़ीपर बैसलहुँ आ ओहिठामसँ बिदा भए गेलहुँ।

अहमदाबादक स्थानीय भ्रमण करबाक क्रममे हमसभ साइंस सीटी सेहो गेलहुँ । ओहिठाम फराक-फराक मंडपमे वैज्ञानिक विषय वस्तुसभपर कार्यक्रम देखाओल जाइत अछि। द्वारिएपर टिकट भेटैत अछि। टिकट लेलाक बाद ओ कार्यक्रम देखल जा सकैत अछि। साइंस सीटीमे भीतरमे घुमबाक हेतु वाहनक व्यवस्था अछि। ताहि हेतु फराकसँ टिकट लेबाक होइत अछि।

अहमदाबाद प्रवासक दौरान हमसभ इसकानक मंदिर सेहो गेलहुँ। ओतए छोटसन परिसरमे बहुत किछु देखल जा सकैत अछि। जलखै,भोजनक उत्तम किंतु महग व्यवस्था अछि। भीतरमे प्रसाद कीनल जा सकैत अछि । बाहरसँ दुन्नासँ बेसी दामपर मधुर ओतए बेचल जाइत अछि। बच्चाक लेल छोटसन खेलौना सेहो कीनलहुँ । भगवान कृष्णक वालरुपक छोटसन मूर्ति कीनलहुँ । ओतए विदेशी भक्तसभ निरंतर कीर्तन करैत छलाह। पूर्णतः भारतीय परिधान पहिरने ,पैरमे खराउँ धेने ओ सभ बहुत नीक लगैत छलाह। हमसभ ओतहि भोजन केलहुँ । बहुत स्वादिष्ट मुदा महग भोजन छल। तकर बाद ओहिठामसँ हमसभ वापस अपन आवास आबि गेलहुँ ।

साँझमे हमरालोकनि सोमनाथ एक्सप्रेससँ अहमदाबादसँ सोमनाथ बिदा भेलहुँ । हमसभ वेरावल टीसनपर भोरे पहुँचि गेल रही। ओहिठाम उतरितहि हमरासभकेँ एकटा कुली भेटि गेल। ओ बहुत आत्मीय व्यवहार केलक । ओ लोको तेहने नीक छल। समान लए कए जखन ओ जा रहल छल तखन ओकर प्रसन्नताक अन्ते नहि छल। जे केओ बीचमे भेटैत गेलैक,सभकेँ कहैत गेल जे भगवान ओकर चाह-पानक जोगार कए देलनि। हमसभ ओकर प्रसन्नता आ संतोष देखि अभिभूत छलहुँ । ओ अद्भुत आदमी छल, निरंतर प्रसन्न रहैत छल । ओ उचित किराया लेलक आ आरामसँ हमरासभकेँ आटो/टैक्सी स्टैंड धरि पहुँचा देलक । वेरावल

टीसनसँ बाहर होइतहि एकटा आटो ठीक भए गेल। दू सए टाकामे हमरासभकेँ सोमनाथ मंदिर ट्रष्टक धर्मशाला पहुँचा देलक। बीचमे माछक दुर्गन्धसँ हुनका बहुत परेसानी भेलनि। वेरावलमे माछक बहुत रास कारखाना अछि। समुद्रसँ पकड़ल गेल माछसभकेँ बाहर पठेबाक हेतु ओतहि तैयार कएल जाइत अछि। नाक मुनैत-मुनैत आफद भए गेल छल। रस्तामे यत्र-तत्र तरह-तरहक नाओसभ देखाइत रहल,अधिकांश टुटल-फुटल छल।

सात बजे भोरे हमसभ माहेश्वरी धर्मशाला पहुँचि गेल रही। स्वागत खिड़कीपर बैसल एकगोटे आगन्तुकसभक कागज-पत्तर देखैत छलाह। बहीमे नाम लिखैत छलाह। तकर बाद प्रतीक्षा करबाक हेतु कहि दैत छलाह। ई बुझा गेल जे दस बजेसँ पहिने कोठरी नहि भेटत। ताबे प्रतीक्षा करबाक हेतु आस-पासमे सोफासभ राखल छल। शौचालयक सुविधा सेहो छल। नीचाँ भोजनालयसँ चाह आनि कए हमसभ चाह पीलहुँ। थोड़े काल ओतहि बैसल रहलहुँ । लोकसभ निरंतर अबैत-जाइत रहैत छल। करीब एकघंटाक बाद हमरासभकेँ एकटा पुरजी भेटल। से लए कए मुख्यस्वागतकक्ष जेबाक छल। ओहिठाम आवश्यक खानापुरीक बाद हमसभ वापस माहेश्वरी धर्मशालाक स्वागत कक्ष पहुँचलहुँ । हमरासभकेँ कोठरी संख्या २०१ देल गेल। ओ स्वागत कक्षसँ सटले भूतलपर अवस्थित छल। हमसभ ओहि कोठरीमे पहुँचि नित्यकर्मसँ निवृत्त भए सोमनाथ महादेवक दर्शन हेतु बिदा भेलहुँ । माहेश्वरी धर्मशालासँ सोमनाथ मंदिर लगीचे अछि। पैरे जा सकैत छलहुँ । मुदा धर्मशालाक सामने आटो लागल छल। हमसभ ओहीसँ मंदिर दिस बिदा भेलहुँ। अहिल्याबाइ द्वारा निर्मित महादेवक मंदिर पहिने आएल। हमसभ ओहिठाम बहुत आरामसँ दर्शन केलहुँ । महादेवपर दूध चढ़ओलहुँ। ओहि परिसरक बीचमे अहिल्याबाइक मूर्ति स्थापित अछि। मुख्य सोमनाथ मंदिरकेँ ध्वस्त केलाक बहुत सालक बाद अहिल्याबाइ एहि मंदिरक निर्माण करओने छलीह। एहिठाम नीकसँ महादेवक दर्शन भए गेलाक बाद हमसभ सोमनाथक मुख्य मंदिर दिस बिदा भेलहुँ ।

सोमनाथ मंदिरमे दर्शनक ई विशेषता अछि जे ओ भोरे छओ बजे शुरू भए जाइत अछि आ रातिमे साढ़े नओबजे धरि अनवरत चलैत रहैत अछि। सामान्यतः मंदिरसभ दुपहरिआमे बंद भए जाइत अछि तँ साँझमे

पाँच बजेक लगपासमे खुजैत अछि। मुदा से एहिठाम नहि होइत अछि। भोरे सात बजे,दुपहरिआमे बारह बजे आ साँझमे सात बजे सोमनाथ महादेवक आरती होइत अछि। रातिमे पौने आठ बजे प्रकाश आ ध्वनि कार्यक्रम सोमनाथ मंदिर परिसरमे होइत अछि।

सोमनाथ मंदिरक परिसर बहुत पैघ अछि। बाहर सुरक्षाक बहुत उत्तम प्रबंध कएल गेल अछि। परिसरमे प्रवेश करितहि फोटोग्राफरसभ घुमैत देखाइत छथि। हमहूँसभ अपन फोटो घिचओलहुँ । तकर बाद मंदिर दिस बढ़लहुँ । भीतर जाइतहि जूता रखबाक उत्तम व्यवस्था कएल गेल अछि। जूता-चप्पल दिऔक,एकटा टोकन भेटत । ओकरा सम्हारि कए राखि लिअ। वापसीमे टोकन देलापर तुरंत ओ झोरा भेटि जाएत जाहिमे अहाँक जूता-चप्पल राखल गेल छल। ई सेवा पूर्णतः निःशुल्क अछि। मुदा अहाँ स्वेच्छासँ चाही तँ किछु दैओ सकैत छिअनि,से ओहिठाम कार्यरत कर्मचारी बेर-बेर बजितो रहैत अछि।

ओहि दिन मंदिरमे बेसी भीड़ नहि छल। भीतर जेबासँ पूर्व पुरुष आ महिलाक फराक-फराक पाँति लगैत अछि। हम तँ भीतर गेलहुँ ,दर्शन केलहुँ आ तुरंते बाहर भए गेलहुँ । मुदा ओ कतहु देखेबे नहि करथि। थोड़े काल एमहर-ओमहर तकैत रहलहुँ । कतहु नहि देखाथि । मंदिरक देबालसँ सटले समुद्र अछि। थोड़े काल सएह देखैत रहलहुँ । तखनो ओ नहि भेटलथि। आब कनी चिंतो होमए लागल। की करी? किछु फुरेबे नहि करए। कनी जोरसँ अबाज देलिऐक-

“केमहर छी ऐ!”

ओ हमर अबाज सुनलथि। असलमे ओ मंदिरेमे बैसि गेल रहथि। हमर अबाज सुनि बाहर अएलीह। हुनका देखि बहुत निचेन भेलहुँ । प्रसाद खिड़कीसँ पर्याप्त मात्रामे प्रसाद लेलहुँ आ हमसभ वापस आबि गेलहुँ । ताबे फोटोबला हमरसभक फोटो बना लेने छल। ओकरासँ फोटो लए हमसभ वापस अपन डेरा दिस बिदा भेलहुँ। एतेक आरामसँ आ एतेक नीकसँ महादेवक दर्शन भए सकत से कल्पनो नहि केने छलहुँ । मुदा से भेल। ताहि हेतु महादेवकेँ वारंबार धन्यवाद दैत रहलिअनि।

मंदिर परिसरसँ सटले समुद्र आ ओहिमे उठैत पानिक तरंग दर्शनीय दृश्य उत्पन्न करैत छल। दूर-दूर धरि कतहु किछु नहि देखाइत छल। बस पानिए-पानि। एकदिस समुद्रक विशालताक स्वाभाविक दर्शन आ दोसर दिस हर हर महादेव! सँ निरंतर गुंजित भए रहल सोमनाथ महादेवक मंदिर। एहिसँ नीक स्वर्ग की भए सकैत अछि?

सोमनाथ मंदिर ट्रष्ट द्वारा संचालित माहेश्वरी धर्मशालामे कोठरी भेटि गेलाक बाद हमसभ बहुत आश्वस्त भेलहुँ । लगीचेमे बनल तहखानामे भोजनालय छल । ओहिठाम चाह,जलखै,आ भोजनक उत्तम प्रबंध छल। टाका दिऔ,चाह पीबु। तहिना जलखै आ भोजनोक व्यवस्था छल। सोमनाथ महादेवक दर्शन भए गेलाक बाद हमसभ जलखै केलहुँ। तकर बाद थोड़े काल आराम केलहुँ । बड़ीकालधरि सोमनाथक वारंबार भेल विध्वंश आ पुनर्निर्माणक गाथा मोनमे अबैत रहल । माहेश्वरी धर्मशालाक सामनेमे मंदिर ट्रष्ट द्वारा स्थापित कएल गेल म्युजिअम अछि। ओहिमे पुरना सोमनाथ मंदिरक भग्नावशेषसभ राखल अछि। किछु भग्नावशेष ओहि भवनक बाहर देबालक संगे राखल अछि। एहि भग्नावशेषकेँ देखि कए केओ दुखी भए सकैत अछि। कतेक निर्ममतासँ अनेक बेर सोमनाथ मंदिरकेँ आक्रान्तासभ द्वारा तोड़ल गेल। तकर बाद फेर नव मंदिर बनाओल गेल। एहि श्रृंखलामे ई सातम सोमनाथ मंदिर थिक । १२ नबंबर १९४७क दिन भारतक तत्कालीन गृह मंत्री लौहपुरुष वल्लभभाइ पटेल अनेक गणमान्यलोकसभक संगे समुद्रजल हाथमे लए संकल्प केलनि जे सोमनाथ मंदिरक पुनर्निर्माण कराओल जाएत । ताहि हेतु सोमनाथ ट्रष्टक स्थापना कएल गेल। ८ मइ १९५०क महाराजा जामसाहेब श्री दिग्विजय संहजी नव मंदिरक शिलान्यास केलथि। भारतक तत्कालीन राष्ट्रपति स्वर्गीय राजेन्द्र प्रसाद द्वारा ११ मइ १९५१क सोमनाथ महादेवक शिवलिंगक प्राणप्रतिष्ठा कएल गेल । जखन स्वर्गीय मोरारजी भाइ देसाइ भारतक भूतपूर्वप्रधानमंत्री एहि ट्र्ष्टक अध्यक्ष रहथि तखन सोमनाथ मंदिरक सभामंडप लग एकटा नृत्यमंदिरक निर्माण करेबाक निर्णय कएल गेल। आखिर नृत्यमंडप बनि गेल। एहिमे १५५ फीट ऊँच सप्तभौम शिखर अछि। ओहिपर ३१फी१ ऊँच ध्वजदंड अछि जाहिमे ५२ गजक कौशयध्वज फहराइत रहैत अछि। स्वर्गीय राजेन्द्र प्रसादजी शिवलिंगक प्राणप्रतिष्ठा करैत काल कहने रहथि-

सोमनाथ मंदिर डंकाक चोटपर कहैत अछि - "जकरा लेल लोककक हृदयमे प्रेम भरल अछि तकरा दुनिआक कोनो शक्ति नष्ट नहि कए सकैत अछि। ई मंदिर स्पष्ट संदेश दैत अछि जे संहार शक्तिसँ सर्जनात्मक शक्ति अधिक बलगर होइत अछि।"

कहल जाइत अछि जे १०२५ई.मे जखन महमुद गजनी सोमनाथ मंदिरपर आक्रमण केलक आ एकरा नीकसँ ध्वस्त कए देलक तखन भगवान सोमनाथ सौराठबासी भगीरथ दत्त शर्मा आ गंगादत्तशर्माकेँ सपना देलथि जे ओसभ सोमनाथक लिंगकेँ लए जाथि। तकर बाद दुनू भाइ सोमनाथ गेलाह आ सोमनाथ महादेवक लिंगकेँ उठा अनलनि । बहुत दिन धरि ओ सभ ओकरा नुका कए रखने रहलथि। बादमे ओकरा स्थापित कएल गेल आ ओहिठाम आइ-काल्हि भव्य मंदिर बनल अछि।

दुपहरिआमे भोजनक बाद चारि बजेसँ स्थानीय प्रमुख स्थानसभ घुमबाक इच्छा भेल । संयोगसँ बाहर निकलितहि बाबूभाइ नामक आटोबला भेटि गेल। ओकरा संगे साढ़े सातसएपर लगपासक प्रमुख स्थानसभ घुमबाक बात तय भेल। ओकरा लगमे एकटा स्थानसभक सूची रहैक । से देखओलक आ ओसभटा स्थानसभ घुमाओत ,से कहलक। हमसभ ओकर बात मानि बिदा भेलहुँ । बाबूभाइ बहुत नीक व्यक्ति छल। ओकरा स्थानीय वस्तुसभक बहुत जनतब छलैक। हमरासभकेँ एहिसँ बहुत मदति भेल। ओ एकटा मार्गदर्शक जकाँ काज केलक । कतहु पहुँचतहि हमरासभकेँ ओहिठामक इतिहास आ महत्वक बारेमे बतबैत। तकर बादे हमसभ आगू बढ़ितहुँ।

भगवान कृष्ण आ महाभारतसँ जुड़ल बहुत रास घटनासभ सोमनाथ आ आसपासक स्थानमे देखबाक अवसर भेटैत अछि। भगवान कृष्णकेँ जतए व्याधाक तीर लगलनि,जाहिठाम हुनकर अंतिम संस्कार भेलनि,जतएसँ व्याधा हुनका तीर मारलक सभ ओहीठाम अछि। बलरामक गुफा सेहो दर्शनीय अछि। कहल जाइत अछि जे बलराम एतहि शरीर त्याग केलथि। सोमनाथ मंदिरसँ चारि किलोमिटर फटकी वेरावलमे भालका तीर्थ नामसँ प्रख्यात मंदिर अछि। जरा नामक व्याधा भगवान कृष्णकेँ हरिण बुझि कए पैरमे तीर मारि देने छल। ओही तीरसँ हुनकर मृत्यु भए गेलनि। ओ

व्याधाक तीर लगलाक बाद थोड़ेक फटकी जा कए अपन देह त्याग केलनि। कहल जाइत अछि जे भगवान कृष्ण एतहि अंतिम साँस लेलथि।हिरण्या नदीक कातमे स्थित ओहि स्थानपर अर्जुन भगवान कृष्णक अंतिम संस्कार केने रहथि। भगवान कृष्णक चरणपादुका ओतए राखल अछि। ओ स्थान गोलोक धामक नामसँ जानल जाइत अछि। समुद्रक कछारपर भालका तीर्थसँ दू-तीन किलोमिटर फटकी वाणगंगा अछि। ओहिठाम महादेवक दूटा लिंग स्थापित अछि। समुद्रमे जखन कम पानि रहैत अछि तखन लोकसभ ओहि लिंग धरि जा सकैत अछि। अन्यथा फटकीएसँ महादेवकेँ गोर लागि लैत अछि। कहल जाइत अछि जे जरा नामक व्याधा एहीठामसँ भगवान कृष्णक पैरक अंगुठाकेँ मृग बुझि कए तीर चला देने छल। बादमे जखन ओ देखलक जे तीर भगवान कृष्णकेँ लागि गेलनि अछि तखन तँ ओ बहुत अफसोच केलक,भगवानसँ क्षमा मांगलक। भगवान कहलखिन-" ई सभ हमर इच्छानुसारे भेल अछि। तेँ तूँ व्यर्थ परेसान नहि रहह।"

सोमनाथ मंदिरसँ चारि-पाँच किलोमीटर फटकी हिरन,कपिला आ सरस्वती नदीक संगम अछि। ई तीनू नदी ओहिठाम अरब सागरमे मिलि जाइत अछि। ओ स्थान बहुत पवित्र मानल जाइत अछि। हमसभ जखन ओहिठाम पहुँचलहुँ तखन एकटा बहुत पुरान सहकर्मी देखेलथि। हमरा होअए जे हुनका देखने छिअनि। ओहो सएह सोचैत रहथि। आखिर ओएह टोकलथि –"मिश्रा सर ।" हुनकर पति सेहो संगे रहथिन। ओ सभ मूलतः केरलक बासी छथि। गृह मंत्रालयमे हमरासभक डेस्कमे काज केने रहथि। हम जखन ओहिठाम पदस्थापित भेल रही तखन हुनकर बदली भए गेल रहनि । मुदा बीच-बीचमे हुनका जरूरी काजसँ बजाओल जानि। हमसभ चारूगोटे संगे फोटो घिचओलहुँ । ओ सभ एकटा समूहमे घुमि रहल छलाह। कैकठामसँ घुमैत-फिरैत सोमनाथो आएल रहथि। हम दुनू बेकती हुनकासभसँ बिदा लए आगू बढ़लहुँ । तकर बाद राम मंदिर,गीता मंदिर,शारदा मठ,जगदगुरु शंकराचार्यक गद्दी,सूर्य मंदिर,हिंगलाज माताक गुफा,भिडभंजन महादेवक दर्शन सेहो बेरा-बेरी केलहुँ । रातिक शाढ़े सात बाजि रहल छलैक। हमसभ थाकि गेल रही । आजुक घुमनाइओ पूर्ण भए चुकल छल। हमसभ वापस अपन डेरा आबि गेलहुँ ।

आइ हमरसभक सोमनाथमे तेसर दिन छल। रातिमे ट्रेनसँ द्वारकाक हेतु प्रस्थान करबाक छल। हमसभ बाबूभाइ आटोबलासँ काल्हिए गप्प कए लेने रही । ओ हमरासभकेँ प्राची तीर्थस्थान लए जेबाक हेतु नओ बजे आबि गेल। ओहिसँ पहिने हमसभ अहिल्याबाइक स्थापित शिवलिंगक फेर दर्शन बहुत नीकसँ कए लेने रही। नित्य महादेवक दर्शनसँ हमसभ बहुत संतुष्ट रही। हमरासभ लग समय छल। तेँ सोचलहुँ जे प्राचीतीर्थ घुमि आबी। कहल जाइत अछि जे एक बेर प्राची सए बेर काशीक बरोबरि होइत अछि। सोमनाथसँ प्राची पचीस किलोमीटर अछि। आटोसँ जेबामे घंटा भरि समय लागल होएत। रस्तामे कोनो एहन विशेष वस्तु नहि देखाएल। हमसभ प्राची पहुँचि कए पिण्डदान केलहुँ । पंडासभ बहुत नीक लोक बुझेलथि। जतबे देबनि से लए लेताह। कोनो झंझटि नहि करताह। सरस्वती नदीक तीरपर अवस्थित प्राची तीर्थमे लगपासक लोकसभ अपन पूर्वजक पिण्डदान करैत छथि। कहल जाइत अछि जे भगवान कृष्ण सेहो अपन यदुवंशीसभक पिण्डदान एतहि केने रहथि। एहिठाम पूजा केलाक बाद लगीचेमे पीपड़ गाछलग बनल द्वारकाधीशक प्रतिमाक दर्शन केलहुँ । तकर बाद ओहिठामसँ कनीक फटकी लक्ष्मीनारायण मंदिर गेलहुँ । वापसी यात्रामे थोड़ेकालक बाद नाथ संप्रदायक मंदिर आ धर्मशाला देखाएल। ओकर हालति बहुत दयनीय छल। मकानसभ ढहि रहल छल। ओहिठाम रहि रहल मठाधीश जरूर अपना लेल बहुत नीक पक्का घर बना लेने छलाह । ओहिठाम गेलाक बाद मोनमे कष्टे भए जाइत छैक जे एहन ऐतिहासिक स्थानक एहन दुर्गति किएक भेल अछि? हमसभ ओहिठामसँ बिदा भेलहुँ । फेर ओएह रस्ता ,ओएह खेत पथार। घंटा भरिक बाद भोजनक समयमे हमसभ सोमनाथ मंदिरक माहेश्वरी धर्मशाला पहुँचि गेलहुँ ।

रातिमे एगारह बजे वेरावल टीसनसँ हमरासभकेँ द्वारकाक हेतु प्रस्थान करबाक छल। साँझमे हमसभ अपन चीज-वस्तुसभकेँ सरिआ लेलहुँ। धर्मशालाक भोजनालयमे भोजन कए लेलहुँ । धर्मशालाक स्वागतीसँ एकटा टैक्सी बलाक फोन नंबर लेलहुँ । ओना बाबूभाइ आटोबला कहने रहए जे हमरा फोन कए देब। हम वेरावल लए चलब। मुदा आटोसँ हमसभ जाए नहि चाही। कारण आटोमे माछक दुर्गंध लगैत। ओ

दुर्गंध कैकबेर ततेक तीक्ष्ण होइत अछि जे रद्द भए सकैत अछि। ताहिसँ बचबाक हेतु टैक्सीसँ जेबाक निर्णय केलहुँ। टैक्सी बला चारिसएमे टीसन पहुँचा देत । धर्मशालाक कोठरीक कुंजी स्वागतीकेँ सुंझा कए हमसभ दस बजेक आसपास टैक्सीसँ वेरावल बिदा भेलहुँ। आधाघंटा बाद साढ़ेदस बजे हमसभ वेरावल टीसनपर पहुँचलहुँ। तुरंत एकटा कुलीसँ दू सएमे बात ठीक भए गेल। हम सभ आब टीसन जेबाक हेतु तैयार रही कि देखैत छी सामान ओएह कुली उठा रहल अछि जे हमरासभकेँ आबए काल भेटल रहए। असलमे हमरासभसँ जे बात केलक से मात्र दलाल छल। ओ बादमे कुलीकेँ बजा अनलक। ओएह कुली हमरासभकेँ चिन्हलक। मुदा एहिबेर पैसा केओ आर ठीक केने रहए। हमसभ ट्रेनमे पहुँचि कुलीकेँ दूसए टाका देलिऐक । ओ बहुत नीकसँ हमरासभकेँ अभिवादन केलक, टाका लेलक आ चलि गेल।

हमसभ अपन स्थानपर बैसि गेल रही। थोड़बे कालमे ट्रेन खुजि गेल। भोरे सात बजे हमसभ द्वारका टीसन पहुँचि गेल रही। टीसनपर ट्रेनसँ उतरैत काल एकटा बच्चा बड़ी जोर-जोरसँ चिकरि रहल छल-“छुटि गेलथि,छुटि गेलथि।” सभक ध्यान ओकरा दिस गेलैक। असलमे ओकर पिताजी ट्रेनेमे रहि गेल रहथि। ताबे ट्रेन खुजि गेलैक। मुदा लोकसभ ट्रेनक गार्डकेँ इसारा केलक। ट्रेन प्लेटफार्मेपर रहए। गार्डक आदेशपर ट्रेन रोकि देल गेल। ओकर पिताजी सामानसभक संगे उतरि सकलाह। हमहूँसभ निश्चिन्त भए आगू बढ़लहुँ ।

द्वारका टीसनसँ बाहर भेलाक बाद आटो /टैक्सी बलासभकेँ ताकि रहल छलहुँ । सभटा आटो धराधर भरि गेल। थोड़े कालक बाद एकटा आटो बला आएल। हम ओकरा इसकान मंदिर चलबाक हेतु कहलिऐक। ओ तीनसए रुपया मंगलक। हम तुरंत हँ कहि देलिऐक । हमरा ओहिठामक आटोक किरायाक सही अनुमान नहि रहए। बादमे पता लागल जे टीसनसँ इसकान मंदिर किराया पचास टाका मात्र हेबाक चाही,बहुत तँ एकसए। हमसभ इसकान मंदिर पहुँचि गेल रही। ओहीठाम हमरसभक रहबाक आरक्षण रहए। बहुत कम जगहमे ओ मंदिर परिसर अछि। मुदा ओहिठामसँ द्वारकाधीशक मंदिर मोसकिलसँ पाँच मिनटक रस्ता होएत। आर-आर प्रमुख स्थानसभ सेहो लगीचे अछि। बजार सेहो लगीचेमे अछि। ताहि

हिसाबे ओ स्थान उत्तम अछि। हमसभ इसकानक स्वागत कक्ष लग गेलहुँ। अपन परिचय देलिऐक आ कोठरीक आरक्षणक विवरण देलिऐक। तुरंत हमरा प्रथम तलपर कोठरी भेटि गेल। अपेक्षाकृत छोटसन कोठरीमे एसी लागल छल,आर सुविधासभ सेहो छल। मुदा ओ कोठरी आ मंदिरक देबाल एक्के छल। चारिबजे भोरे मंदिरमे आरती होइत छल,घड़ी-घंटा बजैत छल। ताहि कारण हमरोसभक निन्न वाधित भए जाइत छल। तथापि हमसभ अनठा कए पड़ल रही। ओतेक जल्दी उठिए कए की करितहुँ?थोड़बे कालक बाद केओ केबार खटखटा रहल छल। आखिर केबार खोललहुँ। हमरा देखिते ओ बाजल-

"अहाँ उड़िआ नहि छी?"

"नहि, नहि।"

"गलती भए गेल।"

एहिना दोसरो राति भेल। असलमे बहुत रास उड़िआ तीर्थयात्रीसभ समूहमे आएल रहथि। ओ सभ भोरे उठि-सुठि एक संगे कतहु बिदा होइत रहथि। हमरो ओ सभ उड़िआ बुझबाक गलती करथि। बगलमे एकटा बड़ीटा धर्मशालामे लोकक हुजुम छल। महिलासभक हाथमे छोटसन झोरा आ पुरुखसभकेँ पट्टी बान्हल छल। दुपहरिआमे ओ सभ एकटा विशाल भोजन मण्डपमे भोजन कए रहल छल। हम पुछलिऐक-

"भंडारा भए रहल छैक की?"

"नहि, नहि। ई तँ समूहमे घुमि रहल तीर्थयात्रीसभक हेतु अछि।"

"तकर की पहिचान छैक?

"देखैत नहि छिऐक? महिलासभक हाथमे झोरा आ पुरुषसभकेँ पट्टी बान्हल छैक। इएह ओकरसभक पासपोर्ट बुझू । हमरा बड़ी जोरसँ हँसा गेल। बातो सही रहैक । सएसँ बेसीए पुरुष-महिला ओहिठाम एहि पहिचानक संगे भोजन कए रहल छलाह। जाबे हमसभ इसकान मंदिर परिसरमे रहलहुँ ताबे ई दृश्य देखबाक मौका भेटल। ओकरासभक रहबाक आ भोजनादिक व्यवस्था पहिनेसँ इसकानक माध्यमसँ कएल गेल रहैक। एहि तरहेँ बहुत कम खर्चमे सएसँ बेसीए तीर्थयात्रीसभ घुमि रहल छल।

हमसभ नित्यकर्मसँ निवृत्त भए द्वारकाधीश मंदिर बिदा भेलहुँ । जकरे पुछिऐक सभ इएह कहए जे मंदिर सटले अछि। एनाक जाउ,ओतए घुमि जाउ,तकर बाद कनीक बामा फेर दहिना दिस मुड़ि जाएब ,बस मंदिरे लग पहुँचि जाएब। मुदा हमरा ई जिलेबी बला रस्ताक अनुमान नहि लागए। कनीकाल चललाक बाद एकटा आटो भेटि गेल। ओ मंदिरक सामने धरि पहुँचा देलक। मंदिर रहैक लगीचेमे । मुदा रस्ता टेढ़-मेढ़ । तेँ अनभुआरक हेतु मोसकिल छल। मंदिर पहुँचलाक बाद हमसभ अपन जूता-चप्पल जमा केलहुँ। दर्शन नीकसँ आ जल्दी भए जाए ताहि हेतु प्रयासरत रही कि एकटा बूढ़ पंडितजी भेटलाह । हम पुछलिअनि-

"अपने कतेक लेबैक?"

"ओना पाँच सए होइत छैक। मुदा अहाँ जे दए दी।"

"ठीक छैक।"

हमसभ हुनका पाछू-पाछू बिदा भेलहुँ । कनी काल आगू गेलाक बाद पुरुष आ महिलाक पाँति फराक-फराक भए जाइत अछि। पंडितजी हमरा एकठाम ठाढ़ कए देलाह आ हमर श्रीमतीजीकेँ लेने गेलखिन। ओ अपन जोगारसँ थोड़बे कालमे हुनका बहुत नीकसँ दर्शन करा देलखिन। तकर बाद ओ एकठाम बैसि गेलीह। हम पंडितजीक संगे बिदा भेलहुँ । ओ पुलिसकेँ इसारा देलथि। बस काज भए गेल। हमरा केओ नहि टोकलक आ तुरंत गर्भगृहक आगूमे पहुँचि गेलहुँ । बहुत नीकसँ दर्शन केलहुँ । कोनो असुविधा नहि भेल। थोड़ेकालक बाद हम बाहर भेलहुँ। पंडितजी हमर प्रतीक्षा कए रहल छलाह। तकर बाद हम दुनू बेकती एकठाम बैसलहुँ आ पंडितजी ओहि मंदिरसँ जुड़ल बहुत रास खिस्सासभ सुनबैत रहलाह। चारूकात बनल छोट-छोट अनेक मंदिरसभमे घुमओलाह। हुनकर व्यवहारसँ हमसभ बहुत प्रसन्न रही। हुनकर संगे रहलासँ हमसभ द्वारकाधीशक दर्शन तँ केबे केलहुँ,ओहिठामसँ जुड़ल बहुत रास जानकारी सेहो भेटल। मंदिरक ऊपर ध्वज दिनमे सात बेर बदलल जाइत अछि,तकरा हेतु लोकसभ मनता केने रहैत अछि,ओसभ ताहि हेतु लाखो टाका खर्चा करैत अछि। असलमे हमसभ जखन ओहि परिसरेमे रही तखने मंदिरक धाजा बदलल जा रहल छल। नीचाँ बहुत रास लोकसभ एक्के रंगक वस्त्र

पहिरने ठाढ़ छलाह । ढोल-पिपही बाजि रहल छल। भीतरसँ पुजारीजी चिकरैत अएलाह-

“अहाँसभ भीतर चलू। समय भए गेल अछि।”

सभकेँ हकारि कए ओ मंदिरमे लए गेलाह। कहाँ गेल पाँति आ लोकक भीड़?पंडितजीक अनुसार द्वारकाधीशक मंदिर कृष्णक वंशज बनबओने रहथि। एहि बातक सत्यताक बारेमे तँ किछु नहि कहल जा सकैत अछि मुदा ई तय अछि जे ई मंदिर बहुत पुरान अछि। चारूधाममे सँ एकटा द्वारकाधीश सेहो मानल जाइत अछि। अनन्त कालसँ लोकक श्रद्धाक केन्द्र रहल ई मंदिर निश्चित रूपसँ दर्शनीय अछि। मुदा एहिठाम बहुत भीड़ रहैत अछि। विशेष दर्शनक किछु व्यवस्था अछि जरूर । मुदा ओ कतेक प्रभावी अछि से नहि कहल जा सकैत अछि। मुदा हमरा पंडितजीक सहयोगसँ बहुत नीकसँ दर्शनो भेल आ मंदिरसँ जुड़ल बहुत रास जनतब सेहो भेटल। हमसभ बिदा होइत काल हुनका पाँचसएक स्थानपर एक हजार टाका देलिअनि। कहलिअनि-“ब्राह्मण भोजनोक हेतु दए रहल छी।” ओ बहुत प्रसन्न भेलथि। फेर कहैत छथि-

“एहिमे सँ दू सए टाका प्रहरीक हिस्सा देबए पड़त। हमरासभकेँ तँ नित्य ओकरासभसँ काज लेबाक रहैत अछि।”

हम हुनका दूसए टाका आर देलिअनि। हुनकर प्रसन्नताक अंते नहि छल। ओ हमरासभकेँ बाहर धरि अरिआति देलाह। बीचमे हमसभ फोटो सेहो खिचओलहुँ। थोड़बे कालमे फोटो बनि कए आबि गेल। तकर बाद हमसभ अपन डेरा वापस आबि गेलहुँ । डेरा वापस अएलाक बाद पता लागल जे हमरसभ जे फोटो घिचओने छलहुँ से कतहु खसि पड़ल। आब की करितहुँ? अछता-पछता कए रहि गेलहुँ । दुपहर बाद हमसभ एकटा टैक्सी केलहुँ जे हमरासभकेँ बेटद्वारका आ बीच-बीचमे पड़ैत महत्वपूर्ण स्थानसभ लए जाएत। द्वारकासभ बेटद्वारका पचीस किलोमीटर फटकी अछि। बीचमे हमसभ नागेन्द्र महादेव(जे द्वादश ज्योतिर्लिंगमे मानल जाइत छथि) दर्शन केलहुँ। हमसभ मंदिरक गर्भगृहमे जा कए पूजा-पाठ कए सकलहुँ। ताहि हेतु धोती पहिरब अनिवार्य अछि। ओतहि बगलमे बहुत रास धोती राखल रहैत अछि। हमहूँ ओतहि धोती पहिरलहुँ । तकर बाद

ओहिठाम उपस्थित पंडितजीक सहयोगसँ पूजा केलहुँ । मंदिरमे भीतरेमे प्रसाद बिकाइत रहैत अछि। सेहो कीनलहुँ ।

थोड़े कालक बाद हमसभ गोपी तलाओ पहुँचलहुँ। द्वारकासँ बीस किलोमीटर दूर बेटद्वारकासँ पहिने गोपी तलाओ अबैत अछि। कहल जाइत अछि जे भगवानक कृष्णक वृंदावनसँ द्वारका आबि गेलाक बाद गोपीसभ एकबेर एतहि भगवानक दर्शन केलथि आ एतुके माटिमे समाहित भए गेलथि। तेँ एहिठामक माटि बहुत पवित्र मानल जाइत अछि आ गोपी चंदनक नामसँ जानल जाइत अछि। गोपी तलाओसँ जल्दीए निकलि कए हमसभ बेट द्वारका दिस आगू बढ़लहुँ ।

बेटद्वारका समुद्रमे एकटा छोटसन टापू अछि। कहल जाइत अछि जे द्वारकाधीशक राजधानी एतहि छल जे बादमे समुद्रमे मिलि गेल। बेटद्वारका जेबाक हेतु लगभग बीस मिनट अरब सागरमे जहाजपर जेबाक होइत छैक। हमसभ वापसी टिकट सेहो लए लेने रही। जहाजपर बैसले छलहुँ कि ओ खुजि गेल। समुद्रक मनोरम दृश्य देखैत,ओकर मोबाइलसँ फोटो घिचैत हमसभ थोड़बे कालमे बेटद्वारका पहुँचि गेलहुँ। पुल पार होइतहि एकटा आटोबलासँ भेंट भेल। ओ हमरासभकेँ बेट द्वारकाक प्रमुख स्थानसभ घुमा देत। से तय भेलाक बाद सभसँ पहिने हमसभ बेटद्वारका मंदिर गेलहुँ । ओहिठाम एकटा पंडितजीक सहयोग लेलहुँ जाहिसँ बहुत आसानीसँ दर्शन भए गेल। संगे मंदिरसँ जुड़ल बहुत रास जानकारी ओ हमरा देलाह। सुदामा मंदिरमे दर्शन केलाक बाद प्रसादक रुपमे खुद्दी भेटैत छैक। कृष्ण-सुदामाक भेंट कहाँदनि ओतहि भेल रहनि।

द्वारकाधीशक मंदिरसँ निकलि हमसभ आटोसँ ओहि टापूपर बहुत दूर धरि गेलहुँ । तखन किछु मंदिरसभ भेटल। हनुमानजीक पुत्र मकरध्वजक नामपर ओतए मंदिर अछि,ताहिमे दर्शन केलहुँ। एकटा आर मंदिरमे गेलहुँ । तकर बाद साँझ पड़ल जा रहल छल। हमसभ जल्दीए वापस भए गेलहुँ । बेटद्वारकामे जहाज लागले छल। जल्दीए जहाजपर चढ़ि गेलहुँ जाहिसँ बहुत समय बाँचि गेल। बीस मिनटक बाद हमसभ जहाजसँ ओहिपार पहुँचि गेल रही । फेर टैक्सीसँ वापस द्वारका बिदा भेलहुँ । बीचमे रुक्मिणी मंदिरमे सेहो दस मिनट ठहरलहुँ । ओतए आरती भए रहल छल। कनीके आर देरी होइत तखन ओहिठाम दर्शन नहि भए पबैत। मंदिर बहुत

भव्य अछि। ओहिठामसँ सोझे अपन डेरापर पहुँचि गेलहुँ । हमसभ लगभग दू बजे द्वारकासँ टैक्सीसँ बेटद्वारका बिदा भेल रही। साढ़े छओ घंटाक बाद ई यात्रा पूर्ण कए हमसभ वापस अपन डेरा आएल रही। भरिदिनक दौरा-दौरीमे हमसभ नीकसँ थाकि गेल रही। तेँ शीघ्र भोजन कए विश्राममे चलि गेलहुँ।

आइ हमरसभक द्वारकामे दोसर दिन छल। काल्हि हमसभ बेटद्वारका आ अन्य प्रमुख स्थानसभ देखि आएल रही। प्रातभेने हमसभ जल्दीसँ तैयार भए आटोसँ स्थानीय प्रमुख स्थानसभ देखबाक हेतु बिदा भेलहुँ । लगपासमे प्रमुख स्थानसभ देखबाक हेतु एकटा आटो ठीक केलहुँ। घुमैत-घुमैत हमसभ नर्मदा घाट पहुँचलहुँ। एतहि नर्मदा नदी अरब सागरमे मिलैत अछि । नर्मदा नदीक छप्पनटा घाट टपलाक बाद द्वारकाधीश मंदिर पड़ैत अछि । एतए स्नान केलाक बाद तीर्थयात्री द्वारकाधीश मंदिरमे दर्शन करैत छथि । एहि नदीमे नहाएब बहुत पुण्यक बात मानल जाइत अछि । बिरला परिवार द्वारा निर्मित गीता मंदिरक हालति बहुत खराप बुझाएल। एतबा धरि जे ओकर बीचमे एकटा कुकुर सुतल रहए। केओ देखनाहर नहि। ओहिठाम यात्री रहबाक हेतु धर्मशाला सेहो बनल अछि। धर्मशालामे तँ लोकसभ बुझाएल। मुदा गीतामंदिरक एहन हालति किएक अछि से नहि कहि सकैत छी? आटो चालक कहैत रहए जे किछुसाल पूर्वधरि एहिठामक स्थिति बहुत नीक छल। हमसभ एहिठामसँ निकलि ब्रह्मकुमारीक मंदिर गेलहुँ । ओहिठाम बहुत नीक व्यवस्था बुझाएल । रहबाक हेतु धर्मशाला सेहो छल। एहिठामसँ निकलि हमसभ आटोमे बैसए जा रहल छलहुँ । हमर श्रीमतीजी आगू छलीह। ओ आगू बढ़लीह कि माथ आटोक लोहाक छरसँ टकरा गेलनि। अनचोकेमे बहुत जोर चोट लागि गेलनि। हम पाछूए रही। मुदा किछु नहि कए सकलहुँ। सोचिए नहि सकलिऐक जे एहनो भए जेतैक। थोड़े काल धरि एहीबातपर अफसोच करैत रहलहुँ । क्रमशः हुनकर चोटक दर्द कम होइत गेलनि। तकर बाद हमसभ पहुँचलहुँ बड़केश्वर महादेव। समुद्रक कातमे स्थापित विशालकाय शिवलिंगक दर्शन केलहुँ । समुद्रमे पानि बढ़ि गेलाक बाद ई शिवलिंग डुबि जाइत अछि। कहल जाइत अछि जे समुद्रेक पानिसँ हुनकर जलाभिषेक होइत छनि। तकर बाद हमसभ

गायत्री मंदिर पहुँचलहुँ। समुद्रक कातमे स्थापित ई मंदिर बहुत स्वच्छ बुझाएल। लगीचेमे गायत्री ट्रष्ट द्वारा संचालित धर्मशाला सेहो अछि। हमसभ भद्रकालीमाता मंदिर,स्वामी नारायण मंदिर आ सिद्धेश्वर महादेव मंदिर सेहो गेलहुँ आ बहुत नीकसँ दर्शन कए सकलहुँ। एहि तरहेँ लगपासक प्रमुख मंदिरसभमे दर्शन केलाक बाद हमसभ इसकान मंदिर परिसरमे अपन बासापर पहुँचि गेलहुँ । भोजनक बाद थोड़े काल विश्राम केलहुँ ।

हमरासभ लग किछु समय बाँचल छल। विचार भेल जे एकबेर फेर द्वारकाधीशक दर्शन कएल जाए। हमसभ पंडितजीकेँ फोन केलिअनि। ओ साढ़ेपाँच बजे अएबाक हेतु कहलाह। हमसभ किछु पहिने ओतए पहुँचि गेल रही। मोन भेल जे किएक ने फोटोक खोज कएल जाए। कनीके फटकी एकटा दोकानमे हमसभ अपन सामानसभ सरिऔने रही। ओहिठाम पहुँचि जहाँ फोटोक चर्चा केलहुँ कि ओ धर दए फोटो आगूमे राखि देलक। कहलक-“हम काल्हिएसँ अहाँक बाट ताकि रहल छलहुँ। फोटो एतहि नीचाँमे खसि गेल रहए।” कहि नहि सकैत छी जे हमसभ फोटो पाबि कतेक प्रसन्न भेल रही। लागल रहए जेना बहुत मूल्यवान वस्तु वापस भेटि गेल होअए। पंडितजी आबि गेल रहथि। फेर हुनके जोगारसँ हमसभ जल्दीए दर्शन कए लेलहुँ । हुनका पाँचसए टाका देलिअनि। ओ सहर्ष टाका राखि लेलाह । हमरासभकेँ बहुत आशीर्वाद देलाह। हमसभ दर्शनक बाद वापस अपन डेरापर आबि गेलहुँ। मोनमे बहुत संतुष्टिक भाव छल। सभसँ नीक बात ई भेल जे हमसभ बहुत नीकसँ द्वारकाधीश भगवानक दर्शन दू-दू बेर कए सकलहुँ । एहि हेतु भगवान द्वारकाधीशकेँ असीम कृपा कहबाक चाही।

अगिला दिन एगारह बजे हमरासभकेँ वापसी ट्रेन अहमदाबादक हेतु पकड़बाक छल। तदनुसार हमसभ अपन सामानसभ व्यवस्थित कए लेलहुँ । प्रातभेने लगभग दसबजे हमसभ इस्कान मंदिर अतिथिगृहकेँ छोड़ि आटोसँ द्वारका टीसन बिदा भए गेलहुँ । ओहिठामसँ टीसन लगीचे अछि । तेँ थोड़बे कालमे हमसभ टीसन पहुँचि गेलहुँ । सही समयपर ट्रेन आबि गेल आ हमसभ मोने-मोन भगवान द्वारकाधीशकेँ गोहरबैत अहमदाबादक वापसी यात्रापर बिदा भेलहुँ । दिनक यात्रा छलैक। तेँ ट्रेनक बाहरक दृश्य देखैत रहलहुँ,ट्रेन आगू बढ़ैत रहल। आखिर साढ़े आठ बजे रातिमे हमसभ अहमदाबाद वापस आबि गेलहुँ ।

हमसभ एकबेर फेर सरकारी अतिथिगृह पहुँचि गेलहुँ । ओहिठाम एकदिन पूर्ण विश्रामक बाद दोसरदिन भोरे पाँचबजे हबाइ अड्डा बिदा भेलहुँ। दस बजैत-बजैत तँ हमसभ दिल्ली हबाइ हड्डापर जहाजसँ उतरैत रही। एहि तरहेँ अहमदाबाद,सोमनाथ आ द्वारकाधीशक दस दिनक हमरासभक यात्रा नीकसँ संपन्न भेल।

1.12.2023

जय महाकाल

कोरोनाक आक्रमणक बाद कैकसाल धरि हमरा लोकनि घरेमे बंद रहलहुँ । कोरोना कम भए गेलाक बादो ओकर भय बनल रहल । ओकरा मोनसँ हटबामे सेहो किछु समय लागल। बहुत सोच-बिचारक बाद हम दुनू बेकती नबंबर २०२२मे प्रयागराज गेल रही। ओहिठामसँ चित्रकुट सेहो घुमल रही। प्रयागराजसँ सटले मेजा तहसीलमे एनटीपीसीक कारखानाक आवासीय परिसरमे सेहो हमसभ रहल रही। तकर बादसँ घरेपर छलहुँ। अस्तु,मोन बहुत दिनसँ कतहु घुमबाक हेतु व्यग्र छल। आखिर हमसभ महाकालेश्वर,ओंकारेश्वरक दर्शन करबाक मोन बनेलहुँ । ताहि हेतु इन्दौरमे रहबाक जोगार सरकारी होलीडे होममे भए गेल। रेलक टिकट सेहो कटि गेल। एतेकक बादो चिंता भए जाए जे जाइत-जाइत स्वास्थ्य अनुकूल रहि सकत कि नहि? आखिर ओ दिन आबिए गेल। हमसभ बाइस जुलाइ २०२४ क चारि बजे टैक्सीसँ नईदिल्ली टीसन बिदा भए गेलहुँ । ट्रेन छुटबाक समय पौने सात बजेसँ एकघंटा पहिने हम दुनू बेकती टीसन पहुँचि गेलहुँ ।

टीसनपर पहुँचलाक बाद एकटा कुली ठीक केलहुँ । टीसनपर यदि कुलीकेँ पता लागि जाइत छैक जे यात्री एसीफस्ट कोचसँ जेताह तँ ओकर दर दुगुन्ना तँ भइए जाइत छैक । तथापि दुसए टाकामे हमरसभक बात बनि गेल। आगू-आगू सामानसभक संग कुली आ तकर पाछू-पाछू हम दुनू बेकती बिदा भेलहुँ । अजमेरी द्वारि दिसक एस्कलेटरपर पहिने ओ आ तकरबाद हमसभ पैर रखलहुँ। देखिते-देखिते कुली कतएसँ कतए चलि गेल। हम आ श्रीमतीजी संगे रही। एस्कलेटरपर हुनकर पैर ठीकसँ नहि बैसि सकलनि। परिणाम भेल जे आधासँ ऊपर गेलाक बाद हुनकर पैर पिछड़ि गेलनि। हम अकचका गेलहुँ । ओ एस्कलेटरपर भसिआइत बुझेलीह। रच्छ भेल जे कहुना कए ओ ओकर रेलींगकेँ जल्दीए थामि लेलीह। यदि से नहि होइत तँ ओ पाछू भरे खसितथि आ पता नहि की होइत? साइत एकटा बड़का संकटसँ सस्तेमे छुटकारा भए गेल। हमसभ प्लेटफार्म नंबर आठपर पहुँचि गेलहुँ ।

ट्रेन प्लेटफार्मपर लागल छल । हमरा सामनेमे एसी वनक कोच संख्या एचवन छल। मुदा अखन ओहिमे पैसबाक अनुमति नहि छलैक। ओकर सफाइ चलि रहल छलैक। बाहर बहुत गर्मी छलैक। तेँ हम प्रयास केलहुँ जे जल्दीसँ ओहि डिब्बामे चलि जाइ। ताहि हेतु ओहिमे कार्यरत एकटा कर्मचारीकेँ आग्रह केलिऐक । ओ सहमति दए देलक। हमदुनू बेकती ट्रेनक ओहि डिब्बामे पैसि गेलहुँ आ अपन सीटपर चलिओ गेलहुँ । मुदा ताबतमे आरो यात्रीसभ सेहो ओहि डिब्बामे पैसि जेबाक दुराग्रह करए लागल। ओहिठाम कार्यरत कर्मचारीसभ से मना कए देलकैक। तकर बाद हल्ला शुरू भए गेल।

"अहाँ हिनकासभकेँ तँ जाए देलिअनि। हमसभ किएक नहि जाएब? हमरो तँ टिकट अछि।"

आखिर एकटा कर्मचारी हमरा कहलक-

"अहाँसभ बाहर चलि जाउ । दोसर यात्रीसभ परेसानी कए रहल अछि। जखन डिब्बा चलबाक हेतु तैयार भए जेतैक तखन फेर चलि आएब।"

"एहनो कतहु भेलैक अछि? हमसभ बूढ़ छी। बाहर दम फुलि रहल छल। तोरेसभक कहलाक बाद हमसभ एहिठाम अएलहुँ अछि। हमरासभकेँ टिकट अछि,एही डिब्बामे जेबाक अछि, एतए बैसिओ गेल छी,फेर बाहर निकलबाक कोन बात भेलैक?"

मुदा ओ सभ अड़ि गेल। तखन हमहूँ धमकी देलिऐक।

"बेस तँ हम रेलमंत्रीकेँ सिकाइत करैत छी। आखिर हमरालोकनि वरिष्ठ नागरिक छी। उचित टिकट लेने छी आ एही ट्रेनसँ एही डिब्बामे जेबोक अछि। तखन किएक उतरि जाउ?"

रेलमंत्रीक नाम सुनितहि ओसभ सकदम भए गेल। हमरासभक आगूक परदा घिचि देलक। हमहूँसभ निचेनसँ बैसि गेलहुँ ।

आखिर निर्धारित समयपर ट्रेनक डिब्बा खुजल। यात्रीसभ धराधर अपन-अपन सीटपर बैसि गेलाह। हमसभ तँ पहिनहिसँ बैसिए गेल रही। हमरा कोच संख्या एचवनमे शायिका संख्या सात आ नव रहए। दुनू

निचुलके सीट छल। ऊपरक एकटा यात्री आबि गेल रहथि। दोसर यात्री मथुरासँ ट्रेन पकड़ताह,से बात टीटी बजलाह।

नियत समय सात बाजि कए पन्द्रह मिनटपर ट्रेन खुजल। हमसभ बहुत प्रसन्न रही। ट्रेन थोड़बे कालमे अपन गतिसँ चलि रहल छल। टीटी अएलाह। हमरसभक नाम पुछलथि । बस एतबे। किछु आर नहि । थोड़े कालक बाद भोजनक आदेश देल गेल। एकटा यात्री तँ आनलाइन भोजनक आदेश देने रहथि। तेँ हुनकर भोजन मथुरामे ट्रेनमे आबि सकलनि। ताबे तँ हमसभ भोजन कए निश्चिन्त भए गेल रही। रेल भोजनालयसँ देल गेल हमर सभक भोजन बहुत साधारण छल। हमरा अफसोच होअए जे हमहूँ किएक ने आनलाइन भोजनक जोगार कए लेलहुँ?

राति भरि चललाक बाद ट्रेन निश्चित समयसँ एक घंटा पहिने पौने छओ बजे इन्दौर पहुँचि गेल। पन्द्रह मिनटमे आटोसँ हमसभ केन्द्र सरकारक होलीडे होम पहुँचि गेलहुँ। ओहिठाम मुख्यद्वारिपर कार्यरत चौकीदार हमरासभकेँ भीतर आबए देलक। स्वागत कक्षमे केओ नहि छल। हम ओकरा पुछलिऐक-

"एहिठाम केओ आदमी नहि अछि की?"

ओ उत्तर दैत अछि-

"हम अहाँकेँ आदमी नहि बुझाइत छी की?"

ओकरा आब की कहितिऐक? हमरा चुप देखि ओ बाजल-

"सात बजे मनेजर अएताह। अहाँ चाही तँ हुनका मोबाइलपर फोन कए दिअनु।

"हुनकर मोबाइल नंबर आ नाम एकटा कागजपर लिखि कए स्वागत कक्षमे साटि देल गल छल। हम हुनका ओहि मोबाइल नंबरपर फोन केलिअनि । ओहो ओएह बात कहलाह-

"सात बजे धरि अहाँसभ ओतहि बैसू। तकर बादे हम आबि सकब। ओना कोठरी साढ़ेदस बजेसँ पहिने नहि भेटि सकत। कारण ओ नओ बजे धरि खाली हेतैक आ तकर बाद ओकर सफाइ कएल जाएत।"

हम सामनेमे राखल सोफापर बैसि गेलहुँ । ताबतेमे एकटा आर परिवार पहुँचि गेलाह। ओहोसभ दिल्लीएसँ आबि रहल छलाह। थोड़ेकाल हुनकासभसँ गप्प-सप्प केलहुँ । नित्यकर्मसँ निवृत्त भेलहुँ। ताबतमे कैंटिन खुजि गेलैक। हमसभ भोरुका चाह दू-दू कप कए पीलहुँ । चाह पीलाक बाद मोन कनीक आश्वस्त भेल। ताबे होलीडे होमक मनेजर आबि गेल रहथि। हुनकेसँ एकटा ट्रैभेल एजेंटक मोबाइल नंबर लेलहुँ। हम ओकरा फोन करैत छी-

“हमरा लोकनिकेँ दस बजेक आसपास महाकालेश्वर, उज्जैन जेबाक अछि। टैक्सीक जोगार भए सकत की?”

“किएक ने।”

“कतेक टाका लगतैक?”

“एकतीस सए । ओहिमे गेनाइ, ओहिठाम प्रमुख स्थानसभ घुमनाइ आ वापस इन्दौर आएब सामिल अछि।”

हम कहलिऐक-

“ठीक छैक। अहाँ टैक्सी बलाकेँ पठाउ।”

हमसभ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रही जे एतेक आसानीसँ टैक्सीक जोगार भए गेल। थोड़बे कालक बाद टैक्सी बलाक फोन आएल । ओ दस बजे पहुँचि जाएत । हम सभ सोचलहुँ जे उज्जैन पहुँचिए कए छिप्रा नदीमे स्नान करब। दस बाजहि बला छल कि मनेजर हमरासभकेँ कोठरी संख्या १०१मे पहुँचा देलाह। हमसभ अपन सामान ओतए राखि बाहर निकलले छलहुँ कि टैक्सी बला सेहो पहुँचि गेल। एकटा झोरामे धोती,कुरता,अंगपोछा,सारी आदि राखि हमसभ टैक्सीमे बैसि गेलहुँ । टैक्सी अपन गंतव्य दिस बिदा भेल। वाहनचालक बहुत मधुर स्वरमे हनुमान चालीसा बजा रहल छल। बाहर मौसम बहुत सुखद छल। मेघ लागल छल। कतहु कोनो परेसानी नहि छल। टैक्सी तीव्र गतिसँ अपन गंतव्य महाकालक दरबार दिस बढ़ि रहल छल ।

महाकाल मंदिर

हमसभ बारह बजेक आसपास उज्जैन पहुँचि गेलहुँ। सभसँ पहिने छिप्रा नदीक घाटपर पहुँचलहुँ। चप्पल कारेमे राखि देने रहिऐक । कारसँ उतरि नदीक घाट धरि जेबामे बहुत कष्ट भेल कारण सौंसे पातर-पातर पाथरक टुकड़ीसभ पसरल छल जाहिपर पैर रखितहि गड़ैत छल । छिप्रा नदीक पानि तँ जुड़सीतलक कादोसँ बेसी मैल छल। ओहि पानिमे नहा कए की शुद्ध होएब? अपना मोने सोचलहुँ। तथापि हम दुनू बेकती बेरा बेरी पानिमे कहुना कए डुबकी लगओलहुँ । ओहिठाम आसपासमे बड़ी-बड़ीटा मरल माछसभ पड़ल छल जकर दुर्गन्धसँ ओतए रहब बहुत मोसकिल बुझाइत छल। संभवतः नदीमे बेसी पानि बढ़ि गेलापर माछसभ बाहर खसि पड़ल आ ओतहि मरि गेल। जल्दीसँ स्नान कए हमसभ कार लग पहुँचलहुँ। लगीचेमे महाकाल भैरवक मंदिर छल। हमसभ ओतए भैरवक दर्शन करबाक हेतु पाँतिमे लागि गेलहुँ। मुदा ओ पाँति की छल, बुझू लोकसभ जिलेबी जकाँ घुमि रहल छल। पाँच सएसँ बेसीए लोक ओतए पाँतिमे लागल छलाह। बहुत नहूँ-नहूँ लोक आगू बढ़ैत छल। थोड़े-थोड़े कालपर सेहो बंद भए जाइत छल। हालति देखि हमरा तँ बहुत चिंता होइत छल।

"कहि नहि कखन धरि दर्शन होएत?"-हम हुनका बेर-बेर कहिअनि।

"महाकालेश्वरक दर्शन सेहो करबाक अछि। पता नहि कोना की होएत? एनामे दर्शन केना होएत?"-हम दुनू बेकती आपसमे गप्प करैत रही। मुदा आब कएले की जा सकैत छल? पाँतिक बीचसँ वापसो होएब संभव नहि छल। हमरा सभकें मैथिलीमे गप्प करैत सुनि सामनेमे भेटि गेलाह समस्तीपुरक मैथिल परिवार। ई थिक अपन भाषाक चमत्कार ! हुनकासँ गप्प कए मोन कनी हल्लुक तँ भेबे कएल । आब हमसभ मुख्यमंदिरपर आबि गेल रही। लगीचेमे मुरदा धह- धह जरि रहल छल। सौंसे ओकर धुआं पसरि रहल छल। भक्त लोकनिक जयकारा सेहो चलिए रहल छल,,,। जय श्रीकाल भैरव,,,! संभवतः ई दृश्य मोनमे ज्ञान उत्पन्न कए सकैत छल। व्यर्थक लालसासँ मोनमे उचाट उत्पन्न कए सकैत छल। मुदा से होइत कहाँ अछि? लोक ओतहु भैरव बाबासँ अपन अनेक कामनाक प्राप्तिक हेतु प्रार्थना करैत रहैत अछि।

लगभग दू घंटा पाँतिमे घुमैत रहि गेलाक बाद हमसभ भैरव मंदिरक गर्भगृह लग पहुँचलहुँ । मंदिरमे भैरवक आगूमे मोसकिलसँ एकमिनट समय भेटल। मोने-मोन हुनका प्रणाम कए आगू बढ़ि गेलहुँ । ताबे हमसभ बहुत थाकि गेल रही। वर्षासे जोर पकड़ि लेने छल। ओतए ठाढ़ प्रहरीकेँ हम मदति करबाक गोहार लगेलहुँ । हमरासभपर ओ दया केलक । ओ हमरासभकेँ पाछू बाटे निकालि देलक जाहिसँ वापसीमे फेरसँ पाँतिमे नहि लागए पड़ल। मुदा बाहर निकलितहि वर्षामे फँसि गेलहुँ । ओहिठामसँ जूता स्टैंड धरि जाएब पराभव भए गेल छल। कहुना कए भिजैत-तितैत हमसभ जूता स्टैंड पहुँचलहुँ । अपन-अपन जूता-चप्पल लेलहुँ । ओहिठामसँ भिजिते आगू बढ़ि वाहनचालककेँ ताकि रहल छलहुँ कि ओ छत्ता लेने देखाएल । मुदा ताबे तँ हमसभ नीकसँ भिजि गेल रही। ओही हालतिमे हमसभ टैक्सीमे बैसि महाकाल मंदिर दिस बढ़ि गेलहुँ ।

महाकालक नित्य भोरे ब्राह्मीमुहुर्तमे भस्म आरती कएल जाइत छनि। पहिने ऐहि लेल ओहिराति सभसँ पहिने जरल मुरदाक भस्मक उपयोग होइत छल। मुदा आब गोइठासँ बनाओल गेल भस्मसँ भस्म आरती होइत अछि। एकरा देखबाक हेतु आननलाइन बुकिंग सेहो होइत अछि । मुदा साओन मासमे दर्शनार्थीक भीड़केँ देखैत ई सुविधा बंद कए देल गेल अछि। अस्तु, महाकालक दर्शनक हेतु हम शीघ्रदर्शनक आनलाइन टिकट कीनने रही। मंदिर परिसरमे द्वारि संख्या चारिसँ हमरासभकेँ एहि टिकटक संगे आगू जेबाक छल। हमसभ एही द्वारिसँ आगू बढ़ैत छी। कतहु कोनो परेसानी नहि,कोनो पाँति नहि । हमसभ धराधर मंदिरमे भीतर धरि प्रवेश कए गेलहुँ। बहुत नीकसँ महाकाल महादेवक दर्शन केलहुँ । तकर बाद मंदिरसँ बाहर अएलाक बाद हमसभ प्रसाद कीनबाक हेतु द्वारि संख्या एक लग बनल खिड़कीपर गेलहुँ । सए रुपयाक दरसँ यथेष्ट लड्डूक पैकेट कीनलहुँ । हमसभ तकर बाद अपन वाहनमे वापस जेबाक दिशामे बढ़लहुँ। एतेक आसानीसँ दर्शन भए जाएत से नहि सोचने रही। जहिना भैरव मंदिरमे भीड़ छल तहिना एहिठाम एकदम सपाट रस्ता। लगैत अछि महाकाल हमरालोकनिपर विशेष दया केलनि। संभवतः शीघ्रदर्शनक टिकट रहबाक कारण परेसानीसँ बचलहुँ । महाकालक दर्शनक बाद हमसभ बहुत संतुष्ट

छलहुँ। आब आर कतहु जेबाक प्रयोजन नहि बुझा रहल छल । ओना वाहनचालक आर मंदिरसभक चर्च केलक । मुदा हमसभ आब कतहु नहि गेलहुँ । सोझे वापसी यात्रा हेतु टैक्सीमे बैसि गेलहुँ

इन्दौर

हमसभ अपन यात्राक मुख्यालय इन्दौर बनओने रही। कतहु जाउ,किछु करू घुरि कए वापस तँ घरे आएब। संयोगसँ एहि यात्रामे हमरा सरकारी होलीडे होममे जगह भेटि गेल छल जे सभ तरहेँ सुखद छल । ओतए सभ आवश्यक सुविधा छल। भोजन,जलखै,चाहक ओरिआन तँ छलहे। तेँ हमसभ वापस ओहिठाम आबि गेलाक बाद बहुत आराममे रहैत छलहुँ । जेना अपने घरमे होइ। आइ हमरा लोकनिक इन्दौरमे दोसर दिन छल। सोम दिन हेबाक कारण शिव मंदिरसभमे अथाह भीड़ हेबाक संभावना छल। तेँ हमसभ आइ आनठाम नहि जा कए स्थानीय भ्रमण करबाक निर्णय केलहुँ । भोरे जलखै चाहक बाद हमसभ ओही टैक्सीसँ नगर भ्रमण करए बिदा भेलहुँ ।

इन्दौर सहर पछिला कैकसालसँ सफाइक मामिलामे संपूर्ण देशमे प्रथम आबि रहल अछि। एहू साल सएह भेलैक । जखन इन्दौर सहरमे घुमि रहल छलहुँ तँ व्यवहारिक रूपसँ प्रत्यक्ष अनुभव भेल जे वस्तुतः ई सहर अतिशय स्वच्छ अछि । सदिखन सफाइ करबाक हेतु तत्पर कर्मचारीसभ। स्थानीय लोकोसभ ओहिना कान ठाढ़ केने । सड़कपर तरकारीक दोकान बला सभ जाइत काल एक-एकटा खढ़ उठाबैत देखलहुँ । तकर बाद ओहि स्थानकेँ बाढ़निसँ साफ करैत देखलहुँ । ओ जखन दोकान बंद कए बिदा भेल तँ सड़क चिक्कन ,चमचम करैत छल,ओहिना जेना भोरमे रहल होएत। कतहु केओ सड़कपर अकर-बकर वस्तु नहि फेकैत। कोना ने औअलि आओत ई सहर?मोनमे होअए जे आन-आन सहरमे ई गुण लोकमे किएक ने अबैत छनि?

इन्दौर सहर भ्रमणक क्रममे हमसभ सभसँ पहिने खजराना गणेश मंदिर पहुँचलहुँ । ई मंदिर अहिल्याबाई होल्कर बनओने छलीह। मुख्य मंदिरमे गणेशजीक भव्य प्रतिमा स्थापित अछि। लगपासक छोट-छोट मंदिरमे आन-आन देवतासभक मूर्ति स्थापित छनि। कहल जाइत अछि जे एहिठाम लोकसभ जे किछु अभिलाषाक कामना करैत छथि से प्राप्त होइत

छनि। मंदिरमे दर्शन केलाक बाद हमसभ थोड़ेकाल ओतहि बैसलहुँ । ओहिठामसँ हमसभ पहुँचलहुँ अन्नपूर्णा मंदिर । एहि मंदिरमे अन्नपूर्णाक मूर्ति स्थापित अछि। चारूकात अतिशय स्वच्छ परिसरक बीचमे चम-चम करैत अन्नपूर्णाक मंदिर देखैत बनैत छल । हमसभ बहुत नीकसँ दर्शन केलहुँ। लगैत छल जेना एकटा बहुत पवित्रस्थानमे पहुँचि गेल छी।

सहरमे घुमैत-घुमैत हमसभ राजवाड़ा पहुँचलहुँ । राजवाड़ा महल मध्य प्रदेश राज्यक इन्दौर सहरमे अवस्थित एक राजमहल छी । ई महल लगभग 200 साल पहिने बनल छल । एहि महलक वास्तुकला फ्रेंच, मराठा आ मुगल शैलीक अनेक रूप आ वास्तुकला शैलीक मिश्रण अछि । सात मंजिला एहि भवन मे निचला तीन मंजिला संगमरमरक बनल छल । ऊपरका चारि मंजिला सागौनक लकड़ीक सहायतासँ बनल छल । राजबादा ९१८ फीट लंबा आ २३२ फीट चौड़ा एहि भवनक प्रवेश द्वार ६.७० मीटर ऊँच अछि, जकर संरचना हिन्दू शैलीक महल जकाँ अछि । राजवाड़ा अपन इतिहास मे तीन बेर जरि चुकल अछि आ 1984 मे अंतिम बेर लागल आगि मे एकरा भारी नोकसान पहुंचल छल। आइ मात्र बाहरी भाग अक्षुण्ण अछि। ओहि महलमे घुमलाक बाद बाहर आबि हमसभ किछु फोटो खिचलहुँ । कैकबेर ओहि विशाल महलकेँ देखैत रहलहुँ आ तकर बाद आगू बढ़ि गेलहुँ।

इन्दौर गेलहुँ आ ओहिठामक छप्पन दोकानमे जा कए मनपसिंद हलझप्पी नहि केलहुँ तँ की केलहुँ? इन्दौरक पोहा जिलेबी,पानी पुरी,दही पुरी,खोपरा पट्टी,गोंदक लड्डु,कचौरी आ पान बहुत प्रसिद्ध अछि। पोहा जिलेबी तँ भोरे-भोर सहरमे सभठाम भेटि जाएत । हमसभ दुपहरिआमे छप्पन दोकान लग पहुँचलहुँ । एकपाँतिसँ दुनूकात छोट-छोट दोकानसभमे अनेक प्रकारक भोजन सामग्रीसभ उपलब्ध छल। हमसभ थोड़ बहुत खेलहुँ। तकर बाद आगू बढ़ि गेलहुँ। तकर बाद हमसभ पहाड़ीपर बनल जैनसभक प्रसिद्ध तीर्थस्थल गोमतगिरि गेलहुँ। ओतए चौबीसो तीर्थांकरकेँ समर्पित चौबीसटा संगमरमरक मंदिर अछि। गोमतेश्वरक एक्कैस फीट उँच मूर्ति सेहो आकर्षणक केन्द्र अछि। रविदिन कए ओहिठाम आगन्तुक लोकनिकेँ दालबाटी खेबाक अवसर भेटैत छनि। साँझमे ओहि पहाड़ीपर सँ

सूर्यास्तक दृश्य बहुत मनोरम होइत अछि। परंतु,हमसभ ओ दृश्य नहि देखि सकलहुँ ।

अहिल्याबाई होल्कर इन्दौरक नामसँ जुड़ल छथि। ओ बहुत धार्मिक प्रवृत्तिक छलीह । ओ संपूर्ण भारतमे प्रसिद्ध मंदिरसभक जीर्णोद्धार करओलीह। नव मंदिर,धर्मशाला सभक स्थापना सेहो करओलीह। एहिमे काशीविश्वनाथ मंदिर,वाराणसी,सरयू घाटपर निर्मित राम मंदिर,बद्रीनाथ,द्वारकाधीस,केदारनाथ,ओंकारेश्वर, आ रामेश्वरममे मंदिर, धर्मशाला आदिक स्थापना करबओलथि।

ओंकारेश्वर मंदिर

सोमदिन इन्दौर भ्रमणक बाद मंगलदिन हमसभ भोरे ओंकारेश्वर महादेवक दर्शनक हेतु बिदा भेलहुँ । मंगल दिन रहबाक कारण हम दुनू बेकती उपासमे रही। तेँ की? मोनमे ततेक उत्साह छल जे उपासक कारण कनिको परेसानी नहि बुझाएल । रस्तामे हमसभ एकठाम चाह जरूर पीलहुँ। तकर बाद टैक्सी बला चलबैत रहल अपन वाहन आ हमसभ लैत रहलहुँ ओहि सुंदर मौसममे पहाड़ी यात्राक आनन्द। आकाशमे मेघ उमरि-घुमरि रहल छल । हबा से मंद-मंद बहि रहल छल। दुनू दिस पहाड़ी आ बीच-बीचमे बोल बम करैत कमरथुआसभ आगू बढ़ैत जा रहल छल। एहन सुखद यात्रा होएत तकरा हमरा कनिको अनुमान नहि छल। अपितु,हमरा कनी-मनी डरो होइत रहए। पता नहि पहाड़ी सड़कपर वाहन कोना चलत। मुदा से सभ किछु नहि छल। लागि रहल छल जेना चारूकातसँ आनन्दक वर्षा भए रहल अछि। एहि तरहेँ लगातार दू घंटा वाहन चलैत रहलाक बाद पहुँचि गेल ओंकारेश्वर।

सभसँ पहिने हमसभ नर्मदा नदीक घाटपर गेलहुँ । नदीमे कातेमे बेरा-बेरी स्नान केलहुँ । किछु फोटो सेहो खिचलहुँ। तकर बाद ओंकारेश्वर मंदिर दिस बिदा भेलहुँ । हमरासभकेँ शीघ्र दर्शन करबाक टिकट छल। तथापि मंदिरक द्वारिएपर एकटा पंडा प्रस्ताव देलाह-

“हमरा संगे चलू । हम नीकसँ महादेवक गर्भगृहमे दर्शन करा देब। महादेवपर जलो ढरबा देब।”

“मुदा हमरासभक लगमे तँ शीघ्रदर्शनक टिकट अछि?”

“तैं की? ओहिसँ अहाँ महादेवपर जल थोड़े ढारि सकब। हम तँ अहाँकेँ जलाभिषेक करा देब। गर्भगृहमे तुरंत पहुँचा देब।”

“हमरा कतेक भुगतान करए पड़त?”

“एगारह सए।”

“हम एतेक टाका नहि देब।”

ओहि पंडासँ बहुत मोसकिलसँ जान बचा कए हमसभ आगू बढ़लहुँ । थोड़बे फटकी गेल होएब कि एकटा युवक पंडा फेर ओहने प्रस्ताव लए उपस्थित भए गेलाह । हम हुनका कहलिअनि –

“पाँचसए टाका दए सकैत छी। एहिसँ बेसी किछु नहि।”

ओ तैयार भए गेलाह । तकर बाद ओ आगू-आगू आ हमसभ पाछू-पाछू जा रहल छलहुँ । हमर श्रीमतीजीक हाथमे शीघ्रदर्शन बला पर्ची छलनि। से देखि कए एकटा सेवादार ओहि युवक पंडाकेँ टोकलकैक-

“हिनकासभकेँ तँ शीघ्र दर्शनक टिकट छनि।”

हाथसँ इसार दैत ओ आगू बाजल-

“हिनकासभकेँ ओहि बाटे लए जाहुन।”

तकर बाद पंडा रस्ता बदललक। हमहूँसभ ओकर पाछू-पाछू चलैत रहलहुँ । बहुत संकीर्ण सीढ़ीनुमा रस्तामे लोक ठसल छल। मोसकिलसँ पाँच मीटर आगू मंदिरमे प्रवेश करबाक द्वारि छल। मुदा ओतए पहुँचबे पराभव लागि रहल छल। ऊपरसँ लोकसभ बजैक जे बारह बजेक बाद एक घंटाक हेतु मंदिर बंद भए जाएत । हमसभ एहि बातसँ आर चिंतित रही । मुदा से नहि भेल। थोड़बे कालक धक्कम-धुक्कीक बाद हमसभ ओंकारेश्वर मंदिरक द्वारिसँ भीतर पैसि गेलहुँ । पैसि तँ गेलहुँ,मुदा आगू-पाछू लोकसभ लगैत छल पिचि देत। दर्शनक तँ भगवाने मालिक । आखिर जेना-तेना ओ पंडा लोटामे जल लेने आगू-आगू आ हमसभ ओकर पाछू-पाछु महादेवक आगूमे पहुँचि गेलहुँ। बेरा-बेरी महादेवपर जल ढारलहुँ , प्रणाम केलहुँ आ आगू बढ़ि गेलहुँ।

महादेवक दर्शन कए हमसभ बाहर भेले छलहुँ कि पंडा हमर हाथ पकड़ि कए किछु मंत्र पढ़ए लगलाह। जाबे हम किछु सतर्क होइतहुँ ताबे तँ ओ बहुत आगू बढ़ि गेल रहथि। हम पुछलिअनि-

“ई की भए रहल अछि?”

“अन्नदान । कमसँ कम एगारह सएक दान ।”

“फेर ओएह बात? हम तँ अहाँकेँ पाँच सए गछने छी। बस ओतबे देब।”

श्रीमतीजीक इसारा पाबि हम एक सए आर हुनका दए फारक भेलहुँ । जानमे जान आएल। दुनूगोटे कनिक हटि कए सुस्तेलहुँ । किछु फोटो सेहो खिचल गेल। तकर बाद आगू बढ़ि गेलहुँ।

अफसोच आ दुखक बात अछि जे एतेक पैघ धर्मस्थानमे एहन कुव्यवस्था किएक अछि?पंडासभ एना किएक करैत अछि जे दर्शानार्थीसभ हतप्रभ रहि जाइत छथि। संबंधित व्यवस्थापकलोकनिकेँ एहिपर ध्यान देबाक प्रयोजन अछि। ओंकारेश्वर महादेव एकादश ज्योतिरलिंगमे मानल जाइत छथि। कतए कतएसँ लोक हुनकर दर्शन करए अबैत छथि। लोकसभक श्रद्धामे कोनो कमी नहि अछि। सोमदिनक तँ ओहिठाम जाएब आ दर्शन करब बहुत मोसकिल काज अछि । मुदा जाहि स्तरक व्यवस्था हेबाक चाही से नहि बुझाएल। महाकालेश्वर मंदिरमे तँ एकर कैक गुणा बेसी नीक व्यवस्था देखबामे आएल। ई एकटा महज संयोग छल कि एहिना चलैत अछि से तँ नहि कहल जा सकैत अछि। हमसभ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रही जे दू दिनक भीतर दूटा प्रसिद्ध ज्योतिरलिंग महादेवक दर्शन भए सकल। कतेको सालसँ सोचैत छलहुँ,से सपना पूर्ण भेल। निश्चित रूपसँ ई महादेवक कृपेसँ संभव भेल ।

माहेश्वर

ओंकारेश्वर महादेवक दर्शनक बाद हमसभ माहेश्वर बिदा भेलहुँ । अहिल्याबाइ होल्करक समयमे इन्दौरक शासन माहेश्वरसँ कएल गेल छल। हमसभ माहेश्वरमे अहिल्याबाइक महल आ लगपासमे बनल मंदिरसभ देखलहुँ । हुनकर महलकक भूतलपर ओसाराक ठीक सामने नर्मदा नदी बहैत छथि। कहल जाइत अछि जे अहिल्याबाई नित्य राज-काज शुरू

करबासँ पहिने ओतए ठाढ़ भए नर्मदाक दर्शन करैत छलीह । तकर बादे ओ राजकाजमे हाथ लगाबथि। कनीके हटि कए अखंड दीप जरैत अछि। कहल जाइत अछि जे ओ एगारहटा दीप पाँच हजार साल सँ जरि रहल अछि। दीप जरि तँ रहल छल अबस्से मुदा पाँच हजार सालक बातक पुष्टि के करत?

माण्डू(माण्डवगढ़)

हमसभ महाकालक दर्शन कए लेने रही। ओंकारेश्वर महादेवक दर्शन सेहो कए लेने रही । लौटतीमे माहेश्वर सेहो भए आएल रही। इन्दौर सहरक प्रमुख-प्रमुख स्थान सेहो घुमि लेने रही। हमरासभ लग आबो किछु समय छल। वापसी रेल टिकट २८ जुलाइक छल। सत्ताइस जुलाइक हमसभ माण्डू जेबाक निर्णय केलहुँ । ओही टैक्सी बलासँ गप्प पक्का कए लेलहुँ । सत्ताइस जुलाइक भोरे साढ़े सात बजे हमसभ माण्डू बिदा भए गेलहुँ । माण्डु इन्दौरसँ सतानबे किलोमीटर फटकी अछि। ई सहर पहाड़ीपर अवस्थित अछि। पर्यटकलोकनि ओहिठामक वर्षाक आनन्द लेबाक हेतु बहुत उत्सुक रहैत छथि। माण्डू धार जिलाक वर्तमान मण्डव क्षेत्रमे एक प्राचीन सहर अछि । ई पश्चिमी मध्य प्रदेशक मालवा आ निमार क्षेत्रमे अवस्थित अछि । एकर चारू कात पाथरक देबाल अछि जाहि पर दरवाजा (गेटवे) बिंदीदार अछि ।

इन्दौरसँ माण्डुक रस्ता बहुत नीक अछि। बादमे किछु पहाड़ी रस्ता भेटल जतए टैक्सीकेँ कनी सावधानीसँ चलेबाक प्रयोजन रहैत अछि। लगभग साढ़ेदस बजे हमसभ माण्डु पहुँचि गेल रही। इन्दौरसँ बिना जलखै केने हमसभ बिदा भए गेल रही। तेँ माण्डु पहुँचि हमसभ सभसँ पहिने किछु जलखै केलहुँ । तकर बाद घुमए बिदा भेलहुँ । संयोगसँ एकटा बहुत नीक मार्गदर्शक(गाइड) भेटि गेलथि। एक हजार रुपयामे ओ सौंसे घुमा देताह ,से कहलथि।

रानी रुपमती आ सुल्तान बाज बहादुरक दुखान्त प्रेमकथा

सुल्तान बाज बहादुर माण्डूक अंतिम स्वतंत्र शासक छलाह | एकबेर जखन ओ सिकार करए निकलल रहथि तँ नर्मदा नदीक कातमे

एकटा वालिकाकेँ अपन संगीसभक संगे खेलाइत देखलथि। ओ बहुत मधुर स्वरमे गाबि रहल छलि। बाज बहादुर स्वयं संगीतप्रेमी छलाह। ओ ओहि वालिकाक मधुर संगीतसँ ततेक प्रभावित भेलाह जे ओकरासँ बिआह करबाक प्रस्ताव दए देलनि। ओ वालिका एहि सर्तक संग बिआह करबाक हेतु तैयार भए गेलि जे ओ कोनो एहन महलमे रहतीह जतएसँ अपन प्रिय नदी नर्मदाक नित्य दर्शन कए सकथि। तकर बाद हुनकर बिआह सुल्तान बाज बहादुर संगे भेलनि। तकर बादे रेवाकुण्डक निर्माण भेल छल। रानी नित्य रानीरुपमती मंडपक नामसँ बादमे प्रख्यात पहाड़ीक चोटीपर बनल मूलतःसेनाक अवलोकन चौकीसँ बाज बहादुरक महल आ नर्मदा नदीक दर्शन करैत छलीह।

हमसभ जखन रानीरूपमतीमंडप दिस जाइत रही तखनहु रेवाकुण्ड लग दूटा मुरदा जरि रहल छल। अचानक वर्षा शुरू भए गेल। हमसभ थोड़ेकाल ओहीमे रहि गेलहुँ । वर्षा समाप्त भेलाक बाद हमसभ मार्गदर्शकक संगे नीचाँ उतरलहुँ। वर्षाक समयमे ओहिठामक मौसम बहुत सुखद भए गेल छल। आकाश जेना धुआँ सँ भरि गेल होइक। कहल जाइत अछि जे कैकबेर खराप मौसममे रानी रूपमती नर्मदा दर्शन नहि कए पाबथि। माण्डुक मौसम बेसी काल तेहन रहैत छल जे धुंधक कारण रानी नर्मदा नदीक दर्शन नहि कए पाबथि। तकर विकल्पक रूपमे रेवाकुण्डेक दर्शनसँ ओहि संकल्पक पूर्ति करथि।

रानी रुपमती आ सुल्तान बाज बहादुरक प्रेमकथा अकबरक माण्डुपर आक्रमणक कारण संकटमे पड़ि गेल। अकबर अधम खानकेँ माण्डू पर कब्जा करबाक लेल पठा देलनि | सुल्तान बाज बहादुर मुगल सेनाक मोकाबिला नहि कए सकलाह आ युद्धमे हारि गेलाह। अधम खान रानी रूपमतीकेँ कब्जा करए चाहलक । रानी एहि परिस्थितिकेँ बूझि आत्महत्या कए लेलनि। एहि तरहेँ सुल्तान बाज बहादुर आ रानी रूपमतीक प्रेमकथाक दुखद अंत भए गेल ।

हिन्दोला महल

हिन्दोला महल या ‘स्विंगिंग पैलेस’ ऐतिहासिक खंडहर माण्डू किलाक उत्तरी भागमे रॉयल एन्क्लेवक हिस्सा छैक । संभवतः ई 15वीं शताब्दीक अंतक बनल छैक आ सुल्तान घियाथ शाह (1469-1500) क

शासनकालमे एक दर्शक हॉलक रूपमे बनाओल गेल रहैक, जे अपन भोगवादी जीवनशैलीक लेल प्रसिद्ध छल ।

जहाज महल

ई ऐतिहासिक स्थान ओहि युगक कारीगरक अकल्पनीय काज थिक । चारू कात पहाड़ी आ हरियर जंगलसँ घेरल. आश्चर्यजनक, अद्भुत दृश्य अछि। जहाज महल एना बनाओल गेल अछि जेना ओ पानिमे हेलि रहल होअए। ओकर दू दिसमे पोखरि अछि आ दू दिसमे कृतिम पोखरि बनाओल गेल अछि। एहि तरहें ई महल चारू दिससँ पानिसँ घेराएल रहैत अछि । दूटा झीलक बीचमे ठाढ़ जहाज महल बहुत गजब अछि। ऊपरसँ देखलापर लगैत अछि जेना ओ जलसँ चारूदिससँ घेराएल एकटा जहाज अछि। अपन परावर्तन पर बहैत माण्डू क जहाज महल एहन जहाज जकाँ लगैत अछि जे चलए बला अछि। दू टा कृत्रिम झील मुंज पोखरि आ कपूर पोखरिक बीच बनल ई एक सए बीस मीटर नमगर 'जहाज महल' एकटा सुरुचिपूर्ण दू मंजिला महल अछि । खुजल मंडप, पानि पर लटकल बालकनी आ खुजल छत के संग जहाज महल एकटा कल्पनाशील मनोरंजन अछि। एकर निर्माण अद्भुत अछि। रानीक स्नानगृहमे तरह-तरहक ओरिआनसभ कएल गेल छल । ई महल प्राचीन समयमे जल संरक्षणक हेतु कएल जा रहल प्रयासक एकटा अद्भुत उदाहरण अछि। ओहिठाम वर्षाक पानिकेँ जल संरक्षण द्वारा बचा कए राखल जाइत छल जाहिसँ ओहिठामक निबासीकेँ साल भरि पानिक दिक्कति नहि होनि ।

कहल जाइत अछि जे सुल्तान बाज बहादुर ओहि भवनमे संगीतसभाक आयोजन कराओल करथि। ओहि भवनक विशेषता अछि जे ओकर कोनो कोनमे यदि केओ किछु बाजत तँ ओ ध्वनि एकदम मौलिक रूपमे भवनक कोनो स्थानसँ सुनाइत अछि। हमसभ स्वयं एहि प्रयोगकेँ केलहुँ । हमरसभक मार्गदर्शक एक कोनपर ठाढ़ भए गीत गओलथि आ हमसभ ओहि भवनक एकदम दोसर कोनटापर ठाढ़ भए ओकरा साफ-साफ सुनि सकलहुँ,सेहो एकदम स्पष्ट आ मधुर स्वर जेना कि माइक लागल होइक । कहि नहि ई ओरिआन केना कएल गेल छल?

होशांग शाहक कब्र, गुंबददार संगमरमरक मकबरा, आओर विशाल जामी मस्जिद सेहो एहिठामक प्रमुख भवन अछि ।

माण्डुक इमलीक नामसँ जानल जाइत अफ्रीकन फलक स्थानीय नाम खोरासानी इमली छैक जाहि कारणसँ एकर जड़ि खोरासान (प्राचीन फारस)क प्राचीन भूमिमे छैक । कहल जाइत अछि जे एहि फलक बीज मिस्रक खलीफा १४वीं सदीमे माण्डू क सुल्तानकेँ उपहारमे देने छलाह । ओतए ठाम-ठाम एहि फलकेँ बिकाइत देखलिऐक । पर्यटकसभ उत्सुकतासँ एकरा कीनितो छलाह आ ओकर छोट-छोट टुकड़ी खाइतो छलाह।

माण्डुमे प्रमुख-प्रमुख एतिहासिक स्थानसभ देखलाक बाद हमसभ इन्दौर वापस बिदा भेलहुँ । एहि बेर वाहनचालक नव रस्तासँ जा रहल छल जाहिमे पहाड़ नहि छलैक। सोझ-सपाट रस्तापर तीव्रगतिसँ टैक्सी अपन गंतव्य दिस बढ़ि रहल छल। सड़कक दुनूकात हरिअरी भरल छल। दूर-दूर धरि हरिअर कंचन बाध-बोन देखि ककर मोन हर्षित नहि होएत?ऊपरसँ पानिसे टिपिर-टिपर खसि रहल छल।

आब इन्दौर मात्र अड़तीस किलोमीटर बाँकी छल कि वाहनचालक गुगलनक्साक चक्करमे रस्ता बदलि लेलक । ओ दहिना दिस आगू बढ़ि गेल। तकर बाद तँ शुरू भेल गामे-गाम घुमैत पातर-पातर सड़कक यात्रा । रहि-रहि कए ग्रामीणसभसँ सही रस्ता पुछए पड़ैत छलैक। जतए कतहु चौबटिआ रहैक ताहिठाम तँ खास कए मोसकिल होइत छल। साइत हमरासभकेँ ओहि इलाकाक गामसभ देखब लिखल छल। से हमसभ नीकसँ देखलहुँ । मुदा परेसानो भेलहुँ । आखिर वाहनचालक आठ किलोमीटर एहि तरहेँ चललाक बाद फेरसँ फोरलेन सड़कपर वापस आबि सकल। हमसभ बहुत प्रसन्न छलहुँ । टैक्सी फेरसँ अपन पुरना गति धए लेने छल। हमसभ एक बेर फेरसँ निश्चिन्त भावे यात्राक आनन्द लैत आगू बढ़ि रहल छलहुँ । एतबेमे एकटा नीकसन ढाबा देखाएल। हमसभ भुखल तँ रहबे करी। ओहिठाम नीकसँ भोजन केलहुँ । तकर बाद इन्दौर दूर नहि छल। मोसकिलसँ चालीस मिनटक बाद हमसभ अपन डेरापर पहुँचि गेलहुँ।

इन्दौर आ आसपासक हमरासभक यात्रा सुखद बनबएमे वाहनचालकक बहुत योगदान छल। ओ एकटा समांग जकाँ सदिखन

हमरासभक संगे लागल रहल । कतहु कोनो परेसानी नहि होमए देलक। स्नान करबासँ लए कए दर्शन करबा धरि ओ छाँह जकाँ हमरासभक संग दैत रहल। हमसभ अचानक ट्रैबेल एजेन्सीक माध्यमसँ ओकरा संपर्कमे आएल रही। मुदा पहिले दिन ओकर व्यवहारसँ हमसभ बहुत प्रभावित भेल रही। तकर बाद तँ ओकरेसँ सोझे संपर्क करी। ओ बहुत उचित किरायामे हमरा लोकनिकेँ सुरक्षित यात्रा करबैत रहल। ताहि हेतु ओ निश्चित रूपसँ धन्यवादक पात्र अछि। असलमे कतबो किछु बेकाल समय भए गेलैक अछि,मुदा अखनहु नीको लोक अछिए । तेँ ई दुनिआ चलि रहल अछि आ चलैत रहत। एकटा अज्ञात सहरमे एकदम अपरिचित ओहि वाहनचालकक व्यवहारसँ से अनुभव पक्का भेल ।

२८ जुलाइ २०२३क भोरेसँ हमसभ वापसी यात्राक तैयारीमे लागि गेल रही। स्नान-ध्यानक बाद अतिथिगृहक सामने अवस्थित पिपलेश्वर महादेवकेँ प्रणाम कए हमसभ जलखै केलहुँ । तकर बाद थोड़ेक विश्राम सेहो भेलैक। सामानसभ बाकसमे राखि लेल गेल । दूपहरिआमे भोजन केलाक बाद घंटा भरि फेरसँ विश्राम केलहुँ। तकर बाद अतिथि गृहक हिसाब-किताब कएल गेल। आवश्यक भुगतान केलहुँ आ हमसभ इन्दौर रेलवे टीसन दिस बिदा भए गेलहुँ । एक बेर फेर रस्ते-रस्ते इन्दौर सहरक स्वच्छतासँ हमसभ मंत्रमुग्ध छलहुँ । जेना सौंसे सहर निश्चय कए लेने होथि जे सहरकेँ स्वच्छ राखबाक अछि। तखनहि ई संभवो भए रहल अछि। मात्र सरकारी प्रयाससँ ई संभव नहि भए सकैत छल। मोनमे ईहो होइत छल जे देशक आन-आन सहरसभ किएक ने एहिना स्वच्छतामे औअलि आबि सकैत अछि? किएक ने? मुदा ताहि हेतु सभगोटेकेँ इन्दौरबासीसभसँ प्रेरणा लेब जरूरी अछि।

गया गेल रही

बहुत दिनसँ माएक वारंबार सपना अबैत रहैत छल।एहि सपना सभक रहस्य नहि बुझा रहल छल।तथापि मोनमे भेल जे गया चली,पिण्डदानक बड़ महत्व सुनैत छी।ओहिठाम पिण्डदान केला पर पितरसभ मुक्त भए जाइत छथि।मुक्त भेल पितरसभ अपन वंशजकें आशीर्वाद दैत छथि जाहिसँ सभक कल्याण होइत अछि।पंडितजीसँ गप्प कए गया जेबाक दिन तकओलहुँ। विचार-विमर्षक बाद फरबरीक अन्तमे ,२५ फरबरी २०१८कैं जेबाक कार्यक्रम बनल,वापसी २८ फरबरीक। तीन मास पूर्बे रेल टिकटक आरक्षण करओलहुँ।

क्रमश: गया जेबाक समय लगीच आबि रहल छल। चिन्ता रहए जे कोना की करी। कखनो काल होइत जे एखन स्थगित कए दी। फेर भेल जे जखन कार्यक्रम बना लेने छी तँ ई काज कइए लेल जाए। पण्डितजीसँ परामर्श कए चीज-वस्तुक ओरिआनमे लागि गेलहुँ। मुदा सभसँ चिन्ता छल पणडासभसँ कोना निपटल जाएत ? सुनैत रही जे ओहिठाम टीसनेपर सँ पणडाक आदमीसभ घेर-बार शुरू कए दैत अछि। गयामे रहबाक चिंता सेहो होइत छल। संयोगसँ ओहि दिन हमर मित्र मिसरजी भेटि गेलाह । ओ पहिने गया पिण्डदान हेतु गेल रहथि। हुनकर परिचित पंडा आ एकटा महापात्रजीक फोन नंबर भेटल। ओ अपनो स्तरसँ पंडाजीसँ आ महापात्रजीसँ गप्प कए हमर काज हल्लुक कए देलाह।

महापात्रजीसँ गप्प भेल तँ सभसँ पहिने ओ कहलाह जे दिन उपयुक्त नहि अछि,पितृपक्षक समय फगुआक बाद हेतैक,तकरबाद कोनो दिनक टिकट लए सुचित करु। हम कहलिअनि जे हम तँ चारि माससँ दिन तकओने छी।

"के दिन तकलाह अछि? हमरा गप्प कराउ।“

आब कि करी? दिन तकनिहार पंडितजी विद्वान छथि,समय दए दिन तकलथि,ताहि हिसाबे टिकट लेने छी।आब जखन जेबाक समय लगीच आबि गेल तँ दोसरे बात सुनि रहल छी। पंडितजीसँ फेर गप्प कए सभ बात कहलिअनि। ओ अपन निर्णय पर दृढ़ छलाह,दिन सही अछि, महापात्र की

कहताह। हमरा हुनकर बातमे दम बुझाएल। ओ निश्चय सही दिन तकने हेताह। महापात्रजीकेँ फोन कए कहलिअनि जे हमर कार्यक्रम तय अछि,दिन सही छैक,अपने ओहि दिनक हिसाबसँ उपलब्ध भए सकब कि नहि से कहू। असलमे हुनका पहिने सँ किछु काज गछल रहनि, ओ ई अवसर सेहो नहि जाए देवए चाहथि। जखन बुझा गेलनि जे हम अपन कार्यक्रम पर अड़ि गेल छी,तँ ओ तैयार भए गेलाह। कहलाह जे हुनका २६ फरबरीक उपनयन करेबाक छनि,तें २६क रातिमे गयेमे रहताह आ सभटा काज नीकसँ करा देताह। कहलाह :

"चिन्ता नहि करु।सभटा भए जेतैक । "

सामान सभक सूची ओ लिखा देलाह। ओहि सूचीमे ततेक तरहक अंट-बंट सभ चीज-वस्तुक नाम छल जे ओकरासभकेँ एकट्ठा करब बहुत कठिन बूझाएल। तैँ सामानसभ आनबाक भार हुनके दए हम निश्चिन्त भेलहुँ। सामान सभक उचित दाम देबाक आश्वासन हम देलिहनि।ओ सहर्ष ताहि हेतु तैयार भए गेलाह। तकरबाद हम अपन तैयारीक अनुसार बिदा भए गेलहुँ। ओहिसँ पहिने महापात्रजी कैक बेर फोन कए आश्वस्त होइत रहलाह जे हमर कार्यक्रम पक्का अछि, ओहिमे कोनो परिवर्तन नहि भेल अछि,जे निश्चित तिथिक हमसभ ओतए पहुँचि रहल छी,जे हुनकासँ भोरे भेँट होएत।

गयासँ पंडाजीक सेहो फोन आएल। ओ हमर कार्यक्रमक बारेमे आश्वस्त होमए चाहैत छलाह। हम कतए ठहरब सेहो जानए चाहैत छलाह। ईहो कहलाह जे रहबाक व्यवस्था हुनके ओहिठम भए सकैत अछि। मुदा जखन ओ एहि बातसँ आश्वस्त भए गेलाहजे हम हुनकेसँ संपर्क करब तखन निश्चिन्त भए गेलाह। संगहि कहलाह जे टीसनपर पहुँचिते हुनकासँ संपर्क कएल जाएत जाहिसँ कोनो आओर पंडाक आदमी तंग नहि करत आओर हुनकर आदमी ओतहिसँ हमरा होटल लए आनत। हम अपन रहबाक व्यवस्था होटलमे केने रही। ताहि हेतु पहिनहिसँ आनलाइन आरक्षण करओने रही। हम पंडाजी ओहिठाम नहि रहए चाहैत रही कारण ओतए पता ने केहन की होएत,से मोनमे शङ्का रहए।

२५ फरबरी २०१८क साँझमे भुवनेश्वर राजधानीसँ हम आ हमर श्रीमतीजी गया बिदा भेलहुँ।ओहिसँ पूर्व होटलमे फोन कए सूचना दए देल जे हमसभ भोरे पाँच बजे होटल पहुँचब। तदनुकूल हमरा सभ लेल व्यवस्था कएल जाए। रस्ता भरि खाइत-पिबैत हमसभ यात्राक आनंन्द लैत रहलहुँ। सासारामक लगमे ट्रेन छलैक कि एकटा सहयात्री चिचिआ उठलाह जे गया आबयबला अछि। कैकटा यात्री हुनकर डाक सुनि उठि कए सामान लए द्वारि पर आबि गेलाह। रातिक समय छलैक,केओ जोखिम नहि उठाबए चाहए, कारण गयामे ट्रेन चारि बाजि कए बीस मिनटपर पहुँचक छल,आ जौँ राति मे सुता गेल,सुतले रहि गेलहुँ,तहन तँ गेल महिष पानिमे परड़ु समेत। एहि चक्करमे चारि-पाँच बेर द्वारि धरि गेलहुँ आ वापस सीट पर अएलहुँ।अन्ततोगत्वा लगभग एक घंटा बाद ट्रेन गया टीसनपर पहुँचल।

हम सभ भोरे गया टीसनपर पहुँचि गेल रही। होटल ग्रैंड पैलेस टीसनसँ सटले छल। ततबे लग रहैक जे टीसनपर होइत उद्घोषणा होटलमे सुनाइत छल। होटलमे पहुँचि हमरा लोकनि थोरेकाल विश्राम कएल । नित्यक्रमसँ निवृत्त भए बैसले छलहुँ कि पंडाजीक फोन आएल। होटलक पता पुछलाह। थोरे कालक बाद ओ होटल पहुँचि हमरसभक हाल-चाल लेलाह,आ सभ तरहे निश्चिंत रहबाक हेतु कहलाह। महापात्रजीके रातिमे अएबाक कार्यक्रम रहनि ।महापात्रजी वारंबार फोनपर कहैत रहलाह जे एकभुक्त कए लेब। केस कटा लेब। हमसभ सामान लए रातिए पहुँचि जाएब। काल्हिसँ पिण्डदान होएत।

ओहिदिन,माने २६ फरबरीक उपयोग हमरा लोकनि वोधगया देखएमे केलहुँ। गयासँ बोधगया जेबाक हेतु टेम्पू 200 टाकामे भेटल। गयासँ बोधगयाक दूरी करीब-करीब १३ किलोमीटर अछि। रस्ताक हालति बहुत खराप अछि। लगबे नहि करत जे अंतरराष्ट्रीय महत्वक तीर्थस्थान जा रहल छी। गया सहरक हाल मधुबनी,दरभंगे जकाँ अछि। नाला सभ नरकक प्रतिरूप भेल,वातावरण दुर्गंधसँ भरल। होइत जे कतए आबि गेलहुँ। करीब आधाघंटामे टेम्पु बोधगया मंदिर लग पहुँचि गेल। कनिके काल पैरे चलि हमसभ मंदिर लग बनल मालखानामे पहुँचि गेलहुँ। ओहिठाम मोबाइल फोन सभ जमा करब अनिवार्य,कारण से सभ लए मंदिरक भीतर नहि जा सकैत छी। मोबाइल फोन जमा कए हम सभ कनिके आगू बढ़लहुँ कि

एकटा टेम्पूबला सौंसे बोधगया घूमाबक प्रस्ताव देलक,२०० टाकामे। हम सभ मानि गेलहुँ आ ओहि टेम्पूसँ आस-पासक वोध मंदिर सभ देखए निकललहुँ।

भूटान,तिब्बत,चीन,बर्मा,श्रीलंका,वियतनाम,थाइलैंड,जापान,थाइ लैण्ड आदि अनेक देश,बुद्धक अनुयायी संगठन सभ अपन-अपन बुद्धक मठ बनओने छथि। ओहिमे भव्य बुद्धक प्रतिमा स्थापित अछि। कैकटा मंदिर तँ अत्यंत शोभनीय थिक। मुदा बाहर ढाकक तीन पात। सड़क सभ खण्डहर भए रहल अछि। लगबे नहि करत जे एतेक प्रमुख स्थानमे घुमि रहल छी। आश्चर्यक बात जे एतेक महत्वक स्थानक एहन उपेक्षा भेल अछि? टेम्पोबला काते-काते सभठाम घुमा-फिरा हमरासभकेँ महाबोधि मंदिर लग उतारि देलक। मोबाइल पहिने जमा कए देने रहिऐक,तेँ फोटो नहि खीचि सकलहुँ।

महाबोधि मंदिरमे जाइत काल हाथक झोराक जाँच भेल। ओहिमे चार्जर,हेडफोन छलैक। कतबो कहलिऐक जे ओकरा सभकेँ रहए दैक,मुदा नहि मानलक,द्वारि पर असबार सिपाही अड़ि गेल। हारि कए दोबारा ई वस्तुसभ जमा करए गेलहुँ। तकरबादे मंदिरक परिसरमे प्रवेश भए सकलहुँ। मंदिरक मुहथर लग एक गोटा नवका दसटकही,बीसटकही,नोटसभक गड्डी बेसी पैसा लए कए विदेशी सभके दैत देखलहुँ। आगू बढ़ला पर विदेशी तीर्थयात्री सभक भरमार देखाएल। आगन्तुक वौद्धसभक हेतु प्रसाद भिक्षापात्रमे देबाक ओरिआन भए रहल छल। भीतर मंदिर मे ठाम -ठाम विदेशी वौद्धसभ ध्यान कए रहल छलाह। मंदिरमे अपूर्व शांति छल। एकटा गोर-नार विदेशी महिला सुतल वा ध्यानस्थ छलीह। लगैत छल जेना कोनो मुरूत पड़ल अछि। गर्भगृहमे अपार शान्ति छल। अगल-बगलमे वौद्धसभ माला फेरि रहल छलाह। ओहिठाम दर्शनकए हमसभ वापस आबि गेलहुँ। मोबाइल छोड़ओलहुँ । फेर टेम्पो पकड़लहुँ,आ वापस गया टीसन लग स्थित होटलमे आबि गेलहुँ।

प्रातःकाल नित्यकर्मसँ निवृत्त भए महापात्रजीकेँ फोन लगाओल। हमरा उम्मीद छल जे ओ रातिएमे आबि कए पंडाजी ओतए ठहरल हेताह,जेना कि पहिने कहने रहथि। मुदा ओ तँ ट्रेनेमे छलाह।

"जहनाबाद पहुँचि गेल छी। ट्रेन विलंब भए गेलैक, नहि तँ पहुँचि गेल रहितहुँ। दू घंटामे   आबि जाएब। चिंता नहि करब। हम सभ सामान लए कए आबि रहल छी।"

महापात्रजीकेँ विलंब होइत देखि दू-तीनबेर फोन केलिअनि। ओ तँ ट्रेनमे बैसल रहथि,बेर-बेर कहथि:

“आब लगे अछि। सभटा भए जेतैक। चिंता नहि करब। दू दिनमे सभटा काज भए जेतैक। "

आखिर ओ दूटा झोरामे सामान सभ लए ९ बजे सोझे हमर होटल पहुँचि गेलाह। मोन आश्वस्त भेल जे आब काज भए जाएत। नित्यकर्मसँ निवृत्त भए महापात्रजी हमरासभक संगे पंडाजीक ओतए बिदा भेलाह। पंडाजीक ओतए हेतु टेम्पु कएल। सड़कपर उतरि पाँच मिनट पैरे चललाक बाद हुनकर घर आएल। मधुबनी,दरभंगा जिलाक लोकसभक इएह पंडा छथि,से ओ कहलाह। निसान झंडापर माछक,दरभंगा महराजक देल। गलीक एक तरफ पुरना घर छैक,जे दरभंगा महाराज बनओने रहथि। तकर ठीक सामने नव पक्का घर बनल अछि,जाहिमे यात्री लोकनिक ठहरबाक ओरिआन अछि। नीकसँ बनल ओ सुविधापूर्ण कोठरीसभ अछि। से देखि भेल जे एतहुँ रहि सकैत छलहुँ। मुदा मुख्य रस्तासँ बहुत चलए पड़ैत छैक,फेर ओही वातावरणमे दिन-राति रहू। होटलमे चलि गेलाक बाद एकटा नवीनताक अनुभव होइत छल।

सभसँ पहिने पंडाजीसँ आज्ञा लेल गेल। ताहि हेतु हुनकर पैर पूजल जाइत अछि। किछु संकल्प कएल जाइत अछि,जे एतेक ने एतेक दान,दक्षिणा करब। तखन ओ आशीर्वाद दैत काज करबाक स्वीकृति दैत छथि। हमसभ आगू बढ़ैत छी। पंडाजी बएसमे हमरासँ बहुत छोट छलाह,तेँ कनी कोनादनि लागल। बादमे महापात्रजीकेँ ई गप्प कहलिअनि। कहलाह जे एहिठामक अधिकारी इएह थिकाह,हिनके चलतनि।

पंडाजीसँ आज्ञा लए हमरा लोकनि फल्गु नदीक कछारपर पहुँचैत छी। ओतए छोटसन महादवक मंदिर छल। सामनेमे खाली स्थान देखि कर्म शुरू भेल। पिण्डदान हेतु हमर श्रीमतीजी गोल- गोल पिण्ड बनओलथि जतेक पुरखासभ ज्ञात,अज्ञात मोन पड़ैत गेलाह सभकेँ लेल पिण्डदान

देलहुँ। जतेक काल हम पिण्डदान करैत रहलहुँ ततेक काल एकटा बुढ़िया आ दूटा छौड़ा मिलि ओतए हल्ला करैत रहल। ओकरा लेल धनि-सन। ततेक हल्ला करैत गेल जे मंत्रो सुनब पराभव रहैत छल। महापात्रजी कहलाह :

"अहि सभपर ध्यान नहि दिऔक, काजमे लागल रहू। ई सभ एहीठामक वासी छैक। "

पिण्डदानक बाद पिण्डकेँ फल्गु नदीमे पानि देखि कए फेखबाक हेतु हमर श्रीमतीजी आगू बढ़लीह। कहल गेलनि जे फल्गु नदी मे चलल एक-एक डेग अश्वमेध यज्ञक बरोबरि होइत आछि। फल्गु नदी तँ रेतसँ भरल अछि। कहि नहि एकरा नदी किएक कहल जा रहल अछि। कोनो समयमे भए सकैत अछि ई नदी रहल होएत,मुदा आब तँ निट्ठाह रेतसँ भरल अछि। बहुत आगू गेलाक बाद कनिक पानि छल जे बालुमे खधिआ कए निकलल छल,ओतहि पिण्ड फेकि ओ लौटि गेलीह। अगल-बगल ठाढ़ छौड़ासभ आओर ओ बुढ़िआ पैसा मांगए लागल आ जाबत लेलक नहि चुप्प नहि भेल। महापात्रजी अपना छोड़ि ककरो पैसा देल जाए ताहि हेतु तैयार नहि छलाह,मुदा कोनो उपाय नहि छल,ओकरा सभकेँ किछु-किछु देलाक बादे हमसभ ओतएसँ आगू बढ़ि सकलहुँ।

ओहिठामसँ आगू जएबाक हेतु भरिदिनक लेल २५० टाकामे एकटा टेम्पू महापात्रजी ठीक केलाह। टेम्पूबला बेस उत्साही आदमी छल। बीच-बीचमे बेस मनोरंजक मुद्रा बनाए तरह-तरहक गप्प-सप्प करैत बढ़ैत रहल। कनीकालमे हमसभ प्रेतशिला पर आबि गेल रही। ओतए पहिने घाटपर पिण्डदान भेल।ओहिसँ सटल पोखरि कही,ताल कही ,जे कही, छल जे नरकक दोसर रूप लगैत छल। ओहिमे सँ जल लए पिण्डदान होएत से सोचिएक रौँआ ठाढ़ भए गेल। खैर! जे करबाक छल से छल । ओहिमे सँ जल आनल गेल। कतेको गोटे आस-पास पिण्डदान करैत छलाह। हुनका स्थानीय लोकसभ पैसा लेल कोनो कर्म बाँकी नहि रखने छल। टाका नहि देबै आ पिण्डदान करब,भए नहि सकैत अछि। हमसभ जखन ओतए पिण्डदान कए लेलहुँ तँ एकटा बेस मजगूतगर,कारी भुसुंड लोक आबि पैसा देबाक आग्रह करए लागल जे महापात्रजीकेँ पसिंद नहि रहनि। ओहिबातसँ

ओ व्यक्ति महापात्रजीकेँ गरिआबए लागल,बात बढ़ए लागल,महापात्रजी सेहो किछु कहलखिन।ओहो चुप्प नहि रहल।महापात्रजीक गट्टा धेलक आ गरजए लागलः

"आब तूँ अबिअह झाजी! अगिलाबेर सँ टपए नहि देबह। “

बात बिगड़ैत देखि हमसभ जल्दीसँ ओकरा एकसए टाका दए जान छोड़ओलहुँ। हमसभ तँ पहिनेसँ ओकरा पैसा देबए हेतु मोन बनओने रही,कारण ओकरा दोसर सभक संगे फसाद करैत हम देखैत रही मुदा महापात्रजी रोकैत रहलाह,तकर फलो ओ भोगलाह। कनी-मनी धक्का-मुक्की तँ भेबे केलनि।ओहो पाछू नहि रहल रहथि।

तकरबाद हम सभ प्रेत शिला दिस बढ़लहुँ। चारि सए सीढ़ी चढ़ए पड़त,ताहि हेतु पालकी सेहो उपलब्ध छल। दोसर विकल्प छल जे बीस सीढ़ीक बाद एकटा छोटसन स्थान छल। ओतए महादेवक मंदिर सेहो बनल छल। ओतए कैक गोटा पिण्डदान करैत छल। महापात्रजीक सलाहपर हमसभ दोसर विकल्प चुनि ओतहिँ पिण्डदान करबाक निर्णय कएल। जगह साफ छल। बैसबाक हेतु आसनी सेहो भेटि गेल। ओहिठामक पण्डाजी सरल व्यक्ति बुझेलाह। चैनसँ पिण्डदान भेल। कनिके हटि कए एकटा परिवारकेँ हवन करैत देखलहुँ। महापात्रजी कहलाह जे ओहि महिलाकेँ प्रेतबाधासँ मुक्ति दिआबक हेतु होम भए रहल छल़ ।

पिण्डकेँ फेकबाक हेतु निर्धारित स्थानपर पहिने सँ एकटा बंगाली अधबएसू लोक अपन बेटाक अकाल मृत्युक बाद ओकर फोटोकेँ ओतए राखि किछु- किछु कए रहल छलाह। पण्डाजी दूसए टाका देबाक आग्रह पर अड़ल छलाह,जकर बाद ओहि मृत व्यक्तिकेँ प्रेतयोनिसँ मुक्ति भए जएतेक। ओ अपन गरीबीक वारंबार हबाला दैत एकसए टाकासँ आगू नहि बढ़ि रहल छलाह,अन्तमे डेढ़सए टाकामे बात तए भेल। मंत्र पढ़ि ओहि फोटो पर फूल चढ़ओलथि। कतेक क्रूड़ छल ओ दृश्य,की कहू ? तकर बादे हमसभ ओतए पिण्ड रखलहुँ। टाका दए जल्दीए ओतएसँ खसकलहुँ। लगेमे पीपड़क गाछक जड़िमे बहुत रास मृत व्यक्तिसभक फोटो टांगल छल। महापात्रजी चिकरलाहः

"जल्दी बिना पाछू तकने आगू निकलि जाउ “ ।

सएह कएल। प्रेतशिलासँ उतरि हमरा लोकनि नीचाँमे भोजनालयमे बैसलहुँ। महापात्रजीकेँ भूख लागि गेल छलनि । ओ भोजन करताह। हमसभ राबरी खाएब। सभगोटे चाह पीब। से सभ बिचारि हमसभ ओतए बैसलहुँ। महापात्रजी भरिपोख भोजन केलाह,फेर पावभरि खोआ सेहो देलखिन। हमहूँसभ खोआ खेबामे पाछू नहि रहलहुँ,कारण भूख जोर मारि रहल छल। भोजन तँ नहि कए सकैत छलहुँ कारण अखन आओर ठाम पिण्डदान देबाक छल। महापात्रजीकेँ गया महात्म्यपर एकटा पोथी किनबाक हेतु एकटा बच्चा कतेक गोहरओलक,मुदा ओ नहि मानथि। हारि कए ओ एकसएसँ दाम घटबैत-घतबैत बीसटका पर आनि देलक , तैओ ओ अपन बातपर अड़ल रहथि।

" धुर्र, ई की लेब, बेकार थिक।"

अन्तमे हमरे दया आबि गेल आ हुनकासँ नुका कए बीसटकामे गया महात्म्य कीनि लेलहुँ। भोजन करितहिँ महापात्रजीकेँ फुरती आबि गेलनि। हमसभ तुरंत टेम्पूसँ रामशिलाक हेतु बिदा भए गेलहुँ। पहिने रामशिला घाटपर आ तकरबाद ऊपरमे बनल मंदिरमे पिण्डदान भेल। पोखरिक हालति पर नहिए चर्च करी सएह नीक। ऊपर मंदिरपर कनिके चढ़लाक बाद पिण्डदेबाक स्थान भेटि गेल आ ओतहिँ पिन्डदान देल गेल।

एकरबाद काकबलिकेँ पिण्ड दैत हमसभ गोटे टीसन रोड स्थित होटल पहुँचि गेलहुँ। महापात्रजी संगमे छलाह। ओ जे सामानसभ अनने रहथि तकर गोट-गोटक दाम जोड़ि दए हुनकासँ ओहि दिनक हेतु छुट्टी लेल। ओ पंडाजी ओहिठाम रहए हेतु चलि गेलाह। काल्हि अंतमे ब्राह्मण भोजन हेतु पंडाजीकेँ कहलिअनि। कहल जाइत अछि जे गयामे एकटा ब्राह्मण भोजन करओलापर एक हजारक फल होइत आछि। हम एगारहटा ब्राह्मण भोजनक व्यवस्था करबाक भार हुनका देलहुँ,तकर खर्चा प्रात भेने हम हुनका देलिअनि।

प्रेतशिला लगक होटलमे जे खोआ खेने रही,से डेरा अएलाक बाद रंग देखबए लागल। ताबरतोर पेट झड़ए लागल। संगमे दबाइ छल,से खेलहुँ। कहुनाक मामिला सम्हरल। दिनभरिक धमाचौकड़ीक बाद आब आराम जरूरी छल,से कएल।

प्रातभेने हमसभ विष्णुपाद मंदिर बिदा भेलहुँ। महापात्रजी ओतए पहिने पहुँचि गेल रहथि।

“पहिने घाटपर पिण्ड पड़त, तकर बादे विष्णुपाद मंदिरमे” ।

महापात्रजी बजलाह।हमसभ ओतए पहुँचलहुँ। पोखरिक कातमे बैसि पिण्डदानक काज शुरू भेल। एक-दूटा युवक ओतए ठाढ़ रहथि। जखन पोखरिमे पिण्ड फेकि हमसभ जेबाक हेतु उठलहुँ कि ओ तीन गोटे भए गेल रहथि आ पैसाक मांग केलथि।

” ओकरासभकेँ किछु नहि देबाक छैक।"

महापात्रजी कहैत रहलाह। से सुनि ओ सभ हुनका गरिआबए लागल,मारि करए पर उतारू भए गेल। महापात्रजी सेहो तमसा गेलाह । ताबत एकटा केओ स्थानीय व्यक्ति अएलाह। ओ हमरासभकेँ ओतएसँ घसकबामे मदति केलाह। ओ युवकसभ महापात्रकेँ गारि पढ़ैत रहल।

तकरबाद पैरे-पैरे हमसभ विष्णुपाद मंदिर पहुँचलहुँ। ओतए बेस गहमा-गहमी छल। बड़काटा मंदिर,ततबे पैघ ओकर प्रांगण। नीचाँ उतरब तँ बालुसँ भरल फल्गु नदी। बालुए-बालुए हमसभ फल्गु नदीकेँ टपि गेलहुँ। ओकर दोसर छोड़पर सीताकुंड थिक। कहबी छैक जे भगवान राम अपन पिता दसरथकेँ पिण्डदान हेतु ओतहि आएल रहथि। पिण्डदानक चीज-वस्तुक ओरिआओन हेतु गेल रहथि कि सीताजी मंत्र पढ़ि दसरथकेँ बजा लेलखिन। सीताजी की करितथि? कहलखिन जे राम तँ पिण्डदानक चीज-वस्तुक ओरिआओन हेतु गेल छथि। मुदा दसरथ कहलखिन जे आब तँ हम आबि गेल छी। तखन सीताजी स्वयं बालुएसँ पिण्डदान केलीह। ओहिठाम सीताजीक नाम पर छोटसन मंदिर अछि जाहिमे दसरथक हाथ बनल अछि। फल्गु नदीमे ओहिठाम कैकगोटे पिण्डदान करैत रहथि। ओतए दूटा पंडितमे दक्षिणा हेतु झगड़ा होइत रहलनि। हमसभ पिण्डदानमे लागल रहलहुँ। महापात्रजी हमर श्रीमतीजीकेँ चीज-वस्तु,गहना,टाका दान करबाक हेतु प्ररित केलाह। से सभ यथासाध्य भेलनि। हुनकर कहबाक हिसाबे हमसभ सामान सभ लए गेल रही। पिन्डदानक बाद ऊपर मंदिरमे दर्शन कए ,पिण्ड चढ़ाए हमसभ फेर बालुए- बालुए विष्णुपाद मंदिर लग पहुँचि गेलहुँ।

फल्गु नदीमे पानि नहि अछि। मुदा जँ तीन-चारि हाथ गहीँर कएल जाए तँ पानि भेटि जाइत छैक। तेहन कूप दू-तीन ठाम बनाओल देखाएल। यत्र-तत्र लोकसभ पिण्डदान करैत छलाह। ऊपर अएलाक बाद महापात्रजीकेँ चाहक तलब अएलनि। चाह आनए हमसभ ऊपर गेलहुँ। ताबते एकटा मुरदाकेँ"राम नाम सत्य है" कहैत लोकसभ ओहिठाम रखलक। किछु विध-विधान सभ केलक। तकरबाद ओकरा अन्तिम संस्कार हेतु फल्गुक कछारपर लए गेल। हमसभ चाह पिबैत ई सभ देखैत रहलहुँ। तकरबाद एक कप चाह महापात्रजीक हेतु अनलहुँ। चाह पीवि ओ टनगर भेलाह। हमसभ आगूक काज हेतु विष्णुपाद मंदिरमे पहुँचलहुँ।

विष्णुपाद मंदिरमे देशक विभिन्न भागसँ तीर्थयात्रीसभ आएल रहथि। करीब पचास गोटे तँ आंध्र प्रदेशक रहथि। ओहिना बहुत रास बंगालीसभ सेहो देखेलाह। सभ गोटे पिण्डदानमे लागल रहथि। स्थानीय पंडा जोर-सोरसँ मंत्र पढ़बएमे लागल रहथि। आंध्रप्रदेशसँ आएल तीर्थयात्रीसभ बहुत अनुशासित रहथि। मंदिरमे ओकर द्वारि पर ठाढ़भए बड़ीकाल हुनकासभकेँ मंदिरक पंडाजी मंत्र पढ़बैत रहलनि,ओसभ पढ़ैत रहलाह। तकरबाद सभ दस-दस टका दैत गेलाह आ पंडाजी बेरा-बेरी सभकेँ मंदिरमे प्रवेश करबैत रहलाह। बिना टाका देने एक्को गोटे भीतर नहि जा सकैत छल। ओ मंदिरक मुहथर छेकने ठाढ़ छलाह। ओहिठाम ततेक हल्ला होइत रहल जे हमरा महापात्रजीक कहल मंत्रसभ सुनबामे आ सुनि बजबामे बहुत दिक्कति होइत रहल कहुना-कहुना कए पिण्डदान समाप्त भेल।

“मंदिर बंद भए जाएत, जल्दी करू।"

महापात्रजी वारंबार चेतौनी देथि । हमसभ धरफराइत मंदिरक गर्भगृहमे पहुँचलहुँ। मंदिरक गर्भगृहमे बहुत लोक छल। भीतर जाएब, आ मुर्तिक लगीच जाएब पराभव छल। कहुना कए ठेलमठेला करैत ओतए पहुँचलहुँ। ओहिठाम एकटा पंडाजी पहिनेसँ एकगोटेसँ पैसा लए झंझटि कए रहल छलाह। ओकरासँ जखन बात फरिछाएल तखन हमरा पर ध्यान गेलनि। ओ पींड चढ़एबाक हमर प्रयासपर हुंकार भरैत महापात्रपर बिगड़लाह।

“एतए तोहर नहि चलतह। ई हमर जगह अछि। “

ओ पैसा निर्धारित करए चाहैत छलाह,महापात्र किछु मामुली रकम देबाक हेतु कहैत छलाह। एहि बातसँ ओ बहुत तामसमे छलाह कि कोनो दोसर जजमानक फोन आबि गेलनि, ओ एकदमसँ फोन करैत बाहर भगलाह,कारण ओहिठाम ततेक हल्ला होइत रहैक जे किछु सुनाइ नहि पड़ि रहल छल। बाहर मंदिरक द्वारिपर ओ गप्प करैत रहलाह आ हमसभ पिण्ड चढ़ाए ओतएसँ,हुनका सामनेसँ,निकलि गेलहुँ। हुनका किछु नहि हाथ लागल। ओहिठामसँ हमसभ दक्षिणाग्निपद पहुँचलहुँ। ओतए पिण्डदान दए हमसभ वैतरणी पहुँचलहुँ। ओहिठामक पोखरि आने पोखरिसभ जेना नरक लगैत छल। ओतहुँ ओहिना पिण्डदान भेल। सभसँ अन्तमे पिण्डदान भेल अक्षयवटपर।

अक्षयबटपर पैघ बरक गाछ अछि।ओहि गाछक जड़िमे बहुतरास लालडोरा,पीअर कपड़ा,सभक गेँठी कएल अछि। ओहि गाछक छाहरिमे हम पिण्डदान केलहुँ। पिण्डकेँ गाछक जड़िमे फेकि ओहिठामसँ बिदा भेलहु। पंडाजीकेँ पहिने फोन कए देने रहिअनि जे आब हमसभ घंटाभरिमे पहुँचि रहल छी। ओहिठामसँ हमसभ मंगला भगवतीक दर्शन कएल। तकरबाद ठोकले पंडाजीक ओतए पहुँचलहुँ। भरिदिन मंत्र पढैत,पढैत मुँहमे सपटी लगैत छल। भूख से लागि गेल छल। मुदा अखन एकटा महत्वपूर्ण प्रकरण बाँचल छल। तकरा पूरा करबाक हेतु हमसभ पंडाजीक ओतए पहुँचि गेल रही।

पंडाजीक ओतए पहुँचैत छी। ओहिठाम पहिनेसँ सभटा ओरिआन भेल अछि। सज्जादानक हेतु सभटा वस्तु एकटा कोठरीमे राखल अछि। पंडाजी अपने एहि काजक हेतु अबैत छथि। हम पहिने गछल टाका देबाक गप्प दोहरबैत छी। तकरबाद सज्जा दान कएल गेल। एहिठाम एकटा गप्प कहब जरुरी बुझा रहल अछि जे सभ सामानकेँ एकहि बेरमे मंत्र पढ़ि दान कए देल गेल। श्राद्धमे एक-एक वस्तुक हेतु अलग-अलग मंत्र पढ़ाओल जाइत छल। ओ बहुत श्रमसाध्य आ उबाउ तरीका छल। सज्जा दानक बाद पंडाजी कहलाह जे गयामे एकटा ब्राह्मण आनठामक एक हजारक बरोबरि फलदायी होइत अछि,से कहू कतेक ब्राह्मणक भोजन हेतु दान करब। एकटा ब्राह्मण हेतु यथोचित टाका अलगसँ गछलिअनि। अन्तमे फूलक

मालासँ हमर दूनू बेकतीक हाथ बान्हैत कहलाह जे एकर तोड़ाइ हेतु किछु अलगसँ कहिऔक,सेहो गछलिऐक,तखने ओहिठामक विधसभ पूरा भेल। हुनका प्रणाम कए चैनसँ बैसलहुँ। पण्डाजीक ओहिठाम आगन्तुकसभक बहुत नीकसँ हिसाब राखल जाइत अछि। सभक नाम-गाम,पता,गया अएबाक तिथि लिखल जाइत अछि। गाम-गामक अलग-अलग पृष्ठ अछि। हमरा गाम पछिला सए सालमे गया गेनिहारक सूची ओ देखेलाह। बहुत नीक लागल। ओहिमे अपन गामक कतेको गोटेक नाम देखलहुँ। ई अपना-आपमे एकटा इतिहास छल।

ताबत ब्राह्मणसभ आबि गेल छलाह। पंडाजी कहलाह जे संयोग नीक अछि जे एगारहटा ब्राह्मण पुरि गेल अन्यथा एहिठाम से कठिन रहैत अछि। भोजनक सामग्री तैयार छल। भरिपोख ब्राह्मणसभ भोजन केलाह। तकरबाद सभ गोटेकेँ दक्षिणा देल गेल। एहि प्रकारे गयामे पिण्डदानक कार्यक्रम विधिवत संपन्न भेल। पंडाजीकेँ गछल टाका देलहुँ। ब्राह्मण भोजनमे भेल खर्चाक हिसाब भेल,से गोट-गोट कए चुकता केलहुँ। महापात्रजीकेँ दक्षिणा देलहुँ। हुनकर वापसीक हेतु यात्रा व्यय अलगसँ देलहुँ। ओसभ प्रसन्न देखेलाह।

मोनमे बहुत संतोष भेल। मूलतः माताक स्वर्गवाससँ व्याकुल हृदयकेँ तात्कालिक शान्ति भेटल। प्रेतशिलापर जखन तरह-तरहसँ मातृऋणसँ उरिन हेबाक हेतु पिण्डदान देल जाइत छल तँ कानबाक मोन भए रहल छल। की कोनो पिण्डदानसँ माताक ऋणसँ उरिन भए सकैत छी? नहि भए सकैत छी। तथापि ई अपन धर्मक विधान छैक। गयामे पिण्डदानसँ पूर्वजक आत्मा मुक्त भए जाइत अछि। एहि विश्वास ओ श्रद्धासँ हम ओतए गेल रही आ दू दिन धरि ठाम- ठाम घुमि-घुमि पिण्डदान करैत रहलहुँ। प्रार्थना करैत रहलहुँ जे माता सहित हमर सभ पूर्वजक आत्माकेँ मुक्ति होनि।

अपन धर्ममे आस्था रखनिहार विश्व भरिसँ लोकसभ एतए पिण्डदान करए अबैत छथि। मुदा ओहिठामक व्यवस्था खास कए पोखरिसभक खास्ता हाल देखि कए निराशा होइत छैक। अंतरराष्ट्रीय महत्वक एहि स्थानक उचित देख-रेख नहि भए रहल अछि। ओहूसँ चिन्ताक

बात थिक सभठाम पैसाक वर्चस्व। जे से पैसाक लेल तंग करैत अछि। शुरूसँ अन्त धरि ई समस्या बनल रहल। एकर की समाधान होएत? एतबा जरूरी लगैत अछि जे शान्तिपूर्ण माहौलमे लोक श्रद्धापूर्वक अपन पूर्वजक आराधना कए सकथि,से व्यवस्था होइक । मुदा बिलारिक गलामे घण्टी बान्हत के?

चित्रकुटकेँ घाट पर

नवंबर २०२२मे प्रयागराजमे आयोजित डाक्टर जयकान्त मिश्र जन्म शताव्दी समारोहमे भाग लेलाक बाद हमसभ प्रयागराजसँ करीब चालीस किलोमीटर फटकी मेजा तहसीलेमे अवस्थित एनटीपीसीमे कार्यरत हमर शाढ़ूक ज्येष्ट पुत्र चि0आदित्य एजीएमक ओहिठाम पहुँचलहुँ । हमर मित्र आदरणीय संजीव सिन्हाजी,जिनका ओहिठाम हम प्रयागराज प्रवासक दौरान ठहरल रही,हमरासभकेँ ओहिठाम धरि अपन कारसँ अरिआति देलनि। एहन स्नेह,एहन अपनत्व कतए पाबी? कनीकाल आदित्यजीक डेरापर रुकलाक बाद सिन्हाजी वापस प्रयागराज चलि गेलाह। तकर बाद हमसभ ओहिठाम बच्चासभक संगे हिलि-मिलि गेलहुँ । हमर पेट प्रयागेसँ गड़बड़ चलि रहल छल। हमर श्रीमतीजीक पेट सेहो एहिठाम पहुँचलाक बाद गड़बड़ा गेलनि। धुआनि ढेकार दए रहल छलनि। रद्द हेबाक प्रवृत्ति सेहो छलनि। आदित्य एनटीपीसीक चिकित्सालयसँ किछु दबाइ अनलनि। किछु दबाइ हमरा लग छलहो। ओएहसभ काज आएल। क्रमश: हुनकर मोन ठीक भेलनि। दोसर दिन जखन उठलहुँ तँ ओ आगूक यात्रा हेतु स्वस्थ बुझेलीह। सभगोटेकेँ चित्रकुट जेबाक कार्यक्रम बनलनि। आदित्य एकटा बड़का कार ठीक केने रहथि। हमसभ जलखै चाह केलाक बाद करीब दसबजे ओहिगाड़ीसँ चित्रकुट बिदा भेलहुँ । हमसभ छओ गोटे रही,दूटा बच्चा सेहो रहए। कुल मिला कए आठगोटे भेलहुँ आ गाड़ी एक्केटा,निसस्न्देह बड़का गाड़ी रहैक । तथापि,ओते गोटेक समावेश करब बहुत मोसकिल छलैक,मुदा कएल गेलैक। वाहनचालक लगक सीटपर हम बैसलहुँ , मुदा हमर दुनूकात दूटा झोरा राखल रहए जाहिसँ हम अपन टांग कनीको हिला नहि सकैत छलहुँ । पछिलका सीटपर बैसल लोकसभक हालति तँ सोचल जा सकैत अछि। आखिर दस बजे ओ गाड़ी बिदा भेल। रस्ता भरि गप्प-सप्प चलैत रहल। सभ तरह-तरहक अनुभवसभक वर्णन होइत रहल। एहिसभसँ यात्रा बहुत मनोरंजक भए गेल। समय कोना बितल आ चित्रकुट कोना आबि गेल से पतो नहि चलि सकल।

चित्रकुट बहुत पवित्र आ प्रमुख धार्मिक स्थान मानल जाइत अछि। भगवान राम,तुलसीदास आ आधुनिक कालमे जगद्गुरु रामभाद्राचार्यजी चित्रकूटसँ जुड़ल बहुत स्मरणीय नामसभ छथि। ओना हिनकासभक बारेमे के नहि जनैत अछि? तथापि प्रसंगवश हिनकालोकनिकेँ उद्धृत करैत छी। तखन चित्रकूटक आगूक यात्रावृतान्तक चर्च करब।

भगवान राम अपन चौदह वर्षक वनबासक अवधिमे सँ साढ़े एगारह वर्ष एहीठाम बितओने छलाह। हुनकर वनबास गमनक बाद हुनकर पिता दसरथक मृत्युक सूचना एहीठाम हुनकर अनुज भरत द्वारा देल गेल रहनि। एतहि ओ अपन स्वर्गीय पिताक श्राद्ध केलनि। यद्यपि भरत हुनका वापस अयोध्या जा कए राज काज सम्हारबाक बहुत आग्रह केलनि ,परंतु भगवान राम वनबास अवधि धरि वापस अयोध्या नहि जेबाक निर्णयपर अड़ल रहि गेलाह। तकर बाद हुनकर चरणपादुका लए भरत वापस अयोध्या आबि गेलाह। हुनका संग चित्रकुट गेल गणमान्यलोकनि सेहो वापस आबि गेलथि। भगवान राम सीता आ लक्षमणक संगे चित्रकुटेमे रहि गेलाह ।

काशीमे तुलसीदासकेँ एकदिन एकटा प्रेत भेटलनि। ओ हुनका हनुमानजीक पता देलकनि। हनुमानजीसँ भेंटक बाद तुलसीदास भगवान रामक दर्शन करेबाक जनतब भेटलनि। हुनकर परामर्शक अनुसार ओ चित्रकुट आबि गेलाह। ओतए ओ रामघाटपर रहथि। एकदिन प्रदक्षिणाक क्रममे हुनका दूटा राजकुमार धनुषवाण लेने घोड़ापर सबार देखेलनि। ओ हुनका देखि मंत्रमुग्ध भए गेलथि। मुदा चिन्हि नहि सकलथि जे ओ भगवान राम आ लक्षम्ण छलाह । बादमे हनुमानजी हुनका सभ बात कहलखिन । से जानि कए तुलसीदास बहुत दुखी भए गेलथि। हुनका हनुमानजी सांत्वना दैत कहलखिन जे हुनका फेर भगवानक दर्शन हेतनि। संवत सोलह सए सात मौनी अमावस्याक दिन बालकरूपमे हुनका फेर भगवानक दर्शन भेलनि। ओ बालक हुनकासँ चानन मांगलथि। हनुमानजीकेँ भेलनि जे तुलसीदास कहीं फेर ने हुसि जाथि। ओ सुग्गा बनि कहलथि-

चित्रकूट के घाट पै, भई संतन के भीर।

तुलसीदास चंदन घिसै, तिलक देत रघुबीर।।

तुलसीदास तुरंत चौंकि गेलाह,सतर्क भेलथि आ भगवानकेँ चिन्हि गेलथि। ओ बालकरूपमे भगवानक सद्यः दर्शन कए मंत्रमुग्ध भए गेलथि। भगवान अपने हाथे हुनक माथपर चानन लगओलथि आ ओहिठामसँ बिला गेलथि ।

आधुनिक कालमे जगद्गुरु रामभद्राचार्यजी आ हुनका द्वारा स्थापित जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकुटमे चर्चाक विषय अछि। ओ चित्रकुटमे तुलसीपीठक स्थापना केने छथि। जगद्गुरु रामभद्राचार्यजीक कथा बहुत रोमांचकारी अछि। ओ शुरूएसँ बहुत प्रतिभाशाली रहथि। तीने वर्षक आयुमे ओ पहिल कविता लिखने रहथि-

मेरे गिरिधारी जी से काहे लरी।

तुम तरुणी मेरो गिरिधर बालक काहे भुजा पकरी॥

सुसुकि सुसुकि मेरो गिरिधर रोवत तू मुसुकात खरी॥

तू अहिरिन अतिसय झगराऊ बरबस आय खरी॥

गिरिधर कर गहि कहत जसोदा आँचर ओट करी॥

हुनका द्वारा रचित पहिल संस्कृत श्लोक अछिः

महाघोरशोकाग्निनाऽऽतप्यमानं

पतन्तं निरासारसंसारसिन्धौ ।

अनाथं जडं मोहपाशेन बद्धं

प्रभो पाहि मां सेवकक्लेशहर्त्तः ॥

जगद्गुरु रामभद्राचार्यक पारिवारिक नाम गिरधर मिश्र छलनि। हिनकर जन्म जौनपुर जिलाक शांदिखुर्द नामक गाममे १४जनबरी सन् १९५०क भेल रहनि । हिनकर पिताक नाम पंडित राजदेव मिश्र आ माताक नाम सच्ची देवी छलनि। ओ जखन एगारह वर्षक रहथि तखन परिवारक लोकसभ हुनका एकटा बरिआतीमे आन्हर हेबाक कारण नहि लए गेल रहनि। लोकक धारणा छल जे आन्हर अशुभ होइत अछि। ओ एहि घटनासँ बहुत आहत भेल रहथि। बादमे ओ कहलथि जे अखनहु हम आन्हरे छी,मुदा

लोकसभ शुभ कार्यमे हमर उपस्थितिक हेतु लालायित रहैत छथि। श्रीरामभद्राचार्यजी अद्भुत प्रतिभाशाली छथि। ओ जे किछु सुनैत छथि से एक्के बेरमे कंठस्थ कए लैत छथि। ओ बाइस भाषाक ज्ञाता छथि। हुनका कतेको विषयमे आचार्यक उपाधि भेटल छनि। ओ पीएचडी आ डिलिट उपाधि सेहो प्राप्त केने छथि। मानव कल्याण आ विकलांगक सेवा हुनकर प्रमुख लक्ष्य छनि।

चित्रकूट पहुँचितहि सभसँ पहिने हमसभ एकटा नीक होटलक जोगारमे लगलहुँ । कामदागिरिसँ सटले एकटा होटल लग हमसभ पहुँचलहुँ। हमसभ दूटा पुरुष ,चारिटा महिला आ दूटा बच्चा संगे छलहुँ । कमसँ कम तीनटा कोठरी तँ चाहबे करी। ओ दुनू बेकती आगू बढ़लाह आ मनेजरसँ गप्प कए रहल छलाह । गप्प कनी तिराइत बुझाएल। हमहूँ ओहिठाम पहुँचलहुँ । कारण चिंता भेल जे पता नहि केना की भए रहल अछि। होटल मनेजर कहलकैक –

“एक हजार रुपया प्रति कोठरी लागत। काल्हि दस बजे खाली करए पड़त।”

“डिसकाउन्ट कतेक?”

ओ हँसए लागल। फेर बजैत अछि-

“एतनी तँ किराया अछि। एहिमे की डिसकाउन्ट भेटत। खाली करबाक समय कनी आगू कए सकैत छी।”

“हमरासभकेँ काल्हि साँझमे वापस जेबाक अछि।”

“कोनो बात नहि। कनी देरीएसँ खाली कए देब, एतबा समावेश हम कए देब।”

“कखन धरि खाली करबाक होएत?”

“बेसी सँ बेसी एक बजे धरि।”

“ठीक छैक।”

हमसभ कोठरी देखए लगलहुँ । तीनू कोठरी एक्के तलपर भेटि जाए । ताहि हेतु हमसभ ऊपर,नीचाँ करैत रहलहुँ। आखिर भूतलेपर तीनू कोठरी भेटि गेल। हमसभ आवश्यक कागज-पत्र जमा कए अपन-अपन

कोठरीमे चलि गेलहुँ । थोड़ेकालक बाद हमसभ ओतहि भोजन केलहुँ,कनीकाल विश्राम केलहुँ । तखन चित्रकूट भ्रमण हेतु बिदा भेलहुँ ।

सभसँ पहिने हमसभ मन्दाकिनी नदीक रामघाटपर पहुँचलहुँ । ओहिठाम एकटा नाओ ठीक केलहुँ जे हमरासभकेँ मन्दाकिनी नदीमे घुमओलक। अखन आरती शुरू हेबामे समय रहैक तेँ नाओसँ नदीक ओहिपार पहुँचि हमसभ लगपासक कैकटा मंदिरसभमे दर्शन केलहुँ । तुलसीदास जतए पूजापाठ करैत छलाह आ भगवान रामकेँ चानन लगओने छलाह ततहु गेलहुँ । चारूकात बानरसभ घुमि रहल छल। ओकरासभसँ बचबाक हेतु एकटा स्थानीय लोकक मदति लेलहुँ । भगवान राम एहीस्थानपर तुलसीदासकेँ दर्शन देने रहथि।

साँझमे एतए मन्दाकिनीक आरती देखलहुँ । आरतीमे अनेक तरहसँ प्रज्वलित दीपसभकेँ विशेष रूपसँ सुसज्जित पुजारी लोकनि बहुत आकर्षक दृश्य उत्पन्न करैत रहथि। हमर इच्छा रहए जे नाओपर बैसिए कए आरती देखी। मुदा घटबार नाविक तैयार नहि भेल। आखिर हमसभ सामनेमे बैसि कए आरतीक आनन्द लेलहुँ । मुदा किछूगोटे नाओमे बैसिए कए आरती देखि रहल छलाह। ई बात हम ओकरा कहबो केलिऐक। मुदा ओ तरह-तरहक कबाइत करैत रहल। आरती समाप्तिक बाद नाओपर बैसि हमसभ नदीक ओहि कात गेलहुँ । तकर बाद वापस अपन डेरा बिदा भेलहुँ। डेरा वापस हेबा क्रममे एकटा नीक भोजनालय देखाएल । हमरासभकेँ बहुत भूख लागि गेल छल। अस्तु, सभ काज छोड़ि कए ओहिठाम भोजन केलहुँ। संयोगसँ हमर झोरा ओतहि छुटि गेल छल। ओहीमे सभटा महत्वपूर्ण वस्तुसभ राखल छल। हम तुरंत वापस ओहि भोजनालय पहुँचलहुँ । झोरा सुरक्षित राखल छल। ओहिमे सभकिछु(टाका, डेबिट कार्ड आ आधार कार्ड) बाँचि गेल छल। हम झोरा सुरक्षित भेटि गेलासँ बहुत प्रसन्न भेलहुँ आ सभगोटे अपन डेरा दिस कारसँ बिदा भेलहुँ ।

प्रात भेने हमसभ रामघाट बिदा भेलहुँ । किछुगोटे ओतहि स्नान करितथि आ तकर बाद मंदिरसभमे दर्शन करैत आगू बढ़ितथि। मुदा हम दुनू बेकती मंदाकिनीमे स्नान करबाक हेतु इच्छुक नहि रही। कारण काल्हि ओकर पानिक हालति देखि लेने रही । ओहि पानिमे नहएबासँ नीक जे एक

पथिआ थाल-कादो अपना माथपर ढारि ली। चारूकात दुर्गंध से करैत रहए। तेँ हमसभ काल्हिए सोचि लेने रही जे डेरासँ स्नान कइए कए बिदा होएब आ सएह केबो केलहुँ । हमरासभक संगे जे नवयुवक दंपति रहथि से अपन दुनू बच्चाक संगे आ दूटा बृद्ध महिलाक संगे आगू बढ़लाह। वाहनचालक कहलक-

“अहाँसभ चाही तँ कामदागिरिक दर्शन केनहि चलि सकैत छी। ओ एकदम सटले अछि।”

“नहि, नहि। पहिने मंदाकिनीमे स्नान करब तकर बादे किछु आओर।”

ओना हमर इच्छा रहए जे कतहु जलखै कए ली। भोरुका चाहो नहि पीने रही। मुदा अधिकांश लोकक इच्छा देखैत चुप रहि गेलहुँ।

आखिर सभगोटे रामघाट बिदा भेलहुँ । हम दुनू बेकती मंत्रस्नान केलहुँ ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

-तीन बेर पढ़ि मंदाकिनीक पानि आंजुरमे लए अपनाकेँ शुद्ध केलहुँ। मुदा ओ सभ तँ बहुत नीकसँ स्नान केलथि। आरो बहुत लोकसभ ओतए नहाइत देखाएल । असलमे आस्था आनसभ वस्तुपर भारी पड़ि जाइत अछि। अन्यथा ओहन घोरल-घारल ,दुर्गंधयुक्त पानिक लगोमे नहि जाइत केओ। स्नानक बाद लगीचेक मंदिरमे दर्शन कए हमसभ अनसूया आश्रम बिदा भेलहुँ।

जंगलक बीचमे कलकल बहैत मंदाकिनी नदीक जलधाराक सौंदर्य देखैत बनैत अछि। एहिठामक पानि बहुत स्वच्छ अछि। पानिमे नीचाँ धरि स्पष्ट देखाइत रहैत अछि। पानिमे चलैत-फिरैत बहुत रास माछसभ देखाइत रहैत अछि। लोकसभ माछकेँ खेबाक हेतु अन्न फेकैत रहैत छथि। एहिठाम अनसूया-अत्री मुनिक आश्रम छल। अनसूया एतहि सीताजीकेँ बहुत रास गहनासभ देने रहथिन । संगे उपदेश सेहो देने रहथिन। वर्तमानमे एहिठाम श्री परमहंस आश्रम,अनसुइआ,चित्रकूट बनल अछि। ओहिमे अनेक

संतलोकनिक समाधिस्थल अछि। यात्रीलोकनि ओहि समाधिसभक दर्शन करैत छथि आ श्रद्धानुकूल दान सेहो दैत छथि।

अनसूया आश्रमक बाद हमसभ गुप्त गोदावरी बिदा भेलहुँ । चित्रकूटसँ लगभग अठारह किलोमीटर फटकी अछि गुप्तगोदावरी। कहल जाइत अछि जे भगवान राम वनबासक समयमे ऐहिठाम किछुदिन रुकल रहथि। हुनके दर्शनक हेतु गोदावरी गुप्त रुपसँ एतए प्रकट भेल रहथि। गुप्त गोदावरीमे दूटा गुफा अछि। एकटा पैघ आ दोसर छोट। पैघु गुफामे पानि नहि अछि। एकर अंतमे छोटसन पोखरि अछि। छोट गुफामे पानि देखाइत अछि। आगू बढ़लाक बाद ओहिमे ठेहुन भरि पानि भेटैत अछि। गुफाक निर्माण प्रकृतिक दुर्लभतम कृति कहल जाइत अछि।

गुप्तगोदावरीक दर्शनक बाद हमसभ वापस अपन डेरा बिदा भेलहुँ। ओहिठाम पहुँचैत-पहुँचैत सभगोटेकेँ बहुत भूख लागि गेल छल। ओतहि होटलमे भोजन केलहुँ । आब दू बाजए बला छल। हमसभ वापसी यात्राक तैयारीमे लागि गेलहुँ । अपन-अपन सामानसभ सरिएलहुँ । स्वागतीकेँ कोठरीके कुंजी देबाक हेतु स्वागतकक्ष लग पहुँचलहुँ । हम अपन कोठरीक कुंजी सुंझा देलिऐक। दोसर कोठरीक कुंजी सेहो वापस देल गेल। मुदा तेसर कोठरीक कुंजी नहि भेटि रहल छल। कोठरीक कुंजी हरा जेबाक कारण ओहिठाम माहौलमे थोड़ेकालक हेतु तनाओ पसरि गेल ।

“हम तँ कुंजी अहींक हाथमे देने रही।”

“हमरा लग रहितए तँ रहबे करितए। अहाँ जरूर कुँजी बच्चाकेँ सुंझा देलिऐक ।”

“हम तँ अपन कोठरीमे रही।”

एहि तरहेँ आरोप-प्रत्यारोप होइत रहल। कुंजी सौंसे ताकल गेल। सामानसभ उकटल गेल। मुदा कुंजी नहि भेटल। एहि प्रक्रियामे आधाघंटासँ बेसी समय लागि गेल। असलमे ओ कुंजी बच्चासभक हाथमे पड़ि गेल रहए। ओएहसभ कतहु एमहर-ओमहर कए देलक। आब तँ बेस मोसकिल भए गेल। स्वागत कक्षमे मौजूद स्वागती दू सए टाका हरजाना लेलक तखने अपन कुंजीसँ ओहि कोठरीकेँ खोललक। ओहिमे राखल सामानसभ

निकालल गेल। होटलक हिसाब-किताब केलाक बाद हमसभ वापस प्रयागराज बिदा भेलहुँ ।

हमसभ गोटे प्रयागराज जेबाक हेतु कारपर बैसि गेल रही। कार कनी दूर चलबो कएल कि वाहन चालक बाजल-

“इएह थिक कामदागिरि । अहाँसभ चाही तँ एहिठाम उतरि कए दर्शन कए सकैत छी।”

“कतेक दूर हेतैक?”

“इएह सामनेमे देखा रहल अछि।”

मुदा ओहिठाम कार नहि जा सकत। एतहि उतरि कए पैरे जेबाक होएत।”

चित्रकुटक एकटा प्रमुख स्थान अछि कामतानाथ । कहल जाइत अछि जे भगवान राम कामतानाथ पहाड़पर साढ़े एगारह साल रहल रहथि। ओ एहि पहाड़क परिक्रमा सेहो करथि । एहिठामसँ जाइत काल भगवान राम वरदान देने गेलाह –“ जे केओ एहि पहाड़क परिक्रमा करत तकर सभटा मनोकामना कामतानाथ पूरा करथिन।” ई परिक्रमा लगभग पाँच किलोमीटरक होइत अछि आ श्रद्धालुलोकनि बहुत भक्तिभावसँ एकर परिक्रमा करैत छथि। परिक्रमाक क्रममे कैकटा छोट-छोट मंदिरसभ पड़ैत अछि। तीर्थयात्रीलोकनि सभ मौसममे एतए परिक्रमा करैत देखल जाइत छथि ।

हमसभ आपसमे विमर्श केलहुँ । असलमे हमरा रातिमे प्रयागराजमे दिल्लीक हेतु ट्रेन पकड़बाक छल। तकर ध्यानमे राखि आब बेसी काल समय नहि बाँचल छल। हमसभ ओतहिसँ कामदागिरिकेँ प्रणाम कए आगू बढ़ि गेलहुँ ।

चित्रकूटमे भरतकूपक बहुत महत्व अछि। कहल जाइत अछि जे जखन भगवान राम वनबासमे चित्रकूट आबि गेल रहथि तखन भरत ओहिठाम सपरिवार आबि भगवान रामसँ वापस अयोध्या चलबाक आग्रह केलथि। ओ अपना संगे अनेक नदीसभक जल अनने रहथि जाहिसँ भगवान रामक राज्याभिषेक होइत। परंतु ओ ताहि हेतु जखन सहमति नहि भेलाह तखन भरत हुनके परामर्शसँ भरत अत्री ॠषिसँ भेंट केलनि । हुनके

आज्ञानुसार ओ सभटा जलकेँ ओहिठाम स्थित इनारमे खसा देलनि। ओएह इनार आब भरतकूपक नामसँ जानल जाइत अछि। भरतकूपक जल बहुत पवित्र मानल जाइत अछि। एकर जल बहुत शीतल होइत अछि। गर्मीक समयमे लोकसभ एहि पानिसँ स्नान कए बहुत आनन्दित होइत छथि। एकर अतिरिक्त स्फटिक शिला,सीताक रसोई सन-सन अनेक स्थान अछि जे एहिठाम देखल जा सकैत अछि। स्वर्गीय नानाजी देशमुखजी द्वारा स्थापित महात्मागांधी चित्रकूट ग्रामीण विश्वविद्यालय सेहो दर्शनीय स्थान अछि। सरबतमे जतेक चिन्नी देबैक ततेक मिठ्ठ होएत। घुमबाक हेतु समय,टाका आ स्वास्थ्य सभकिछु चाही। तथापि उपलब्ध समयमे जतेक हमसभ घुमि सकलहुँ से घुमलहुँ,जतेक देखि सकलहुँ से देखलहुँ , आनन्दित तँ भेबे केलहुँ । असलमे चित्रकूटक कण-कण राममय अछि । हुनकासन महापुरुष जतए साढ़े एगारह वर्ष रहल होथि ताहिठामक महात्म्यक वर्णन की कएल जा सकैत अछि? ओ तँ साक्षाते स्वर्ग थिक , भक्तलोकनिक हेतु प्रातःस्मरणीय थिक।

चित्रकूटक रामघाटसँ तीन किलोमीटर फटकी हनुमानधारा अछि। हमसभ वापसी यात्रामे सड़केपर सँ पहाड़ीपर अवस्थित ओहिस्थानकेँ देखलहुँ । ओतहिसँ हनुमानजीकेँ प्रणाम करबाक करैत आगू बढ़ि गेलहुँ । रस्तामे वाहनचालककेँ अगुतबैत रहलिऐक जाहिसँ ट्रेनक समय धरि हमसभ प्रयागराज पहुँचि जाइ। अंततोगत्वा, से संभव भए सकल।

प्रयागराजमे हमसभ अपन मित्र श्री संजीव सिन्हाजीक ओहिठाम पहुँचलहुँ । ओहिठाम भोजन केलहुँ । कनीकाल विश्रमाक बाद हुनके संगे प्रयागराज टीसन बिदा भेलहुँ । संजीव सिन्हाजीक पुत्र कार चला रहल छलाह। दस मिनटक भीतरे हमसभ टीसनपर पहुँचि गेल रही। हुनकासभकेँ प्रयागराजक रस्ताक सही जनतब रहनि जाहिसँ से संभव भेल। प्रयागराज एक्सप्रेस लागल छल। हमसभ तुरंत ओहिमे अपन निर्धारित शायिकापर पहुँचि आश्वस्त भेलहुँ । सिन्हाजी आ हुनकर पुत्र थोड़ेकाल हमरा सभ लग बैसल रहलाह । आब ट्रेन खुजि जाएत। से जानि ओसभ ट्रेनसँ उतरि गेलाह। एहि बेरक हमरसभक प्रयागराज प्रवासक दौरान आदरणीय श्री संजीव सिन्हाजीक स्वयं आ हुनकर समस्त परिवारक आतिथ्य,हुनकरसभक प्रेम

बिसरल नहि जा सकैत अछि। हमसभ प्रयागराजमे हुनकालोकनिक आतिथ्यसँ अभिभूत रही। आइओ काल एहन लोकसभ होइत अछि,से सोचि हमसभ बहुत आनन्दमे रही । निश्चितरूपसँ एहन लोकसभ पृथ्वीपर ईश्वरक वरदान थिकाह ।

ट्रेन खुजि गेल छल,प्रयागराज टीसन आब पाछू छुटि गेल छल। हमसभ निश्चिन्त भए सुति रहलहुँ । भोरे उठलहुँ तँ देखैत छी जे नईदिल्ली टीसनपर ट्रेन अड़कि चुकल अछि।

30/12/2023

वृंदावनक कुंज गलीमे!

लगभग पन्द्रह साल पहिने हमसभ मथुरा-वृन्दावन गेल रही। तकर बाद कतेक समय बीति गेल। हम सेवानिवृत्त भए गेलहुँ । ग्रेटर नोएडामे अपन मकानमे बसि गेलहुँ । मुदा वृन्दावन जेबाक कार्यक्रम नहि बनल जखन कि ग्रेटर नोएडासँ वृंदावन मात्र १२६ किलोमीटर दूर अछि। एहि बीचमे कोरोना काल जेहन बीतल से कहबाक काज नहि। आखिर एमहर आबि कए घुमबाक कार्यक्रम बनल। सात सितम्बरक कृष्णाष्टमी छल। तेँ छओसँ आठ सितम्बर धरि छोड़ि नओ सितम्बर २०२३क आरक्षित टैक्सीसँ हमसभ भोरे सात बजे मथुरा-वृन्दावनक हेतु बिदा भेलहुँ । हमसभ तीनगोटे संगे रही-हम,हमर श्रीमतीजी आ हमर सारि पूनम । पूनम किछुदिन पूर्व हरिद्वारक जेबाक क्रममे आएल छथि। तेँ खास कए ई कार्यक्रम बनल। बहुत प्रयाससँ परिचितक माध्यमसँ एकटा टैक्सीक जोगार कएल गेल जे छओ हजारमे हमरासभकेँ पूरा यात्रा करओताह,मथुरा,वृन्दावन घुमेबो करताह आ वापस ग्रेटर नोएडा लेने अएताह । रातिमे हमसभ वृन्दावनेमे रहब। ताहि हेतु हम प्रभुपाद आश्रममे आनलाइन आरक्षण करओने रही। प्रभुपाद आश्रम इसकान वृन्दावनसँ जुड़ल अतिथिगृह अछि। ओना इसकान वृन्दावनसँ जुड़ल कैकटा अतिथिगृहसभ अछि। मुदा हमरा एहीमे आरक्षण भेटल, दोसर अतिथिगृहसभ भरि चुकल छल ।

अपना भरि बहुत ओरिआन कए हमसभ वृन्दावन-मथुराक यात्रापर बिदा भेल रही। बहुत उत्साहितो रही। मौसमसे बहुत नीक छल। आकाशमे मेघ घुमि रहल छल। हबा सुखद छल। हमसभ जखन सात बजे भोरे टैक्सीमे बैसलहुँ आ टैक्सी पूर्णगतिसँ हाइवेपर आगू बढ़ल तँ आनन्दक वर्णन नहि कएल जा सकैत अछि। सड़कपर बहुत कम वाहन चलि रहल छलैक । वाहन चालक उत्साहमे बहुत जोरसँ स्थानीय भजन बजा तेज गतिसँ गाड़ी चलबए लागल । थोड़े काल तँ हमसभ बरदास केलहुँ ,मुदा बरदासोक सीमा होइत छैक। आखिर हमर श्रीमतीजी ओकरा टोकलखिन-

“अबाज कनी कम करू ।”

तथापि वाहन चालकपर कोनो खास असरि नहि पड़ल । बहुत कालक बाद ओ एहि बातपर ध्यान देलक। अबाज कनी कम भेल । हमसभ बहुत विश्रान्तिक अनुभव केलहुँ ।

रस्तामे डेढ़घंटा चललाक बाद एकटा ढाबापर टैक्सी रुकल। हमसभ चाह-पान केलहुँ । कनी काल सुस्तेलहुँ आ फेर बिदा भेलहुँ । तकर आधाघंटाक बाद हमसभ वृंदावनक सीमामे पहुँचि रहल छलहुँ । ओना हमर योजना छल जे आइ मथुराक जन्मभूमि आ ओहिठामक अन्यप्रमुख मंदिरसभक दर्शन केलाक बाद वृंदावनमे अपन होटलमे विश्राम करब आ साँझमे मौका भेटत तँ वृंदावनमे सेहो प्रमुख मंदिरसभमे दर्शन करब। मुदा वाहन चालक अपन मनमरजीक लोक छल। ओ टैक्सीकेँ प्रेममंदिर लगक टैक्सी स्टैंडमे ठाढ़ कए देलक आ इसारासँ कहलक-

“सामनेमे प्रेम मंदिर अछि। अहाँसभ एतहि उतरि जाउ, कारण ओतए टैक्सी नहि जा सकत।”

हमसभ की करितहुँ? टैक्सीसँ उतरि एकटा आटो केलहुँ जे हमरासभकेँ प्रेममंदिरक लगीच धरि लए जाइत। मुदा ओ तँ जिलेबी जकाँ घुमि रहल छल। आखिर हम ओकरा टोकलिऐक-

“कतए जा रहल छह? प्रेम मंदिर तँ सामने देखा रहल छल।”

“ओतहि जा रहल छी। ओकर दोसर द्वारिसँ मंदिर जाएब बेसी आसान थिक।”

थोड़ेकाल घुमा कए ओ प्रेममंदिरक दोसर द्वारिसँ बहुत फटकीए आटो ठाढ़ कए देलक। आब आर आगू नहि जा सकत। हमसभ आटोसँ उतरि गेलहुँ । ओकरा डेढ़ सए रुपया देलिऐक। तकर बाद बहुत काल पैरे चलए पड़ल। आटो केलाक कोनो फएदा नहि बुझाएल।

थोड़ेकाल पैरे चललाक बाद हमसभ प्रेममंदिर पहुँचि गेल रही। प्रेममंदिरक निर्माण कृपालुजी महराज करओने छलाह। एगारहसाल धरि एकहजार मजदूर एकर निर्माणमे लागल रहल । एकर निर्माणमे अनुमानतः एकसए पचास करोड़ रुपया खर्च भेल छल। ई मंदिर परिसर चौवन एकड़मे पसरल अछि। मंदिरक आधारशिला कृपालुजी महराज द्वारा १४ जनबरी २००१क राखल गेल छल। एकर निर्माण कृपालुजी द्वारा बनाओल गेल

जगद्गुरु कृपालु पृषत (जेकेपी) द्वारा कएल गेल छल। मंदिरक उद्घाटन समारोह कृपालुजी महराजक उपस्थितिमे १५सँ सत्तरह फरबरी २०१२क संपन्न भेल छल। एहि मंदिरक प्रथम तलपर राधागोबिंद आ दोसर तलपर श्रीसीताराम विराजित छथि। मंदिरक बाहरी देबालपर राधाकृष्णक लीलाकेँ शिल्पांकित कएल गेल अछि। मंदिरक भीतरी देबालपर राधाकृष्ण आ कृपालुजी महराजक झाँकी बनाओल गेल अछि। संपूर्ण मंदिर परिसर भक्तिमय लगैत रहैत अछि। मंदिर परिसरमे राधाकृष्णक गोवर्धन पर्वतक सजीव झाँकी बनाओल गेल अछि। मंदिर साढ़पाँच बजे भोरे खुजि जाइत अछि आ बारह बजे धरि खुजल रहैत अछि। तकर बाद पाँचबजे साँझसँ साढ़े आठ बजे राति धरि खुजल रहैत अछि। एहि बीच हजारों भक्तलोकनि एतए दर्शनक हेतु अबैत जाइत रहैत छथि।

प्रेममंदिरक ऊँचाइ एकसए पचीस फीट ऊँच,लम्बाइ एकसए नब्बे फीट आ चौड़ाइ एकसए अठ्ठाइस फीट अछि। करीब एकघंटा भरि हमसभ मंदिर परिसरमे रहलहुँ। ओहिठामक प्रमुख दर्शनीय निर्माणसभ देखलहुँ । मंदिरे परिसरमे घुमि हमसभ बहुत संतुष्ट छलहुँ । तकर बाद हमसभ बाहर निकललहुँ । टैक्सी बलाकेँ फोन केलिऐक । ओ कहलक-

“अहाँसभ बाँके बिहारी मंदिर चलू। हम ओतहि पहुँचि रहल छी। प्रेम मंदिरक रस्ता बंद छैक।”

“जखन हमरासभकेँ पैरे सभठाम जेबाक होएत तखन तोरा रखबाक फएदा की अछि?”

“हम की करू? सरकारी आदेश छैक। किछु नहि कएल जा सकैत अछि।”

“किछु तँ प्रयास करहक। हमसभ तोरा अनने छी जे मदति करबह। मुदा तूँ तँ सोझे हाथ ठाढ़ कए देलह।”

आइ शनिदिन छलैक। पता लागल जे आइ आ काल्हि वृंदावनमे स्थानीय प्रशासनक आदेशसँ टैक्सीकेँ भीतर नहि जाए देल जाइत छैक। भीतर किछु हद धरि आटो जाएत,तकर बाद पैरेटा जा सकैत छी। इएह बात

टैक्सी बला सेहो कहैत छल। मुदा ओकर बातपर हमरा विश्वास नहि होअए। भेल जे ओ बहन्ना बना रहल अछि।

आखिर ओ हमरासभकेँ पगलाबाबा मंदिर जेबाक हेतु कहलक । ओहो ओहिठाम आबि रहल अछि। ओतहि भेटि जाएत। हमसभ पगलाबाबा मंदिर दिस बिदा भेलहुँ । बड़ीकाल पैरे चललाक बाद एकटा आटो भेटल। ओ हमरासभकेँ पगला बाबा मंदिरक सामने पहुँचा देलक। थोड़ेकलामे हमर टैक्सी बला सेहो ओतहि पहुँचि गेल रहए। ओकरा ओतहि रहबाक हेतु कहलिऐक आ हमसभ पगलाबाबा मंदिरमे दर्शन हेतु प्रवेश केलहुँ।

पगलाबाबाक बहुत रुचिकर खिस्सा अछि। कहल जाइत अछि जे ओ जज छलाह। हुनकर न्यायालयमे एकबेर एकटा महाजन कोनो गरीब ब्राह्मणक विरुद्ध मोकदमा केलकनि जे ओ हुनकर करजा वापस नहि कए रहल छथि। जखन कि ओ महाजनकेँ सभटा करजा वापस कए चुकल रहथि तथापि ओ हुनका तंग कए रहल छनि आ करजा बाँकी कहि रहल छनि। असलमे भेल ई रहैक जे ओ गरीब ब्राह्मण महाजनक करजा किस्त-किस्त वापस करैत रहैत छलाह। जखन अंतिम किस्त जमा करए गेलाह तखन ओ महाजन अदालती नोटिस पठा देलक जे अखन धरि ओ करजा वापस नहि केलक अछि आ ओकरापर कानूनी कारबाइ होएत। ओ गरीब ब्राह्मण न्यायालयमे जज साहेब लग गोहार लगओलक जे ओ तँ सभटा करजा वापस कए चुकल अछि। जज साहेब पुछलखिन-

“अहाँ कोनो गबाह आनि सकै छी जे अहाँक बातकेँ समर्थन कए सकथि।”

“किएक नहि। हमर गबाहीश्री बांके बिहारीजी देताह।”

“हुनकर पता की छनि? ”-जज साहेब पुछलखिन।

“बांके बिहारी वल्द वासुदेव, बांके बिहारी मंदिर वृंदावन।”

जज साहेब श्रीबांके बिहारीजीक नामसँ नोटिस निकालि देलखिन। ओ गरीब ब्राह्मण ओहि नोटिसकेँ श्रीबांके बिहारीजीक मूर्ति लग राखि देलक आ बाजल-

“बांके बिहारी! अहाँकेँ गबाही देबाक हेतु कचहरीमे अएबाक अछि।”

निश्चित तिथिपर एकटा बूढ़ आबि कए न्यायालयमे गबाही देलक आ ओहि ब्राह्मणक कथनक समर्थन केलक। जज साहेब महाजनक खाताक जाँच केलनि तँ ओहिमे सभटा विवरण देखलनि ,बस नामटा बदलि देल गेल छल। जज साहेब एहि बातसँ संतुष्ट भए महाजनक मोकदमाकेँ खारिज कए देलनि। तकर बाद जज साहेब ओहि ब्राह्मणसँ श्रीबांके बिहारीजीक पता पुछलखिन।

“ओ तँ यत्र-तत्र-सर्वत्र छथि।”

कहल जाइत अछि जे तकर बाद जज साहेब नौकरी छोड़ि कए श्रीबांके बिहारीजीकेँ ताकए लगलाह। अंतमे ओ वृंदावन आबि गेलाह आ ओतहि हुनकर मृत्यु भेलनि। तहिएसँ लोक हुनका पगला बाबक नामसँ जानि रहल छनि। हुनकर समाधिस्थल ओही मंदिर परिसरमे अछि। ओ मंदिर दसमंजिला अछि आ ओहिमे राधाकृष्णक भव्य मूर्ति स्थापित कएल गेल अछि। तकरे नीचाँमे पगला बाबाक मूर्ति सेहो अछि।

पगला बाबाक मंदिरमे दर्शन कए बहुत प्रेरणा भेटल। मोनमे बहुत शांति भेल। तकर बाद हमसभ मंदिरक द्वारिसँ बाहर भए अपन-अपन जूता-चप्पल तकलहुँ आ वाहन चालककेँ फोन लगओलहुँ । ओ कनीके फटकी टाढ़ छल। मौसम से खराप छलैक। मेघ लागल छलैक आ बीच-बीचमे पानि टिपिर-टिपिर खसैत छलैक। रस्तासभकेँ घेर-बेर सेहो छलैहे। हम वाहन चालककेँ होटल चलबाक हेतु कहलिऐक। मुदा ओ श्रीबांके बिहारीजीक मंदिर लग जेबाक प्रयासमे लागि गेल। ताहि हेतु कहि नहि कोन-कोन रस्तासँ हमरा लोकनिकेँ घुमबैत रहल। लगभग आधाघंटा टैक्सीमे घुमैत रहलाक बाद हमसभ श्रीबांके बिहारीजी मंदिर लग पहुँचलहुँ। पानि सेहो भए रहल छलैक । पौने बारह बाजि रहल छलैक। हम वाहन चालककेँ पुछलिऐक-

“मंदिर आब खुजल होएत कि नहि?”

“ई मंदिर सदिखन खुजले रहैत अछि।”

ओकर बातपर विश्वास कए हमसभ पैरे बिदा भेलहुँ । नालासभक गटरक दुर्गंधयुक्त पानि सौंसे रस्तापर बहि रहल छल। भिजैत-तितैत हमसभ ठेहुन भरि पानिमे आगू बढ़ैत गेलहुँ । कहि नहि कतेकटा ओ गली छल? पानि हेबाक कारण कोनो गति बाँचल नहि छल। हमसभ बहुत नीकसँ भिजि चुकल रही। एहनो हालतिमे एहि उम्मीदमे आगू बढ़ैत गेल रही जे भगवानक दर्शन भए जाएत। मुदा जखन मंदिरक आगू पहुँचलहुँ तँ पता लागल जे ओ बंद भए गेल अछि। एहि बातसँ हमरासभकेँ बहुत निराशा भेल। अपना भरि पंडासभकेँ बहुत गोहरओलिऐक। मुदा ओहोसभ असमर्थ छल। हमरा सन-सन सैकड़ों लोक ओहिना वापस जा रहल छलाह। हारि कए हमहूँसभ भिजैत-तितैत वापस भए गेलहुँ । वाहन चालककेँ बहुत फज्झति केलहुँ जे ओ गलत सूचना देलक जाहि कारणसँ हमसभ एतेक दिक्कतिमे पड़ि गेलहुँ । ओ की बजैत? सहनशील मुदा मूर्ख सन आदमी छल ओ। आब हमसभ करबे की करितहुँ? ओहने हालतिमे होटल हेतु बिदा भेलहुँ ।

वृंदावनमे ठहरबाक हेतु हम इसकानक प्रभुपाद आश्रममे दूटा कोठरी आरक्षित करबओने रही। इसकानक आन अतिथिगृहसभ भरि गेल रहैक। वृंदावनमे बेसीगोटेकेँ एहि अतिथिगृहक बारेमे जनतब नहि रहैक। मुदा हमसभ जेना-तेना ओहिठाम पहुँचि गेलहुँ । सभगोटे नीकसँ भिजि गेल रही। जल्दी सँ जल्दी कोठरीमे जाए चाही जाहिसँ अपन-अपन वस्त्र बदलि सकी आ कनी आश्वस्त होइ। ओहि अतिथिगृहक नाम बहुत आकर्षक छल,मुदा व्यवस्था ततबे झूस । स्वागतीकेँ अपन परिचय देलिऐक,कागज देखेलिएक । ओ एकटा आदमीकेँ संग कए देलाह। हमरासभकेँ खाली कोठरीसभ देखबए लगलाह।

“भूतलपर कोनो कोठली खाली नहि अछि। प्रथम तलपर एकटा कोठरी खाली अछि। दोसर तलपर सेहो एकटा कोठरी खाली अछि।”

“मुदा हमसभ तँ एकहिठाम दुनू कोठरी चाहब।”

“तखन तेसर तलपर चलू। ओहिठाम दूटा कोठरी अगल-बगल खाली अछि।”

हमसभ तेसरतलपर पहुँचलहुँ । ओहिमे दूटा कोठरी एकठाम भेटि गेल। मुदा कोठरीसभमे फोन नहि छल। स्वागतीसभ संपर्क करबाक हेतु स्वयं नीचाँ जाएब अनिवार्य। ओहि अतिथि गृहमे लिफ्ट नहि छल। पैरे तेसर तलसँ नीचाँ अएनाइ-गेनाइ होइत छल। चाहोक जोगार नहि छल। सभकिछु बाहरसँ मंगाउ अथवा बाहरे जा कए जलखै-चाह करू। हमसभ आब कइए की सकैत छलहुँ? अपन-अपन वस्त्र बदललहुँ। कनी काल सुस्तेलहुँ आ इसकान मंदिर हेतु बिदा भए गेलहुँ । ओहिठाम हमसभ भोजनो केलहुँ । इसकान मंदिरमे बहुत नीकसँ दर्शन भेल। देशी-विदेशी भक्त लोकनि भाव विभोर भए हरे कृष्ण! हरे कृष्ण!क कीर्तन करैत छलाह। ओहिठाम भोजन केलाक बाद हमसभ अपन-अपन चप्पल-जूता ताकए लगलहुँ । असलमे मंदिरमे प्रवेश करैत काल जूता रखबाक एकटा स्थान देखाएल छल। ओतहि हमसभ अपन-अपन चप्पल-जूता राखि देलिऐक । मुदा वापसीमे ओ स्थान भेटबे नहि करए। मंदिर परिसरमे कैकटा एहन-एहन स्थान छल। ओहिसभठाम जा कए पुछबो करिऐक। मुदा अपनो लागए जे हमरसभक चप्पल-जूता कतहु आर राखल अछि। मंदिर परिसरक अनेक बेर चक्कर लगेलाक बाद अंततोगत्वा, ओ स्थान भेटिए गेल जतए हमसभ अपन चप्पल-जूतासभ रखने रही। तकर बाद मोन बहुत हल्लुक लागल छल।

इसकान मंदिरसँ निकलि हमसभ बाँकेबिहारी मंदिर दिस बिदा भेलहुँ । श्री हरिदास स्वामी उदास वैष्णव छलाह । हुनक भजन-कीर्तन सँ प्रसन्न भए श्रीबांके बिहारीजी निधिवनसँ प्रकट भेलाह । स्वामी जी श्रीबांके बिहारीजीक निधिवनमे बहुत दिन धरि सेवा करैत रहलाह । श्रीबाँके बिहारी मंदिरक निर्माण सन् १८६२ मे भेल। तकर बाद हुनका ओतए आनि कए स्थापित कयल गेलनि । श्रीबांके बिहारीजी मंदिरमे शरद पूर्णिमाक दिन वंशीधरन करैत छथि। श्रावण तृतियाक दिन ठाकुर जी झूला पर बैसैत छथि आ जन्माष्टमीक दिन हुनकर मंगला आरती होइत छनि। जिनकर दर्शन सौभाग्यशाली व्यक्तिकेँ होइत अछि आ चरण दर्शन अक्षय तृतीयाक दिन होइत अछि। कहल जाइत अछि जे श्रीबाँके बिहारीजी रास करबाक हेतु रातिमे निधिवन चलि जाइत छथि। तेँ हुनकर प्रातःकाल मंगला आरती नहि कएल जाइत छनि ।

इसकान मंदिर पहुँचबाक हेतु आ ओहिठामसँ आगूक यात्राक हेतु हमसभ आब आटोक उपयोग कए रहल छलहुँ । टैक्सीकेँ अतिथिनिवासेमे छोड़ि देलिऐक । कारण ओकरा भीतरी मार्गपर कतहु लइए नहि जा सकैत छलहुँ । बांकेबिहारी मंदिर परिसर लग हमसभ आटोसँ उतरि पैरे बिदा भेलहुँ । कनीकाल चललाक बाद एकटा विचित्र घटना भेल। हमर सारिक कान्हपर ऊपरसँ एकटा बानर कुदि गेलनि। ओ विद्युत गतिसँ हुनकर नाकपर सँ चश्मा उठा लेलकनि आ ऊपर कुदि कए लगीचक घरक छतपर चढ़ि गेल। ओ एहि बातसँ बहुत परेसान भए गेलथि । ई घटना ततेक फुरतीसँ घटित भेल जे हम जाबे किछु बुझलिऐक ताबे तँ बानर चश्मा छिनि कए जा चुकल छल । थोड़बे कालमे एक-दूगोटे आएल। ओ कहलक-

"हमसभ चश्मा वापस आनि देब। मुदा ताहि हेतु तीनसए रुपया लागत।"

ओ मानि गेलखिन। ओ सभ बानरकेँ तरह-तरहक भोजन सामग्री फेकए लागल। बानर भोजन करएमे व्यस्त भए गेल आ चश्मा ओतहिसँ खसा देलक। रच्छ भेल जे चश्मा टुटल नहि। तकर बाद सौंसे लोकसभकेँ कहैत सुनिऐक-

"अपन-अपन चश्मा आ झोरा बचा कए राखब। बानर परिकल अछि। लुटि लेत।"

चश्मा भेटि गेलाक बाद हमसभ बहुत विश्रान्तिक अनुभव केलहुँ । ओहिठामसँ जूता-चप्पल रखबाक हेतु स्थान ताकि रहल छलहुँ कि हमर सारि पछुआ गेलथि। कतहु देखेबे नहि करथि। आब तँ हमसभ बहुत परेसान भए गेलहुँ । मोबाइलपर फोन केलिअनि। एकटा निजगुत स्थान बतओलिअनि । कनी कालक बाद ओ ओहिठाम देखेलीह। भेलैक ई जे ओ एकटा भिखमंगाकेँ किछुटाका देबए लगलखिन । ताबतेमे कैकटा भीखमंगा घेरि लेलकनि। सभ टाका मांगए लगलनि। आब हिनका तँ बहुत मोसकिल भए गेलनि। एकदम एसगरि पड़ि गेल रहथि । हमरसभक फोनक बाद ओ कहुना कए जान बचा कए ओहिठामसँ निकलि सकलीह। एहि तरहेँ थोड़बे कालमे हुनका संगे दूटा दुर्घटना भए गेलनि। तेँ ओ बहुत परेसान जकाँ बुझाथि। खैर ! जे हेबाक छलैक से भए गेलैक।

हमसभ बांकेबिहारी मंदिर परिसर पहुँचि गेल रही। एकटा पंडासँ गप्प भेल । ओ पाँचसए रुपया लए हमरासभकेँ शीघ्र दर्शन करेबाक जोगार केलक। मंदिरमे भयाओन भीड़ छलैक। तथापि पंडितजीक सहयोगसँ हम तँ बहुत नीकसँ दर्शन कए सकलहुँ । मुदा ओ सभ बहुत प्रयासक बादो भगवानक दर्शन नीकसँ नहि सकलथि। जेना-तेना हमसभ मंदिरसँ वापस अएलहुँ । सभसँ पहिने अपन-अपन जूता-चप्पल तकलहुँ । पंडितजी कहथि जे लोकसभक नित्य हजारो चप्पल-जूता छुटि जाइत अछि, कारण ओहिठाम प्रवेश करबाक द्वारि आ मंदिरसँ निकलबाक द्वारि फराक-फराक अछि। जाहिठाम लोक सामान्यतः अपन जूता रखैत अछि वापसीमे ओहिबाटे बहराइत नहि अछि आ भुतला जाइत अछि। हड़बड़ीमे ओकरसभक जूता ओतहि रहि जाइत छैक जे मंदिर प्रशासन द्वारा फेकि देल जाइत अछि।

वृंदावनमे बांकेबिहारी मंदिर बहुत प्रमुख मंदिर मानल जाइत अछि। एहिठाम दोसर प्रयासेमे सही,दर्शन केलाक बाद हमसभ बहुत संतुष्ट रही,सभटा परेसानी बिसरि गेल रही।

श्रीबांके बिहारीजीक दर्शनक बाद हमसभ निश्चिन्त भावे अपन बासा दिस बिदा भए गेल रही। थोड़बे कालमे हमसभ प्रभुपाद आश्रम पहुँचि गेल रही । ओतए टैक्सी बला हमरसभक स्वागत केलक ।

राति भरि ओहिठाम विश्रामक बाद दोसर दिन भोरे हमसभ ओहि ठामसँ मथुराक हेतु बिदा भेलहुँ । डेरामे चाहोक ओरिआन नहि छल। तेँ रस्तामे चाहक दोकान तकैत रहलहुँ । मुदा ओतेक भोरे बेसी दोकानसभ बंदे रहए। बहुत मोसकिलसँ एकठाम चाह बनैत देखाएल। ओही बीच वर्षासे शुरू भए गेल छल । तेहनेमे हमसभ टैक्सीएमे बैसल चाह पीलहुँ । तकर बादजे बिदा भेलहुँ तँ कृष्ण जन्मस्थाने लग पहुँचलहुँ । ओहिठाम अपन सामानसभ टैक्सीएमे छोड़ि हमसभ जन्म मंदिर परिसर दिस बिदा भेलहुँ । अखनहु वर्षा भइए रहल छल। हमसभ भिजैत जन्मस्थान मंदिरक मुख्यद्वारिपर पहुँचलहुँ । मुदा हमरासभ लग छोट-छोट झोरा छल,मोबाइल फोन छल । ओकरा वापस टैक्सीमे राखए पड़ल । अन्यथा ओकरा लाकरमे राखि सकैत छलहुँ । एही उपक्रममे हमसभ बहुत नीकसँ भिजि गेलहुँ ।

ओहने हालतिमे हमसभ जन्मस्थान मंदिर परिसरमे प्रवेश केलहुँ । थोड़ेकालक बाद जखन बाहर होमए लगलहुँ तँ हुनका पुछलिअनि-

“जन्मस्थान मंदिर कतए अछि?”

“ओएह जे कनीकटा स्थान छल, जाहि बाटे हमसभ बहरेलहुँ अछि, सएह अछि जन्मस्थान!”

“मोन बहुत दुखी भए गेल। भगवान कृष्णक जन्मस्थानक एहन गति भेल अछि?”

आक्रान्तासभ कृष्ण भगवानक जन्मस्थानपर बनल मंदिरकेँ तोड़ि देलक । बादमे स्वतंत्रताक बाद भेल समझौताक अनुसार कनीकटा स्थान भेटल जाहिठाम दर्शन कए लोकसभ संतोष कए लैत छथि।

कनीके फटकी बिरलाजी द्वारा बनाओल गेल राधाकृष्णक मंदिर अछि। हमसभ ओहिठाम राधाकृष्णक भव्य मूर्तिक दर्शन केलहुँ । तकर बाद बाहर निकललहुँ । वाहन चालक पार्किंगमे टैक्सी लगओने छल। हमरसभक मोबाइल सेहो ओहीमे राखल छल। ओकरा तकैत हम पार्किंगमे गेलहुँ । मुदा ओहिठाम टैक्सी नहि छल। आब तँ बहुत चिंतामे पड़ि गेलहुँ । एकरा केना ताकल जाएत? अछता-पछता कए आगू बढ़ि रहल छलहुँ कि वाहनचालक टैक्सीके एमहर-ओमहर घुमबैत देखाएल। असलमे देरी भए जेबाक कारणसँ ओहो परेसान भए गेल छल आ हमरासभकेँ ताकि रहल छल। हमसभ टैक्सीमे बैसलहुँ आ द्वारिकाधीश मंदिर दिस बिदा भेलहुँ । मंदिरसँ कनीके फटकी पुलिस रस्ता बंद केने छल। “आगू टैक्सी नहि जा सकत ।”- वाहन चालक बाजल। हम नीचाँ उतरि पुलिसबलाकेँ आग्रह केलिऐक,अपन परिचय देलिऐक। ओ मानि गेल । हमसभ टैक्सी लेने भीतर चलि गेलहुँ । मंदिरसँ कनीके फटकी एकटा पंडाजी भेटलाह् । हुनकासँ बात ठीक भए गेल। टैक्सीक पार्किंगोक जोगार ओएह कए देलखिन । तकर बाद हमरासभके संगे बिदा भेलाह। रस्तामे फूल-प्रसाद आर किछु-किछु हमरासभकेँ कीनबा देलाह । हुनके सहयोगसँ हमसभ द्वारिकाधीश मंदिरमे बहुत जल्दीए नीकसँ दर्शन कए लेलहुँ। तकर बाद हमसभ पंडितजीक संगे विश्राम घाट पहुँचलहुँ । कहल जाइत अछि जे भगवान कृष्ण कंसकेँ मारलाक बाद एतहि विश्राम केलथि । जमुनाजीपर बनल ओ घाट बहुत

प्रसिद्ध अछि। ओहिठाम पंडितजी हमरासभकेँ लेने गेलाह । घाटपर उपस्थित पंडासभ तरह-तरहसँ पूजा करेबाक हेतु व्यग्र छलाह । मूल उद्येश्य एतबे जे आगन्तुकलोकनिसँ अधिक सँ अधिक टाका टानि ली। जेना-तेना ओहिठाम पूजा केलाक बाद हमसभ टैक्सी लग वापस पहुँचलहुँ । पंडितजी तँ पहिने निकलि गेल रहथि। मुदा एकटा अपन आदमी हमरा संगे लगा देने रहथि जे टैक्सीक पार्किंग धरि हमरासभकेँ पहुँचा देलक। ओकरा गछल टाका देलिऐक आ हमसभ टैक्सीसँ वापस बिदा भेलहुँ । रस्तामे मथुराक प्रसिद्ध पेरा,पैठा कीनलहुँ । आब हमसभ वापस दिल्ली बिदा हेबाक उपक्रममे रही कि रस्तेमे बिरला मंदिर देखाएल मंदिर खुजले छल। हमसभ ओहिठाम सेहो दर्शन केलहुँ । बहुत नीकसँ दर्शन भेल । थोड़बे कालक बाद सेवादारसभ चिचिआ रहल छल-

"जल्दी निकलैत जाउ । मंदिर बंद हेबाक समय भए गेल अछि।"

हमसभ जल्दीए बाहर भए गेलहुँ । मंदिरक मुख्यद्वारि लग खाली स्थान छल। हमसभ बहुत भिजि गेल रही । भेल जे अपन-अपन वस्त्र बदलि ली। ताहि हेतु झोरासँ अपन-अपन दोसर वस्त्र निकालहुँ आ ओकरा पहिरबाक उपक्रममे छलहुँ कि प्रहरीसभ झगड़ा करए लागल। हमहूँ बहुत जोरसँ डाँटि देलिऐक -

"तोरासभकेँ कनीको मनुष्यता नहि छह। देखि रहल छह जे हमसभ भिजल छी। संगमे स्त्रीगणसभ से छथि। वस्त्र बदलितहि हमसभ एहिठामसँ अपने चलि जाएब।" बहुत मोकसिलसँ हम आ हमर श्रीमतीजी तँ अपन-अपन वस्त्र बदलि सकलहुँ । संकोचवश हमर सारि ओहिना भिजले सारी पहिरने रहि गेलीह। घंटो एहि अवस्थामे रहबाक कारण ओ बादमे बहुत जोर दुखित भए गेलीह । दिल्ली पहुँचलाक बाद कैकदिन धरि हुनकर इलाज होइत रहलनि तखन जा कए ओ स्वस्थ भेलीह।

मंदिरसभक बाहर बहुत मैलसभ रहैत अछि। मंदिरमे दर्शनकक व्यवस्था सेहो ठीक नहि अछि। शनि-रविक तँ सौंसे घेराबंदी कए देल जाइत अछि जाहिसँ अहाँ अपन कार नहि लए जा सकैत छी। बहुत सुधारक प्रयोजन अछि। हमरा बुझेबे नहि करए जे अपन घरक एतेक शांति छोड़ि अनेरे वृंदावन-मथुरामे फसाद करए लोक किएक जाएत? ओहिठाम तँ मात्र

हंगामा अछि,चारूकात लालची पंडासभक गीधदृष्टि जे कखन ककरासँ कतेक बेसी टाका झिटि ली। सभठाम पैसा फेकू तमासा देखू बला बात अछि। निश्चय ई स्थिति बहुत दुखद अछि। ई कोना पुण्य काज कहल जाएत? संबन्धित व्यक्तिसभकेँ एहिसभपर सोचबाक चाही जे हिन्दू धर्मक एहन प्रतिष्ठित धर्मस्थलक एहन दुर्गति किएक अछि?आशा करैत छी जे सरकार/धार्मिक संस्थानसभ एहिसभ दिशामे काज करत आ भविष्यमे जखन हमसभ फेर ओहिठाम जा सकब तखन बहुत उत्तम परिस्थिति देखबामे आओत ।

एहि तरहेँ हमरसभक दू दिनक वृंदावन यात्राक अंत भेल। हमसभ अपन घर वापस आबि कए बहुत आश्वस्त छलहुँ । वृंदावन-मथुराक एहि यात्रामे बहुत गंजन भेल छल। एक तँ मौसम बहुत खराप छल । हमसभ अनेक बेर भिजि गेलहुँ । दोसर टैक्सी बला छल तँ सोझ मुदा ओकरा ओहिठामक कोनो जनतब नहि रहैक । ऊपरसँ ओ कैकबेर गलत जानकारी दैत रहल जाहिसँ हमरासभकेँ परेसानी बढ़ल । अगर ओ बाँके बिहारी मंदिरक बंद हेबाक समयक गलत जनतब नहि दैत तँ हमसभ जे अनेरे भिजैत ओहिठाम गेलहुँ आ वापस भेलहुँ ,ओहिसँ तँ बचि सकैत छलहुँ । इसकान मंदिरक प्रभुपादआश्रमक आवास सेहो ठीक नहि छल। चाहो नहो भेटैत छल ओहिठाम , आर सुविधाक तँ बाते कोन? एहिसभक अछैत हमसभ प्रसन्न रही जे मथुरा-वृंदावनक प्रमुख-प्रमुख मंदिरमे दर्शन कए सकलहुँ ।

माटि बजा रहल अछि

पछिला छओ सालसँ गाम नहि गेल रही। एहिसँ पूर्व भातिजक बिआहमे ओतए सन् २०१८मे गेल रही। जाबे माए जीबैत छलीह ताबे तँ ओहिठाम जेबाक अर्थ बुझाइत छल। माएसँ भेंट होइतहि सभ दुख बिसरा जाइत छल। ओहि समयमे दिल्लीसँ गाम जाएब कोनो मामुली बात नहि रहैत छलैक। कैकमास पहिनेसँ तकर योजना बनैत छल। यात्राक तिथि निर्धारणक बाद सभसँ पहिने रेलवे टिकट हेतु टीसनपर जा कए पाँतिमे घंटो ठाढ़ भए टिकट लेल जाइत छल। बहुत बादमे जा कए टिकट लेबाक प्रक्रियामे बहुत सुधार भेल। आब तँ घरे बैसल आनलाइन टिकट बनि जाइत अछि। टिकट लेलाक बाद जेबाक, ओहिठाम जा कए रहबाक आ सकुशल दिल्ली वापस हेबाक हेतु पर्याप्त टाकाक जोगार कएल जाइत छल। सामान्यतः ओतए परिवार सहित गेलापर ओ सभ मास-दू मास हमर सासुरमे वा ससुरजीक डेरापर रहि जाथि। हुनका सभकेँ ओतए छोड़ि हम जल्दीए वापस भए जइतहुँ। मास-दू मासक बाद परिवार आनबाक हेतु फेर ओमहर जाइ। वापसीमे सभगोटे संगे लौटी।

हमर ससुर सन् १९९७मे स्वर्गबासी भए गेलथि। हमर मित्र लालबच्चा(स्वर्गीय विष्णुकान्त मिश्र) सन् २००९मे चलि जाइत रहलाह। सन् २०१५मे हुनकर पिता(स्वर्गीय चन्द्रधर मिश्र) सेहो चलि जाइत रहलाह। हमर माएक सन् २०१६मे देहावसान भए गेलनि। सन् २०२०मे हमर सासु सेहो चलि जाइत रहलीह। एहि तरहेँ कालक्रमे गाम-घरसँ लगाओक सूत्रसभ टूटैत चलि गेल। आब गाम जा कए ककरासँ भेंट करब? ओना गाम कोनो खाली भए गेलैक से बात नहि छैक। नव-नव कोठासभ बनि गेल अछि। बहुत रास लोकसभ सेवानिवृत्तिक बाद गाम वापस आबि गेल छथि। मुदा तेँ की? एही गुन-धुनमे बहुत दिनसँ रही। एमहर मुम्बईमे बसि गेल हमर मित्र शल्लुजी (शैलेन्द्र झा)क फोन आएल। ओहि समयमे हम अपन श्रीमतीजीक फिजियोथेरेपीक हेतु अस्पताल गेल रही। ओ मार्चमे गाममे अपन पौत्रक उपनयनमे भाग लेबाक हेतु आमंत्रित केलनि। तकर बाद दू-तीन बेर फेर आग्रह केलनि, पुछैत रहलाह जे हम टिकट लेलहुँ कि नहि।

हमरा लागल जे ओ नहि अपन माटि बजा रहल अछि, जाए पड़त। आखिर हम दरभंगा जेबाक हेतु १७ मार्च २०२४क प्रथम श्रेणी एसीक टिकट लए लेलहुँ। वापसी यात्राक टिकट अखन नहि लेने रही। सोच-विचार करैत रही जे केना की करी?

दरभंगासँ गाम वापस हेबाक टिकट कहिआक ली? गाममे उपनयन छलैक। एकादशी यज्ञ छलैक। प्रात भेने भोज होइतैक। दरभंगामे किछुगोटेसँ भेंट करबाक छल। संयोगसँ निर्मलीमे ओही लगपासमे २३ मार्च कए 'सगर राति दीप जरय' साहित्य-कथागोष्ठी आयोजित हेबाक छल। ई एकटा दुर्लभ अवसर छल। कैकसालसँ एहि कार्यक्रममे भाग लेबाक इच्छा छल। सगर राति दीप जरय कार्यक्रम निर्मलीमे होएत आ डाक्टर श्री उमेश मंडलजी एकर संयोजक रहताह से स्वयंमे पैघ बात छलहे। सगर राति दीप जरय शनिदिनक रातिमे होइत आ सोमदिन फगुआ छल। फगुआमे ग्रेटर नोएडाक अपन घरपर परिवार संगे रहबाक इच्छा छल। अस्तु, सभकिछुकेँ विचार करैत वापसी यात्राक हेतु २४ मार्च २०२४क वायुयानसँ टिकट लेलहुँ। दिनमे ११.४० बजे स्पाइस जेटक विमान दरभंगासँ खुजबाक रहैक। ताहि हेतु दू-घंटा पहिनहि हबाइ हड्डापर पहुँचबाक हेतैक। निर्मलीसँ दरभंगा भोरे सात बजे बिदा भए दरभंगा समयपर पहुँची ताहि हेतु बहुत माथापच्ची केलहुँ। २३ मार्च २०२४ कए दरभंगासँ निर्मलीक हेतु दानापुर-जोगबनी इन्टरसीटी एक्सप्रेसमे टिकट बनि गेल। मुदा निर्मली-सँ-दरभंगा वापसीमे एहन कोनो ट्रेनक पता नहि चलल जे हमरा दरभंगामे हबाइ जहाज पकड़ा सकए। तेँ निर्मलीसँ दरभंगा टैक्सीसँ पहुँचबाक मोन बनओलहुँ। ओही बीचमे डाक्टर कमलाकान्तजीक फोन आएल। ओहो निर्मलीक सगर 'राति दीप जरय'क कार्यक्रममे भाग लेबाक हेतु उत्सुक बुझेलाह। मुदा हुनकर समस्या छलनि जे ओ रातिमे बेसी काल नहि रहि सकताह, निर्मलीसँ जल्दीए लौटि जेताह। तेँ हुनका संगे जेबाक विकल्प ठीक नहि बुझाएल। अंततोगत्वा, उमेशजी निर्मलीसँ दरभंगाक हेतु टैक्सीक जोगार कए देबाक हेतु आश्वस्त केलनि। एहि तरहेँ दुनू दिसक टिकटक ओरिआन भए गेल। आब रहल रहबाक जोगार। संयोगसँ पोस्टल प्रशिक्षण केन्द्र बेला पैलेस, दरभंगाक अतिथि गृहमे हमरा रहबाक जोगार भए गेल। तकर लिखित संपुष्टि सेहो आबि गेल। आब तँ हम बहुत निचेन छलहुँ।

१७ मार्च २०२४क नियत समयपर, माने लगभग सबा बारह बजे हम नई दिल्ली टीसनक प्लेटफार्म नंबर पाँचपर पहुँचि गेल रही। हमरा लग तीनटा सामान छल। ट्रेनकैँ लगितहि हम तीनू सामानक संगे एसी प्रथम श्रेणीक डिब्बा संख्या एच एकमे प्रवेश केलहुँ। ओहि डिब्बाक शुरूएमे हमर स्थान छल। थोड़बे कालमे ओहिमे एकटा परिवार अएलथि। ओ सभ दुनू बेकती आ दूटा बच्चा रहथि। तीनू शायिका हुनके छलनि। हम निश्चिन्त भए अपन स्थानपर ओलरि गेल रही, फोनमे लागल रही कि ट्रेन खुजि गेल।

पहिने प्रथम श्रेणी एसी डिब्बामे विक्रेतासभ नहि देखाइत छल। मुदा एहि बेर तँ रहि-रहि कए तरह-तरहक सामानसभ अबैत-जाइत रहल। हमहूँ अपन पसिंदक चीज वस्तु लैत रहलहुँ। सामान्यतः हम भोरुका पहरक बाद चाह नहि पीबैत छी। मुदा ट्रेनमे तीन बेर चाह पीलहुँ। आर किछु-किछु खाइत रहलहुँ। बड़ी काल धरि हमर सहयात्री सभसँ गप्प-सप्प नहि भेल। ओहो सभ अपनामे मगन रहथि। हमहूँ किछु-किछुमे लागल रही। ओ दुनू बेकती आपसमे बहुत नीक मैथिलीमे गप्प-सप्प करथि। एहि बातसँ हम बहुत प्रभावित भेलहुँ। असलमे ओ सभ झंझारपुरक लगीचक गामक रहथि, मुदा कैक सालसँ दिल्लीमे रहैत छथि। कुल-मिला कए हमरा ओ सभ बहुत नीक लोक बुझेलथि। हम हुनकर प्रशंसा केलिअनि। तकर बाद तँ ओ सहटि कए हमरे लग बैसि गेलथि।

ट्रेनमे यात्राक क्रममे सहयात्री अपन गामक घरक वृतान्त कहए लगलाह। दस साल पूर्व ओ चालीस लाख खर्च कए आठ कोठरीक घर बनओने छथि। ईर्ष्यावश हुनकर एकटा देआद हुनकर मकानक सामनेमे सरकारी जमीनपर घर बना लेलकनि। ओ बहुत प्रयास केलथि जे ओ एना नहि करथि। मुदा ओ नहि सुनलकनि। तकर बाद ओ दिल्लीसँ उच्च सरकारी अधिकारीलोकनिकैँ सिकाइत करैत रहलाह। स्थानीय जीलाधीशसँ सेहो भेंट केलनि। अंततोगत्वा, सरकार ओकर मकान ढाहि देलक। तकर बादो ओ आइ धरि मलबासभ नहि हटेलकनि। ओ न्यायालयमे केस कए देने अछि जे ओ जमीन ओकर छैक,सरकारक नहि। एतेक परेसानी अछैतो ओ गामक घर बचओने छथि। ताहि हेतु रखबार रखने छथि। गामपर बाबू

एसगरे रहैत छथिन । सालमे कैकबेर दिल्लीसँ गाम अबैत-जाइत रहैत छथि। लोकसभकेँ मदति सेहो करैत रहैत छथि। ओ एहि जोगारमे छथि जे एमएलए एमपी बनि जाइ। हुनकर माए किछु साल पूर्व पचपन सालक बएसमे मरि गेलखिन। हुनका बेर-बेर एहि बातक हेतु दुख प्रकट करैत सुनिअनि जे ओ अपन माएकेँ नहि बचा सकलथि। हमरा ट्रेनमे बहुत कम निन्न भेल। आखिर जेना-तेना राति बितल, भोर भेल। सहयात्री हमर सदिखन ध्यान रखने रहथि। बेर-बेर पुछथि- “कोनो काज होअए तँ कहब।”

दोसर दिन साढ़े नओ बजे हमसभ दरभंगा टीसनपर पहुँचि गेल रही। ओहिठामसँ आटोसँ थोड़बे कालमे पीटीसी अतिथिगृह पहुँचलहुँ । अतिथिगृहक रखबार बीरुकेँ फोन केलहुँ। ओ तुरंत उपस्थित भए गेल। सूट नंबर तीनकेँ खोलि देलक। हम अपन सामानसभ ओहिमे रखबेलहुँ। यद्यपि ओ कोठरी पुरान सन लगैत छल, मुदा ओहिमे सभ सुविधा छल। एसी, टीभी, मच्छरदानी लागल सुसज्जित पलंग, कुर्सी टेबुल, सोफा। मोन गद-गद छल। बीरुकेँ ओहिठामक भोजनादिक व्यवस्थाक बारेमे पुछलिऐक। ओ कहलक-“हमरा एहिसभक जनतब नहि अछि। अपने संजयजीसँ वा सहायक निदेशकजीसँ गप्प कए लिअ। ओएहसभ किछु कहताह।”हम संजयजीसँ गप्प केलहुँ। तकर बाद सहायक निदेशकजी सेहो भेटलाह। हुनकासँ जानकारी भेटल जे ओहिठाम प्रशिक्षुलोकनि हेतु मेस चलैत अछि जाहिमे चारू बेर भोजन, जलखै, चाहक ओरिआन छैक। अतिथिलोकनि सेहो प्रतिदिन २६० रुपया भुगतान कए ओहि सुविधाक लाभ उठा सकैत छथि। भोरे सात बजे चाह, नओ बजे जलखै, एकबजे दिनुका भोजन, साँझमे चाह आ रातिमे नओ बजे भोजन। सभकिछुक हेतु २६० रुपया मात्र सस्ते छैक। मुदा फूट-फूट रेट नहि छैक। कहबाक माने जे यदि एक्को बेर खाएब तँ २६० टाका लगबे करत। तेँ हम ओहिठाम मात्र एकदिन २२ मार्च २०२४क भोरक चाहसँ लए कए रतुका भोजन धरि केलहुँ । आन दिन एमहर-ओमहर घुमैत-फिरैत काज चलल।

अतिथिगृहमे व्यवस्थित भेलाक बाद डाक्टर योगानन्द झाजीकेँ फोन केलिअनि-

“हम दरभंगा आएल छी। अपनेसँ भेंट करए चाहैत छी।”

“ओ! बहुत हर्षक बात। अपने कतए ठहरल छी?”

“पीटीसी अतिथिगृहमे।”

“हम तँ अखने अबितहुँ, मुदा हमर अंङनेमे एकगोटेक मृत्यु भए गेलनि अछि। हम कठियारी जा रहल छी। काल्हि भेंट भए सकैत अछि। भोरे मोन पाड़ि देब।”

“ठीक छैक।”

तकर बाद भीम बाबूकेँ फोन केलिअनि।

“हम दरभंगा आएल छी। अपनेसँ भेंट करए चाहैत छी।”

“ओ! रबीन्द्र बाबू। बहुत भाग्यक बात। अपने जखन आबी, हम तँ घरेपर छी।”

“हम आध-पौन घंटामे आबि रहल छी।”

“आएल जाओ।”

फोन कटि गेल। हम तैयार रहबे करी। बिदा भेलहुँ। पीटीसीसँ बाहर निकलि एकटा आटो १३० रुपयामे ठीक भेल जे हमरा भीम बाबूक ओहिठाम पहुँचा दैत। करीब आधा घंटाक बाद आटो लक्ष्मी सागार, पंचायत भवन लग पहुँचि गेल। आब ओहिठामसँ दक्षिन जेबाक रहैक, मुदा ओ दक्षिन दिस छोड़ि सगतरि बौआएल आ तमसाइओ गेल। बहुत मोसकिलसँ अगल-बगल लोकसभकेँ पुछि कए ओ पंचायत भवनसँ दक्षिन भीमबाबूक घरपर पहुँचल। आटोबला टाका लेलक आ बड़बड़ाइत चलि गेल। हम भीमबाबूक ओहिठाम पहुँचि गेल रही। भीतर होइतहि ओ स्वयं भेटलाह। हुनकर छोटपुत्र सेहो ओतहि रहथि। थोड़बे कालमे हुनकर श्रीमतीजी सेहो आबि गेलथि। भीम बाबू आ हुनकर परिवारक लोकसभसँ भेंट कए बहुत आनन्द भेल। लगभग एकघंटा हम ओहिठाम रहलहुँ। ओहिक्रममे तरह-तरहक गप्प-सप्प होइत रहल। ओ पुछलाह-

“कतए रुकल छी?”

“पीटीसीमे।”

“से किएक? एतहि रहितहुँ।”

हुनकर आग्रहसँ हम अभिभूत रही।

घंटा भरिक बाद हम हुनकासभसँ बिदा लेलहुँ। दरभंगा टाबरक रिक्सा केलहुँ। दरभंगा टाबरक हालति पहिनोसँ बेसी खराप बुझाएल। चारूकातक जगह अतिक्रमण भए चुकल अछि। तरह-तरहक दोकानसभ खुजल अछि। प्रात भेने सुनलिऐक जे ओहि अतिक्रमणसभकेँ हटाओल जा रहल छैक। दरभंगा टाबर पहुँचि सभसँ पहिने एक गिलास लस्सी पीलहुँ। तकर बाद दयाल भंडार पहुँचलहुँ। हमसभ जखन विद्यार्थी रही तखन दयाल भंडारक चुरा-दही बहुत नामी छल। हमसभ ओहिठाम बरोबरि खाइ। ओहि स्मृतिकेँ फेरसँ जगओलहुँ। मुदा दयाल भंडारक आब ओ हालति नहि बुझाएल। आब ओहिठाम अथराक अथरा दही राखल नहि देखाएल। सामान्य भात-दालि-तरकारीक भोजन बेसी गोटे करैत देखेलाह। हमहूँ सएह खेलहुँ। तकर बाद घुमैत-फिरैत अपन डेरा वापस पहुँचि गेलहुँ।

पीटीसी स्थित अपन डेरापर पहुँचलाक बाद डाक्टर रमण झाजीकेँ फोन केलिअनि। ओ पटनामे छलाह आ २२ मार्च कए दरभंगा अओताह। ओही दिन हुनकासँ भेंट करबाक मोन बनओलहुँ। दोसर दिन भोरे पीटीसीक परिसरमे घुमए बिदा भेलहुँ। ओहि परिसरमे बहुत रास विभागीय कर्मचारी अधिकारी लोकनि प्रशिक्षण हेतु अबैत छथि। मास-दू मास ओतए रहैत छथि, प्रशिक्षण समाप्तिक बाद वापस अपन कार्यस्थानपर चलि जाइत छथि। ओहि परिसरमे प्रशिक्षणक सभटा सरंजाम अछि। चारूकात तरह-तरहक फूल लागल अछि। भोरे-भोर प्रशिक्षु-लोकनिकेँ अपने हाथ बाढ़नि लेने स्वच्छता अभियानमे लागल देखलहुँ। बहुत रास प्रशिक्षुसभ व्यायाम करैत देखेलाह। भोरे सात बजे चाह पीलाक बाद ओ सभ अपन-अपन किलासमे चलि जाइत छलाह। नओ बजे जलखै होइत छल। तकर बाद फेर तरह-तरहक किलास सभ चलैत रहैत छल। हमर डेराक लगीचेमे प्रशीक्षुलोकनिक किलास होइत छलनि। तेँ प्रार्थनाक सस्वर गायन घरे बैसल सुनैत छलहुँ। परिसरमे टहलैत काल एकटा हनुमान मंदिर देखाएल। ओ मंदिर प्रायः बंद पड़ल अछि। कतहु केओ नहि छल। मंदिरमे ताला लागल छल। कहि नहि ओहिमे पूजा होइतो अछि कि नहि? कनीके फटकी छोटसन शिव मंदिर सेहो देखाएल। ई मंदिर सभ कहिआ बनल, के बनओलथि, वर्तमानमे एना उजरल-उपटल किएक अछि से नहि बुझि सकलहुँ।

भोरे चाह पीबाक हेतु पीटीसी परिसरसँ बाहर निकलि रेलवे गुमतीक आसपास बनल दोकानमे गेलहुँ। ओतए नान्हिटा कपमे चाह देल जाइत छल।

"एतनीटा कपसँ की होएत?" -मोने-मोन सोचलहुँ। कहलिऐक- "तीन कप चाह दएह।"

तकर बाद ओ बेरा-बेरी तीन कप चाह देलक। तकर बाद लागल जे चाह पीलहुँ। ओतए कचौरी छना रहल छल। तरकारीक सुगंध चारूकात पसरि रहल छल। हम दोकान बलाकेँ पुछलिएक-

"जलखै तैयार अछि की?"

"अबस्स।"

"तखन परसिए दिअ।"

एकटा छिपलीमे छओटा कचौरी तरकारी हमरा आगूमे राखि देलक। जे खा सकलहुँ से खेलहुँ। तकर बाद निश्चिन्त भए वापस अपन डेरापर आबि गेलहुँ। योगानन्द बाबूकेँ फोन लगओलहुँ। घंटी बजैत रहि गेल, मुदा ओ फोन नहि उठाबथि। थोड़े कालक बाद फेर फोन केलहुँ। तखनहु सएह भेल। आब की करी? आजुक समयक की उपयोग कएल जाए? सोचलहुँ जे चली आकाशवाणी। साइत किछुगोटेसँ संपर्क भए जाए। ई-रिक्शा पकड़ि दस मिनटक बाद आकाशवाणी भवन पहुँचि गेलहुँ। ओहिठामक हाल तँ बेहाल छल। अधिकांश अधिकारी गायब छलाह। कोठरीसभ खुजल छल। कुर्सीसभ राखल छल। मुदा ओहिपर बैसनाहरक कतहु अता-पता नहि। एकटा महिला कर्मचारीकेँ पुछलिअनि-

"ई सभ कतए रहैत छथि?"

"एही परिसरमे अवस्थित स्टाफ क्वार्टरमे।"

ओहिठामक परिस्थिति देखि मोनमे बहुत आश्चर्य आ दुख भेल। ओहीठामसँ फेर योगानन्द बाबूकेँ फोन केलिअनि। एहि बेर ओ तुरंत फोन उठओलथि आ कहलथि-

"हमरा तँ साफे बिसरा गेल छल, नहि तँ भोरे प्रातः भ्रमण कालमे ओमहरे आबि जइतहुँ। अहाँ छी कतए?"

"आकाशवाणी भवनमे। मुदा एतए केओ अछि नहि। हम जल्दीए एतएसँ अहाँसँ भेंट करए बिदा होएब।"

"ठीक छैक। अहाँ लहेरिआसराय टावरपर चलि आउ। हम ओतहि भेटि जाएब।"

ओहिठाम पाँच मिनट आर रुकि गेलाक बाद हम लहेरिआसराय बिदा भेलहुँ। ओतए बिदा हेबा सँ पूर्व योगाबाबूकेँ फोन कए देलिअनि। तकर बाद ई-रिक्शा पकड़लहुँ । लहेरासराय टावरपर पहुँचले छलहुँ कि योगाबाबूक फेर फोन आएल।

"कतए पहुँचि गेलहुँ?"

"हम लहेरासराय टाबरपर ठाढ़ छी।"

"लगेमे हनुमान मंदिर छैक। ओतए चलि जाउ। आराम रहत। हम ओतहि पहुँचि रहल छी।"

हम हनुमान मंदिरमे जा कए दर्शन केलहुँ आ ओतहि आरामसँ बैसि गेलहुँ। कनीके कालक बाद योगाबाबूकेँ हुलकैत देखलहुँ। सहज, सरल आ सौम्य व्यक्ति छथि योगाबाबू से तँ अनुमान छलहे। तुरंत हमसभ रिक्सासँ हुनका ओहिठाम बिदा भए गेलहुँ। हम आ योगाबाबू रिक्सापर बैसल रही, आपसमे मैथिलीक दशा आ दिशापर बतिआइत रही। "मैथिली पोथी छपैत तँ बहुत अछि मुदा केओ ओकरा कीनि कए पढ़ए नहि चाहैत अछि। पोथीसभ मोफतमे उपहारस्वरुप बाँटल जाइत अछि। ई कोनो नीक लक्षण नहि अछि। एना कतेक दिन चलत?" मैथिलीक कतेक चिंता करैत छलाह योगाबाबू।

थोड़बे कालमे हम हुनका संगे कबिलपुर स्थित हुनकर घर पहुँचि गेल रही। हमरा तुरंत कुर्सीपर बैसओलथि। कोलड्रिंक अनलथि। होनि जे कतेक आग्रह करिअनि, की की ने खुअबिअनि। मुदा हमरा तँ मंगलक व्रत रहए। किछु खा नहि सकैत छलहुँ। योगाबाबूक घरेलु पुस्तकालयमे तरह-तरहक पुस्तकसभ भरल छल। ओ ओहिमे सँ ताकि-ताकि हमरा अनेक मूल्यवान पोथीसभ देलनि। करीब घंटा भरि हम ओहिठाम रहलहुँ। बहुत

आनन्द भेल। हुनकर सहजता, सरलता आ आत्मीयताक जतेक प्रशंसा कएल जाए से कमे होएत। तकर बाद हम ओहिठामसँ बिदा लेलहुँ। योगाबाबू बहुत दूर धरि हमरा अरिआति देलनि। ततबे नहि, दरभंगा टावर जा रहल एकटा युवकक मोटर साइकिलपर बैसा देलनि जाहिसँ हम आरामसँ दरभंगा वापस जा सकी।

मोटर साइकिलसँ थोड़बे दूर गेलाक बाद हम उतरि गेलहुँ। रिक्सा केलहुँ आ बलभद्रपुर बिदा भेलहुँ। ओतए हमर ससुरकक पिसिऔत भाए रहैत छथिन। ओ पंडौल कालेजमे अंग्रेजीक प्राध्यापक रहथि। बहुत पहिनेसँ बलभद्रपुरमे दूमहला मकान बनओने छथि। मुदा हमरा ओहि मकानक अखिआस नहि भए रहल छल। बहुत दिन समय बीति गेलैक ओतए गेला। हमर श्रीमतीजीक इच्छा रहनि जे हुनकर सभक हाल-चाल लेल जाए। हमरा एतबा अनुमान रहए जे हुनकर घर डाक्टर एन.पी. मिश्रक घरसँ आगू जा कए कोनपर छनि। लोकसभसँ पुछैत जेना-तेना हम हुनकर घर ताकि सकलहुँ। घरक आगूमे ठाढ़ छलहुँ। घरमे ओ चुहचुही नहि बुझाएल। “पता नहि की हाल छनि?” अगल-बगलक लोक कहलक जे हुनकर पत्नीक देहान्त भए गेलनि। मुदा अपने जीबैत छथि। हम घरक घंटी बजओलहुँ तँ एकटा बूढ़ बाहर भेलाह। कहैत छथि-

“हम किरायेदार छी।”

“ओ अपने छथि कि नहि?”

“ओ अपने बच्चासभक संगे दिल्लीमे रहैत छथि।”

आब की करितहुँ? श्रीमतीजीकेँ सभटा समाचार देलिअनि आ ओहिठामसँ तुरंत वापस भए गेलहुँ। वापसीमे लगीचेमे कांग्रेस आफिस देखाएल। मोन पड़ि गेल विद्यार्थी अवस्थाक सन् १९६८क ओ घटना। हमर गामक प्रसिद्ध आ यशस्वी समाजसेवी स्वर्गीय विश्वंभर झाजी हमरा तत्कालीन बिहार सकरकारक शिक्षा मंत्री स्वर्गीय नागेन्द्र झाजी हेतु एकटा चिठ्ठी देने रहथि। ओ ओहि पत्रमे हमरा किछु मदति करबाक अनुशंसा केने रहथिन। हम कांग्रेस आफिसमे दस बजे राति धरि मंत्रीजीक प्रतीक्षा करैत रहलहुँ। तखन जा कए ओ अएलाह। हम हुनका लग गेलहुँ आ चिठ्ठी

देलिअनि। ओ चिठ्ठी खोलि कए पढ़लनि, किछु-किछु कहबो केलनि। साइत किछु आश्वासन देलनि। तकर बाद ओ किछु नहि केलाह। हम बाटे तकैत रहि गेलहुँ। कहि नहि कोना हम एतेक राति कए गाम वापस जा सकलहुँ।

२० मार्च २०२२क अनुज सुरेन्द्रजीक संगे साढ़े दस बजे टैक्सीसँ गाम बिदा भेलहुँ। गाम जेबासँ पहिने हम दुनूगोटे सतलखामे अपन बहिनसँ भेंट केलिअनि। ओ हमरा लोकनिक स्वागतमे जान लगा देलनि। भोजनमे सचार लगा देलनि। ततेक सामग्री छल जे हम दसो दिनमे खा सकितहुँ कि नहि। बहुत मोसकिलसँ ओकरा कम कएल। हमर बहिनक बेटी, नाति सेहो रहथि। सभगोटेसँ नीकसँ गप्प-सप्प भेल। जाइत काल ओ एकमोटा उपहार पकड़ा देलनि। कतबो कहलिअनि जे वापसीमे हबाइ जहाजसँ जेबाक अछि। एतेक सामान कोना जाएत? मुदा ओ नहि माननलनि। तकर बाद हमसभ गाम बिदा भेलहुँ। हमर बहिन हमरासभकेँ बड़ीकाल धरि रस्तापर ठाढ़ भए जाइत देखैत रहि गेलथि।

गाम पहुँचि अपन दरबाजापर जाइते उदास भए गेलहुँ। आइ जौँ माए रहितथि तँ की आनन्द रहैत। अखन धरि दौड़ि गेल रहितथि। हुनका गोर लगने रहितहुँ। हुनकर आशीर्वाद प्राप्त कए कतेक आनन्दित भेल रहितहुँ? मुदा आब ओ कतए भेटतीह? इएह तँ एहि दुनिआक विचित्रता छैक। जे गेल से फेर घुरि नहि आएल। दुनिआ चलैत रहल। इएहसभ सोचैत रहलहुँ। थोड़ेकाल अपना ओहिठाम बैसलाक बाद हमसभ शल्लुजीक ओहिठाम गेलहुँ। दरबज्जेपर बरुआसभक मरबा बनल छल। पाँचटा बरुआक उपनयन संगे हेबाक छलैक। पहिने दियादीमे जे सभसँ जेठ से सभसँ पैघ बरुआक गुरु होइत छलाह। हमरो गुरु ताही नियमसँ हमर पितिऔत बाबा स्वर्गीय शक्तिनाथ मिश्र भेल रहथि। हमरासँ छोट भाए (सुरेन्द्रजी)क गुरु हमर बाबा (स्वर्गीय श्री शरण मिश्र) भेल रहथि। मुदा पता लागल जे एहिठाम अपन-अपन पोताक हुनकर अपन बाबा गुरु बनल छथिन। साइत आब इएह परंपरा भए गेल होइक, किंबा आब लोकक सोचक परिधि संकुचित भेल जाइत होइक। ई कोनो एक्के-ठामक बात नहि अछि। समाज बदलि रहल अछि। सभठाम परिवर्तन देखाएत, नीको-अधलाहो। ओहिठाम थोड़े काल बैसलहुँ। शल्लूजी व्यस्तताक अछैत फोनोसँ हाल-चाल लेलनि। हमसभ थोड़ेकालक बाद सिनुआरा टोल स्थित

कमलाकान्तजीक ओहिठाम हेतु बिदा भेलहुँ। गामक रस्तामे, चौकपर आ आगूओ सौंसे पक्काक घर बनि गेल अछि। अड़ेर चौकपर तँ दोकान भरि गेल अछि। लगभग तीन सए दोकान सड़कक काते-काते चलि रहल अछि। सुनबामे आएल जे अड़ेर हाट आब पुरने जगहपर लागत। बीचमे विष्णुपुरक मरचरामे लगैत छल।

कमलाकान्तजीक ओहिठाम गजबकेँ स्वागत भेल। हुनकर आवास बहुत सुखद आ आकर्षक अछि। मकानक मुख्यद्वारिपर कमलाकान्तजीक नाम मोट-मोट अक्षरमे लिखल अछि। मकानमे अंग्रेजी आ देशी दुनू तरहक शौचालयक व्यवस्था अछि। अतिथिक रहबाक हेतु फराक कोठरी छनि। अपन निजी पुस्तकालयमे बहुत रास मैथिलीक पोथीसभ रखने छथि। स्वर्गीय सुभद्र झाजीक बहुत रास किताबसभ ओहिठाम देखाएल। कमलाकान्तजीक संगे गप्प-सप्पमे बहुत नीक लागि रहल छल। बीच-बीचमे तरह-तरहक जलखैसभ से चलिए रहल छल। चाह-पान सेहो भेबे केलैक। आब सुरेन्द्रजी अगुता रहल छलाह । यद्यपि ओहिठामसँ उठबाक मोन नहि कए रहल छल, तथापि मोन मारि कए बिदा भेलहुँ। वापस शल्लूजीक ओहिठाम उपनयन देखलहुँ। बीच-बीचमे पानि सेहो भए रहल छल। मौसम खराप भेल जा रहल छल। तथापि गाममे किछुगोटेसँ भेंट केलहुँ। तकर बाद हमसभ वापस दरभंगा हेतु प्रस्थान केलहुँ। रस्ता भरि पानि होइत रहल। हमसभ दरभंगा पहुँचए बला रही कि शल्लुजीक फोन आएल।

"भोजनक बिझो करा रहल छिअ।"

"हमसभ तँ दरभंगा पहुँचि रहल छी।"

"एहिठाम आब भोजन हेतैक।"

"कोनो बात नहि। काल्हि फेर आएब।"

से जानि हुनका प्रसन्नता भेलनि। दिलीमोड़सँ पहिने फलसभ बिका रहल छलैक। बेस जुआएल केरासभ दोकानमे देखाएल। छओटा केरा कीनि लेलहुँ। बाहर पानि झमाझम बरसि रहल छल। एहनमे रातिमे भोजन

करबाक हेतु कतहु जाएब संभव नहि छल। रातिमे ओएह केरासभ काज आएल। थोड़बे कालमे हमसभ दरभंगा अपन डेरापर पहुँचि गेलहुँ।

रातिभरिक विश्रामक बाद आइ फेर गाम दिस जेबाक तैयारीमे लागि गेलहुँ। साढ़े दस बजेक आस-पास हमसभ गाम बिदा भेलहुँ। कपिलेश्वर पहुँचि सुरेन्द्रजीकेँ महादेवक दर्शनक इच्छा भेलनि। हमहूँ दर्शन करबाक हेतु कारसँ उतरलहुँ। वाहन चालक सेहो उतरि गेलाह। सभगोटे फूल-बेलपात लए महादेवक दर्शन करए संगे बिदा भेलहुँ। हम आ वाहन चालक तँ थोड़बे कालक बाद बाहर भए गेलहुँ। मुदा सुरेन्द्रजी तँ जे मंदिरमे पैसलाह से निकलबाक नामे नहि लेथि। थोड़े काल तँ शांतिपूर्वक हुनकर बाट तकैत रहलहुँ। तकर बाद हुनका ताकए लगलहुँ। आखिर ओ गेलाह कतए? तकैत-तकैत चारूकात घुमि गेलहुँ। वाहन चालक कारमे वापस जाए लगलाह। तखन हुनका बामा कात एकटा छोटकी मंदिरमे पूजा करैत देखलहुँ। हुनका देखितहि हम चिकरलहुँ। ओ हमरा दिस नहि तकलाह। तकर बादो ओ आन-आन मंदिरसभमे पूजा करैत रहलाह। तखन कएले की जा सकैत छल? कारमे जा कए बैसि गेलहुँ आ धैर्यपूर्वक हुनकर प्रतीक्षा करए लगलहुँ। पन्द्रह बीस मिनट आर ओहिना रहलहुँ कि हहाइत-फुफाइत तमसाएल सुरेन्द्रजीकेँ अबैत देखलहुँ-

“एही लेल हम ककरो संगे महादेवक पूजा हेतु नहि जाइत छी। पूजामे तँ समय लगिते छैक।”

कपिलेश्वरसँ निकलि थोड़बे कालक बाद गाम पहुँचलहुँ। पता लागल जे शल्लुजीक ओहिठाम ब्राह्मण भोजन शुरू भए गेल अछि। तुरंत ओहिठामसँ भोजन हेतु गेलहुँ। दरबाजापर टेबुल-कुर्सी लागल छल। लोकसभ सुविधानुसार भोजन करैत छलाह। हमहूँसभ भोजन हेतु टेबुल-कुर्सीपर बैसलहुँ। चूरा-दही, तरकारी, रसगुल्ला, गुलाबजामुन खाइत-खाइत थाकि गेलहुँ। तइओ सभ किछु नहि सठा सकलहुँ। पातपर बहुत किछू छुटि गेलैक। भोजन समाप्तिक बाद तामक लोटा, डोपटा बिदाइमे भेटल। ओहीक्रममे सालों बाद कैक तरहक गप्प-सप्प भेल, कैकगोटेसँ भेंट भेल। फेर अपना ओहिठाम आबि पारिवारिक चर्चामे भाग लेलहुँ। आब साँझ परितए। वापस बिदा भेलहुँ दरभंगा। बिदा हेबासँ पूर्व भगवतीकेँ प्रणाम केलहुँ आ सात बजे अपन डेरापर थाकल-झमारल पहुँचि गेलहुँ।

२२ मार्च २०२४। आइ हमर यात्राक पाँचम दिन छल। आइ दरभंगे रहबाक छल। अजुका प्रमुख कार्यक्रममे डाक्टर रमण झा जीसँ भेंट करबाक छल। आकाशवाणी भवन से जेबाक छल। अतिथिगृहक हिसाब-किताब करबाक छल।

भोरे स्नान-पूजा केलाक बाद चाह पीबाक हेतु पीटीसीक मेसमे गेलहुँ। सात बजेसँ चाह प्रारंभ भेल। प्रशिक्षु लोकनि गिलास लैत छलाह, टपसँ चाह ढारि लैत छलाह। एकटा टपमे सामान्य चाह छल, दोसरमे कनी कम चिन्नी बला। जकरा जे पसिंद होइ। हमहूँ सामान्य चिन्नी बला टपसँ चाह ढारलहुँ। चाह संगे बिस्कुटक प्रबंध सेहो रहैक। चाह पीलाक बाद वापस अपन डेरा आबि गेलहुँ। नओ बजे फेर ओतए जलखै करए गेलहुँ। जलखैमे पोहा, समतोला भेटि रहल छलैक। चाहो पीबि सकैत छी। प्रशिक्षुसभक संगे पाँतिमे लागि गेलहुँ। सभगोटे अपना-अपना हाथमे थारी, कटोरी लेने ठाढ़ रहैत छल। मेसक बारिक बेरा-बेरी सभक थारीमे पोहा ढारैत जा रहल छलाह। लोकसभ आगू बढ़ैत जा रहल छल। एही तरहेँ कारोबार चलि रहल छल। हमहूँ अपन थारीमे पोहा लेलहुँ, एकटा छोटसन समतोला लेलहुँ आ टेबुलपर बैसि कए जलखै केलहुँ। तकर बाद वापस अपन कोठरी आबि गेलहुँ। ताबे पीटीसीक कार्यालय खुजि गेल छल। हम आजुक चारू बेर चाह, जलखै, भोजनक २६० रुपया जमा कए देलिऐक। पाँचदिन रहबाक किराया ८५० रुपया सेहो जमा करा देलिऐक। तकर बाद सहायक निदेशक (प्रशासन) श्री जय प्रकाशजीसँ भेंट केलिअनि आ ओहिठाम हमर सुखद रहबाक ओरिआन करबाक हेतु धन्यवाद देलिअनि। अपन उपन्यास, 'ठेहा परक मौलायल गाछ'क एक प्रति सेहो देलिअनि। ओकर बाद पीटीसी परिसरसँ बाहर निकलि गेलहुँ।

डाक्टर रमण झाजीसँ फोनपर बात भए गेल रहए। ओ दिल्लीसँ पटना होइत दरभंगा पहुँचि गेल रहथि। आब हुनकासँ भेंट भए सकैत अछि। से जानि हुनकर डेरा दिस बिदा भेलहुँ। मोसकिलसँ दस मिनटमे हुनकर डेरा लग ई-रिक्शा उतारि देलक। ओहिठामसँ राजकुमारगंज स्थित हुनकर बीणा कमल अपार्टमेंट देखा रहल छल। हम आगू बढ़लहुँ। फ्लैटक घंटी बजबितहि ओ तुरंत अपने बाहर आबि गेलाह आ बहुत आत्मीयताक संग

भीतर लए गेलाह। ओहिठाम अनेक साहित्यिक विषयपर चर्चा भेल। अपन लिखल अनेक पोथीसभ देलनि। बहुत नीक जलखै भलैक। हुनकर पुत्रसँ सेहो परिचय भेल। घंटा भरि ओहिठाम रहि बहुत आनन्दित भेलहुँ। आब ओहिठामसँ चलबाक छल। ओ बहुत दूर धरि अरिआति देलनि। तकर बाद वापस बिदा भेलहुँ अपन डेरा पर। काल्हि निर्मली जेबाक छल। डेरापर पहुँचि सामानसभ सरिओलहुँ। तकर बाद दूरदर्शन खोललहुँ। थोड़े काल निश्चिन्तसँ समय बितओलहुँ। बहुत नीक लागि रहल छल। एहि बेर यात्राक दू भाग संपन्न कए आब निर्मली 'सगर राति दीप जरय' कार्यक्रममे भाग लेबाक हेतु काल्हि ट्रेनसँ जेबाक छल। परिसरमे नीचाँ प्रशिक्षुसभक बिदाइ समारोहक अवसरपर सांस्कृतिक कार्यक्रम भए रहल छल। ओहिठाम भए रहल नृत्य-संगीत कार्यक्रमक प्रतिध्वनि हमर कोठरी धरि स्पष्ट आबि रहल छल।

२३ मार्च २०२४। आइ निर्मली जेबाक छल। भोरे स्नान-ध्यान कए गुमती लगक दोकानपर चाह पीबाक हेतु बाहर निकललहुँ। ओतए पहुँचैत छी कि दोकान बला कहैत अछि-

"दू दिनसँ कतए चलि गेल रहिऐक, बाबा?"

"गाम।"

"ओ।"

"तीन कप चाह दएह। तकर बाद जलखैओ दइए दिह।"

"ठीक छैक बाबा।"

ओ गिलासमे तीन कप चाह देलक। ओ कप की छल बुझू जे चुकरी छल। तेँ ने तीन कप चाह लिऐक।

निश्चित समयपर हम दरभंगा टीसन पहुँचि गेल रही। दरभंगासँ निर्मली जेबाक हेतु ट्रेन दरभंगा टीसनसँ एगारह बाजि कए दस मिनटपर खुजितैक। मुदा ट्रेन कोन प्लेटपार्मपर लागत तकर उद्घोषणा हेबे नहि करैक। हम अपन सामानक संग प्लेटफार्म संख्या एकपर पहुँचि गेल रही। मुदा परेसान रही जे ट्रेन कतए लागत, कहीं छुटिए ने जाए। कुलीसँ सेहो गप्प केलहुँ। ओ कहलक-

“एतहि रहू। ट्रेन अएलाक बाद हम अपने आबि जाएब आ अहाँकेँ ट्रेनमे चढ़ा देब।”

तकर बाद ओ निपत्ता भए गेल। “पता नहि ओ समयपर आबि सकत कि नहि?” -एही गुनधुनमे रही कि हमर ग्रामीण अशोकजी भेटलाह। हुनकासँ दुटप्पी केलहुँ। हुनकर भाए हैदराबाद जेथिन, मुदा ट्रेन छओ घंटा विलंबसँ अएबाक सूचना रहैक। हम सभ आसपासमे रही कि ट्रेन आबि गेल। सामानसभक संगे हम आगू चलि गेल रही। फेर वापस इंजिन दिस अएलहुँ। दू डिब्बाक बाद हमर डिब्बा बी एक लागल छल। ओहिमे तुरंत पैसि गेलहुँ। जान-मे-जान आएल। पाँचे मिनटक बाद ट्रेन खुजि गेल। हमर शायिकापर केओ आर सुतल छल। ओकरा उठओलहुँ। ओ अपन स्थानपर चलि गेल आ हम अपन शायिकपर बैसि गेलहुँ। सामने एकटा सहयात्रीसँ गप्प-सप्प होमए लागल। ओ रेलवेमे अभियंता रहथि, काजसँ घोघरडीहा जा रहल छलाह। हुनकासँ बहुत रास जानकारी भेटल। ओहि इलाकामे केना गामक-गाम बड़का-बड़का मकान खाली पड़ल अछि, मालिकसभ बाहर रहैत छथि। मकानक रक्षाक हेतु रखबारसभकेँ दस-बारह हजार महिना दरमाहा दैत छथि। हम पुछलिअनि-

“अपने कतए रहैत छी?”

“गया।”

“अहाँकेँ गाममे घर अछि कि नहि?”

“अछि किएक ने। अपने बनओने छी। मुदा छोटसन जाहिसँ गाममे जा कए अधिकारपूर्वक ससम्मान अपन घरमे रहैत छी।”

“मकान बनबएमे कतेक खर्च भेल?

“अढ़ाइ लाख।”

“कहिआ बनओने रही?”

“पाँच वर्ष पूर्व। आब यदि ओहन मकान बनाओल जाएत तखन पाँच लाख लागि सकैत अछि। ओहिसँ कम नहि।”

हम हुनकर बातसँ बहुत प्रभावित रही। प्रवासीक हेतु गामक घरक हुनकर उदाहरण नीक बुझाएल। थोड़े कालक बाद हुनकर टीसन आबि गेल रहनि। ओ घोघरडीहामे उतरि गेलाह। हम उमेशजीकेँ फोन लगओलहुँ। ओ पुछैत छथि-

“कतए पहुँचलहुँ?”

“घोघरडीहा।”

“ठीक छैक। हम निर्मली टीसन पहुँचि रहल छी”

कनीके कालमे ट्रेन निर्मली पहुँचि गेल। हम सामान सहित उतरि गेलहुँ। हम ठामहि छलहुँ कि देखैत छी उमेशजी एकगोटेक संगे दे-दनादन दे-दनादन निर्मली टीसनपर पहुँचि रहल छथि। हुनकर प्रसन्नता देखैत बनैत छल। एहि बेरक यात्रामे कतेकोगोटे भेटलाह, कतेको ठाम स्वागत भेल, मुदा ककरो आननपर एहन प्रसन्नता नहि देखने रही। हमसभ सामानक संगे टीसनसँ बाहर भेलहुँ। ओ दूगोटे दूटा मोटर साइकिलसँ आएल रहथि। एकटापर हमर सामान राखल गेल। दोसरपर हम उमेशजीक संगे बैसलहुँ। मोसकिलसँ दस मिनटमे हम निर्मली स्थित हुनकर घर पहुँचि गेल रही।

उमेशजीक घरमे पहुँचि लागल जेना अपन घर पहुँचि गेल छी। चौकीपर नीकसँ ओछाओल गेल साफ चमचम करैत तोसक, चदरि। हम ओतए बैसि आश्वस्त होइत छी कि ऊपरसँ आदरणीय श्री जगदीश प्रसाद मंडलजी अबैत छथि। हुनकर कृषकाय परंतु तेजोमय आनन देखैत बनैत छल। हुनकर सहज, सरल आ भावुक व्यवहारसँ बहुत प्रभावित भेलहुँ। बड़ीकाल धरि आपसमे गप्प-सप्प होइत रहल। कहि नहि सकैत छी जे हुनकासँ भेंट केलाक बाद कतेक आत्मीयताक अनुभव भेल। हमर यात्रा सफल भेल। जगदीश बाबूक समस्त परिवार ‘सगर राति दीप जरय’ कार्यक्रमक तैयारीमे लागल छल। अद्भुत दृश्य छल ओ। साइते कोनो एहन परिवार होएत, जतए बच्चासँ बूढ़ धरि एहि तरहेँ मैथिलीक सेवामे लागल होअए।

हमरा लोकनि थोड़ेकाल विश्राम केलहुँ। आब कार्यक्रमस्थलपर जेबाक छल।

“की पहिरी? धोती कुरता कि सर्ट-पैंट।”

"धोती-कुरता बढ़िआँ रहत।" -जगदीश बाबू कहलथि।

"आ से जे मोन होनि, जाहिमे आराम बुझानि।" -उमेशजी बजलाह।

हम धोथी कुरता लइए गेल रही। सएह पहिरबाक विचार कएल। तकर बाद हमसभ लगभग चारि बजे कार्यक्रमस्थल हेतु बिदा भए गेलहुँ।

'सगर राति दीप जरय'क कथागोष्ठी 'श्यामा कंपलेक्स सह विवाह हॉल- निर्मली'मे आयोजित छल। ओ परिसर बहुत नीकसँ सजल-धजल छल। सुसज्जित मंच, तकर सामने सएसँ बेसीए कुर्सी लागल छल। रातिमे विश्रामक हेतु सेहो उचित व्यवस्था कएल गेल छल। बेरा-बेरी लोकसभ आबि रहल छलाह। हमर ग्रामीण आ मित्र आदरणीय डाक्टर कमलाकान्त भंडारीजी आबि गेल रहथि। तकर थोड़बे कालक बाद आदरणीय श्री कामेश्वर चौधरीजी आइ.इ.एस. (सेवानिवृत्त) सेहो आबि गेलथि। हुनकासँ ट्रेनेमे गप्प भेल छल। ताबे हम सकरी टीसन टपि गेल रही। आब ओ बहुत अफसोच करए लगलाह। हुनका सेहो कार्यक्रममे भाग लेबाक मोन रहनि। ओ गामेमे रहबो करथि। हम हुनका अपन कार्यक्रमक पूर्वसूचना नहि दए सकल रहिअनि। मुदा ओ जेना तेना पहुँचिए गेलाह। असलमे ओ सुच्चा मैथिली प्रेमी छथिए, ताहिपर अपन इलाकामे सेहो होइत छल, से जानि ओ अपनाकेँ नहि रोकि सकलाह।

लगभग सात बजे दीप प्रज्ज्वलनसँ कार्यक्रमक प्रारंभ भेल। तकर बाद भगवती गीत गाओल गेल। फेर प्रारंभ भेल अथितिलोकनिक स्वागतक कार्यक्रम। फेर एक्कैसटा पुस्कक विमोचन भेल। ओहिमे कार्यक्रममे हमरो दूटा उपन्यास (ठेहा परक मौलायल गाछ आ पटाक्षेप)क विमोचन भेल। हम अपन कथा, गाछ,क पाठ सेहो केलहँु।

कार्यक्रमक क्रममे स्थानीय झंझारपुर कालेजक प्राचार्य आदरणीय डाक्टर नारायणजी आदरणीय श्रीजगदीश प्रसाद मंडलजीकेँ हुनकर पोथी कीनि कालेजक दिससँ हुनका साढ़े चौबीस हजारक चेक मंचपर प्रदान केलनि। निश्चितरूपसँ ई बहुत प्रशंसनीय काज भेल। कार्यक्रमक अंतमे आदरणीय डाक्टर श्री अशोक अविचलजी अपन बात बहुत मार्मिक ढंगसँ

रखलथि। कार्यक्रममे भाग लेनिहार सभ कथाकारकेँ उत्साहित केलनि। आयोजक सहित संयोजककेँ सेहो धन्यवाद देलनि। असलमे उमेशजीक सतत प्रयाससँ कार्यक्रम भेबो कएल बहुत नीक। कोनो तरहक दिक्कति नहि भेल। जलखै, चाह, भोजन सभक उत्तम ओरिआन छल। सभ रचनाकार, समीक्षक, आगन्तुक विद्वानलोकनिकेँ यथोचित अवसर देल गेलनि, सम्मानित कएल गेलनि।

सगर राति दीप जरय कार्यक्रममे अनेक मूर्धन्य साहित्यकार लोकनिसँ भेंट भेल। राति भरि चलए बला एहि ओहिठाम बिताओल गेल आनन्दपूर्ण क्षण सदिखन मोन पड़ैत रहत। हमर सुख-सुविधा आ यथोचित सम्मान हेतु जे किछु संभव छल से उमेशजी केलनि। आदरणीय डाक्टर श्री उमेश मंडलजी आ हुनकर समस्त सहयोगी लोकनिकेँ एहि हेतु हार्दिक आभार, धन्यवाद।

आब भोर भए गेल छल। कार्यक्रम समाप्त भए गेल। हमरा वापस जेबाक छल। दरभंगा जा कए दिल्लीक हेतु हबाइ जहाज पकड़बाक छल। उमेशजी पहिनेसँ हमरा लेल टैक्सी ठीक कए देने रहथि। हम साढ़े आठ बजे दरभंगा हबाइ अड्डा पहुँचि गेलहुँ। ओतए पहुँचि बहुत आश्वस्त भेलहुँ। सही समयपर जहाज उड़ि गेल। हम निश्चित समयसँ आध घंटा पहिने डेढ़ बजे दिल्ली हबाइ हड्डापर उतरि गेलहुँ। एहि तरहेँ दरभंगा, अड़ेर डीह, निर्मलीक यात्रा बहुत सफलतापूर्वक संपन्न भेल।

01 अप्रैल 2024

नीलांचल पर्वत वासिनी

बहुतदिनसँ कामाख्या भगवतीक दर्शन करबाक इच्छा छल। सोमनाथ यात्राक समयमे हमर श्रीमतीजीक ठेहुनमे समस्या भए गेल रहनि। तकरा ठीक हेबामे कैकमास लागि गेलनि। समय लगलनि,मुदा उपचारसँ बहुत सुधार भेलनि। जखन ओ फेरसँ टहलनाइ शुरू कए देलनि तँ एकदिन कहैत छथि-

"आब हमसभ कामाख्या जेबाक कार्यक्रम बना सकैत छी।"

"ठीक छैक। आब जखन अहाँ सहमति दए देलिऐक तँ चलबे करब।"

तकर बाद सरकारक इसंपदा वेबसाइटपर जा कए गुवाहाटीमे रहबाक हेतु घरक उपलब्धता जँचैत रहलहुँ। एकदिन संयोगसँ नओ अप्रैलसँ चौदह अप्रैल धरिक रहबाक जोगार बुझाएल। बीचमे एगारह अप्रैल कए खाली नहि रहैक। नओसँ चौदह अप्रैलक बीचमे अलग-अलग तारिखक हेतु चारिबेर आरक्षण करबए पड़ल। कारण एक्के कोठरी सभदिनक हेतु उपलब्ध नहि रहैक। जे भेटल,जेना भेटल ओकरा तुरंत आनलाइन आरक्षित करबा लेलहुँ। तकर बाद गुवाहाटी जेबाक आ वापसीक हबाइ जहाजक टिकट सेहो बनबा लेलहुँ। तकर बादे हुनका कहलिअनि-

"हेयै! सुनैत छी।"

"की बात?"

"एमहर आउ। देखिऔ ने की छैक।"

हुनको उत्सुकता भेलनि। हमर लैपटाप लग पहुँचलथि। हम हुनका गुवाहाटीमे सीपीडब्लुडी अतिथिगृहमे कएल गेल रहबाक व्यवस्थाक जानकारी देलिअनि। ओ आश्चर्यचकित रहथि जे एतेक जल्दी ई सभ कोना भए गेल।

एगाराह अप्रैलक रहबाक व्यबस्था अखन करबाक छल। कैकटा विकल्प मोनमे अबैत छल। जेना कि ओहिदिन कामाख्यामे रहि जाइ,चीरोभाइ ओहिठाम चलि जाइ,किंवा शिलांगमे रहबाक जोगार करी। एहीक्रममे नेटपर देखैत रही कि शिलांगमे आयकर विभागक अतिथिगृह हेबाक जनतब भेटल। संबंधित अधिकारीक फोन नंबर सेहो भेटि गेल। हम हुनका अपन जरुरतिक बारेमे लिखलिअनि। आश्चर्य तखन भेल जे थोड़बे कालक बाद हुनकर सहमति भेटि गेल। एहि तरहेँ एगारह अप्रैल कए शिलांगमे रहबाक जोगार सेहो भए गेल।

गुवाहाटी आ शिलांगमे रहबाक जोगार भए गेल छल। दुनूदिसका हबाइक जहाजक टिकट सेहो भए गेल छल। आब कामाख्या भगवतीक दर्शनक जोगार करबाक छल। नओ अप्रैल कए गुवाहाटी हबाइ जहाज साढ़े एगारह बजे पहुँचैत। तकरबाद सभसँ पहिने डेरा जेबाक होएत। ओहिठाम व्यबस्थित हेबाक बादे किछु आओर कएल जाएत। तेँ ओहिदिन कामाख्या भगवतीक दर्शनमे दिक्कति भए सकैत अछि। से सोचि हम दस अप्रैल कए कामाख्या भगवतीक दर्शन करबाक विचार केलहुँ। ओहिठाम दर्शन करबाक हेतु विशेष दर्शनपर्ची आनलाइन सात दिन पहिने कटनाइ शुरू होइत छैक। अस्तु, चारि अप्रैल कए हम कामाख्या भगवतीक विशेषदर्शनक हेतु आनलाइन टिकट कटओलहुँ। ताहि हेतु प्रति यात्री पाँचसए एक रुपया देबाक होइत छैक। दुनूगोटेमे एक हजार दू रुपया आनलाइन भुगतान केलाक बाद हमरसभक विशेष दर्शन टिकट सेहो कटि गेल। से तँ भेल,मुदा दूदिनक बाद हमर श्रीमतीजीक मोन खराप भए गेलनि। बोखार,खाँसी,आँखि लाल कतेको तरहक सिकाइतसभ भए गेलनि। आब की करी? हम तँ परेसान भए गेलहुँ। हबाइ जहाजक टिकट रद्द कराएब तँ भारी घाटामे पड़ब। एही समयमे बुझाएल जे हबाइ जहाजक टिकट लेबा काल रिफंडेबल टिकट लेबाक चाही जाहिसँ किछु गड़बड़ भेलापर रुपया वापस भए जाए। मुदा एहि बेर तँ हम फँसि गेल रही। मोने-मोन मातार्कें गोहरेलहुँ। आब जानह तूँ हे माता!

तुरंत हुनका डाक्टर लग लए गेलहुँ। हुनका आँखि उठि गेल रहनि,देहमे बोखार रहनि,सर्दी-खाँसी तँ रहबे करनि। डाक्टरसभ दबाइ

लिखलक। तुरंत दबाइ कीनलहुँ। संयोग एहन भेल जे दोसरेदिनसँ हुनकामे बहुत सुधार होमए लगलनि। दूदिनक बाद तँ बारह आना ठीक भए गेलथि।

“आब कोनो चिंता नहि।“-हम मोने-मोन सोचलहुँ।

तेसरदिन भेने हुनकर हालति बहुत सुधरि गेल रहनि,बोखार उतरि गेल रहनि,सर्दी-खाँसी से कम भए गेल रहनि। आँखि सेहो आब लाल नहि छलनि। आब लागल जे बचि गेलहुँ। हमसभ प्रसन्न रही। माताकेँ वारंबार धन्यवाद देलिअनि ।

आखिर नओ अप्रैल आबि गेल। भोरे सातबजे हबाइअड्डा पहुँचबाक हेतु छओ बजे हमसभ अपन घरसँ बिदा भए गेलहुँ। सातबजे हबाइ अड्डा पहुँचि गेलहुँ। धराधर सभटा काज संपन्न भए गेल। सामानसभ चेकइन भए गेल। दुनूगोटे सुरक्षाजाँचक बाद हबाइ जहाजमे चढ़बाक हेतु संबंधित द्वारि लग पहुँचि गेलहुँ। आब हमसभ निचेन छलहुँ। हबाइ जहाजकेँ उड़बामे घंटा भरिक समय रहैक। ताबे विश्राम केलहु,फोनपर गप्प-सप्प केलहुँ। से सभमे लागले रही कि हबाइ जहाजमे बोर्डिंग करबाक घोषणा भेलैक। हमसभ तुरंत अपन पाँतिमे आगूए लागि गेल रही। देखिते-देखिते हमसभ अपन-अपन सीटपर बैसि गेलहुँ। थोड़बे कालक बाद हबाइ जहाज सैकड़ों यात्रीक संग उड़ि गेल।

जहाजक उड़ैत काल खिड़की बाटे बाहर देखैत रहलहुँ। क्रमशः धरती दूर भेल जाइत छल। चीज-वस्तुसभ बिला रहल छल। थोड़बेकालमे तँ हमसभ चिरैओसँ बेसी भए गेल रही। हबाइ जहाजमे बैसल मस्त गगनमे विचरण करैत रही। मुदा नीचाँ देखलासँ किछु नहि देखि पाबी। सभकिछु जेना शून्यमे विलीन भए गेल छल। साकारसँ निराकारक रुप्यान्तरणक विहंगम दृश्य सद्यः उपस्थित छल।

९ अप्रैल २०२४क नओ बाजि कए दस मिनटपर दिल्लीसँ उड़ल हबाइ जहाज ठीक साढ़े एगारह बजे गुवाहाटी हबाइ अड्डापर उतड़ल। हमसभ सामान लए बाहर होइते काल उबेरक टैक्सी आरक्षित करा लेलहुँ आ बहुत आसानीसँ एक घंटामे सीपीडब्लुडीक अतिथिगृह पहुँचि गेलहुँ। ओहिठामक मनेजरकेँ अपन आरक्षणक कागज देखओलिअनि। ओहिठाम

पाँच दिन रहबाक हेतु हमरा लग चारिटा आरक्षण पुरजी छल,अलग-अलग दिनमे अलग-अलग कोठरी। से देखि कए मनेजर बजैत अछि-

“अहाँ आरक्षण रातिमे केने रही की?”

हम ओकरा इसारा बुझि नहि सकलिऐक।

“नहि,नहि। आरक्षण तँ दिनेमे केने रही।”

ओ ओहिमे सँ एकटा कागज राखि लेलक ।

“आर कागजसभ बादमे दए देब।“

बादमे मनेजरक बातपर ध्यान गेल। ओकरा नहि बुझाइक जे चारिटा आरक्षण पुरजी किएक बनल,एक्कठे किएक नहि बनल? मुदा एक्कठे आरक्षण पुरजी तँ तखन बनैत जखन कि एक्के कोठरी सभदिन उपलब्ध रहैत,जे नहि छल। तेँ उपलब्धताक अनुसार आरक्षण कएल गेल। असलमे जे अपने जेहन होइत अछि तकरा सदिखन तेहने सोचाइत छैक।

गुवाहाटी हबाइ अड्डासँ डेरा अबैत काल टैक्सी बलासँ गप्प-सप्प केलाक बाद लागल जेना एकरा संगे आगिलो यात्राक जोगार लागि सकैत अछि। हम ओकरा कहलिऐक-

“हमरासभकेँ कामाख्या भगवतीक दर्शन करबाक अछि। आनो मंदिरसभ जेबाक अछि। तकर बाद काल्हि गुवाहाटी सहर घुमबाक अछि। बादमे शिलांग आ चेरापुंजी सेहो जा सकैत छी। की तूँ हमरासभकेँ घुमा सकैत छह? ”

“किएक ने? हमर तँ काजे इएह थिक। ”

“कतेक खर्चा लागत?”

“आइ कामाख्या भगवतीक दर्शन कराएब। तकर बाद भुवनेश्वरी भगवती आ आर जतेक पार लागत घुमा देब।”

“खर्चा?”

“अठारह सए लागत।”

“ठीक छैक। तूँ एतहि रूकि जाह। हमहूँसभ तैयार भए जाइत छी। फेर बिदा होएब।”

मंगल दिन रहबाक कारण हमरालोकनिक उपास छल। तेँ भोजन तँ करबेक नहि छल। अस्तु,थोड़बे कालक बाद हमसभ तैयार भए गेलहुँ। ओना माता कामाख्या मंदिरमे विशेष दर्शन पुरजी काल्हुक बनल छल,माने दस अप्रैलक भोरुका पहरक। मुदा हमसभ आइए कामाख्या मंदिर बिदा भए गेलहुँ।

"सभसँ पहिने माताकेँ हाजिरी लगाओल जाए।"-हमसभ सोचलहुँ।

लगभग आधाघंटाक बाद हमसभ कामाख्या मंदिर लग पहुँचि गेल रही। मंदिरक बाहरे एकटा पंडितजीसँ भेंट भेल। हम हुनका कहलिअनि-

"दर्शनक जोगार भए सकैत छैक की?"

"भए जाएत ,मुदा एकहजार रुपया लागत।"

"कोनो बात नहि। नीकसँ दर्शन करा देबैक ने?"

"निश्चिन्त रहू। हमर नित्यप्रतिक इएह काजे अछि।"

हम दुनूगोटे पंडितजीक पाछू-पाछू बिदा भेलहुँ। ओ केना-केना घुमबैत हमरासभकेँ कामाख्या मंदिरक मूल भागमे लेने चलि गेलथि जे गर्भगृहक ठीक सामने छल। गर्भगृहमे पाँति लागल जाइत लोकसभकेँ हम देखि रहल छलहुँ। हमरासभकेँ पंडितजी ओतहिसँ माताक पूजा करबओलथि। तकर बाद हमरासभकेँ प्रसाद आ फूलक संग एकटा दोसर पंडितजीकेँ सुनझा देलनि। ओहिसँ पहिने हुनका पाँचसए रुपया आर देल गेलनि। दोसर पंडितजी हमरासभकेँ कात बाटे लेने-लेने एकठाम ठाढ़ कए देलाह आ अपने प्रसाद लए कए माताक गर्भगृहमे चलि गेलाह।

"अहाँसभ एतहि प्रतीक्षा करू। हम प्रसाद चढ़ा कए आबि रहल छी। "

जेबासँ पहिने ओ हमरासभकेँ मंदिरक देबालपर नारियल फोड़बाक हेतु कहलनि। हम जोरसँ ओकरा पटकि देलिऐक। असलमे नारियलक पानि सामनेक देबालपर ढारबाक रहैक। मुदा ओकर पानि तँ पहिने खसि चुकल छल। एकटा बृद्धा अपन नारियल फोड़बाक हेतु हमरा

कहलनि। हम एहि बेर ओकर तर्क बुझि गेल रहिऐक। ओकरा हिसाबेसँ पटकलिऐक जाहिसँ ओ फुटि तँ गेलैक,मुदा ओकर पानि बाहर नहि खसलैक,बाँचल रहि गेलैक। ओ बहुत प्रसन्न भेलीह आ अपने हाथे ओहि नारियलक पानि देबालपर ढारि देलनि। हमसभ पंडितजीक बाट ताकि रहल छलहुँ। मुदा ओ कतहु देखेबे नहि करथि। मोन औना गेल। ताबे हम पहिलुका पंडितजीकेँ देखलिअनि। ओ हमरासभकेँ आश्वस्त केलनि। बादमे ओएह किछु-किछु आर पूजा करओलनि। कन्याभोजन हेतु किछु दान करबाक हेतु उत्साहित केलनि। श्रीमतीजीक इच्छा देखैत हम छओसए रुपया आर एहि हेतु हुनका देलिअनि। आब हुनका हाथक पूजा समाप्त भए गेल छल। दोसरो पंडितजी प्रसाद चढ़ा कए आबि गेल छलाह। हमसभ हुनकासँ प्रसाद लए बाहर दिस बढ़लहुँ। मंदिरक बाहर बाघ लग दुनू बेकती फोटो घिचओलहुँआ माताकेँ फेरसँ प्रणामक कए हमसभ बाहर बिदा भए गेलहुँ।

पंडितजीक सहयोगसँ कामाख्यामंदिरमे भयाओन भीड़क अछैत हमरा लोकनि आसानीसँ गर्भगृहक बहुत लगीच(मुदा बाहरे) सँ भगवतीक पूजा केलहुँ, बड़ीकाल धरि ओहि परिसरमे रहि आओर पूजा-पाठसभ केलहुँ,माताकेँ गोहरेलहुँ। हमर श्रीमतीजी एहिसँ बहुत संतुष्ट रहथि। नवरात्राक समय छल। ओहिठाम भक्तलोकनिक बहुत भीड़ छल। कैकगोटे बाजथि जे हुनका दर्शनमे भरिदिन लागि गेलनि। कहाँदनि विशेषदर्शनक टिकटक अछैत चारि-पाँच घंटा समय लागि रहल छल। हुनकर स्वास्थ्य से गड़बड़ेबाक डर छल। तेँ हमसभ विशेष दर्शनक टिकटक संग दस अप्रैलक फेरसँ दर्शन करबाक प्रयास नहि केलहुँ।

मंदिरमे बाहर आ भीतर सभक ध्यान आगन्तुकसँ अधिक सँ अधिक रुपैया झिटब छल। जकरे देखू सएह ताहि लेल किछु ने किछु व्योंत केने छल। मंदिरमे भीतर जाइत काल पंडितजी वलिप्रदानक स्थान देखओलथि। अखनहु ओ स्थान रक्तरंजित छल,चारूकात दुर्गंध कए रहल छल। कनीके फटकी निर्दोष छागरसभ अपन जीवनक अंतिम क्षणक प्रतीक्षा कए रहल छल। हमरा मोनमे भेल जे धर्मक नामपर भए रहल एहि अत्याचारकेँ प्रश्रय देब बहुत अन्यायपूर्ण आ अमानवीय थिक। ई सभ

अबस्स बंद हेबाक चाही। तखने जगन्नमाता प्रसन्न भए सकैत छथि। इएहसभ सोचैत हमसभ भुवनेश्वरी मंदिर दिस बढ़ि गेलहुँ।

थोड़बे कालमे हमसभ भुवनेश्वरी मंदिर पहुँचि गेल रही। ई मंदिर कामाख्या भगवतीक मंदिरसँ मोसकिलसँ एक किलोमीटर फटकी नीलांचल पर्वतक आर ऊँच भागमे अवस्थित अछि। एहिठाम चारूकातक वातावरण बहुत सुरम्य अछि। माता दुर्गाकेँ समर्पित ई मंदिर गुवाहाटीक प्रमुख आध्यात्मिक स्थानमे सँ एक मानल जाइत अछि। एतए अंबुबाची मेला बहुत भव्य तरीकासँ मनाओल जाइत अछि। मंदिरक वातावरण बहुत शांत छल। हमसभ बहुत नीक जकाँ दर्शन केलहु,थोड़ेकाल ओतए बैसि माताक आराधना केलहुँ। सामनेमे एक व्यक्ति मंदिरेमे माताक मूर्ति दिस माथ राखि सुतल रहथि। मुदा ककरो ध्यान ओहिपर नहि रहैक। लोक आएल,लोक गेल मुदा ओ ओहिना सुतल पड़ल रहल।

भुवनेश्वरीमंदिरमे दर्शनक बाद हमसभ नवग्रह मंदिर गेलहुँ । टैक्सी बला तँ आरो ठाम लए जेबाक हेतु तैयार छल। मुदा हमही सभ तैयार नहि भेलहुँ। बहुत थाकि गेल रही। भोरे चारिए बजेसँ गुआहाटी जेबाक हेतु तैयारीमे लागल रही। तकर बादसँ किछु ने किछु भइए रहल छल।

“आब सोझे डेरा चलू।“-ओ कहलथि। हमसभ थाकल-ठेहिआएल अपन डेरा पहुँचि गेल रही। आजुक उपलब्धिसँ बहुत संतुष्ट रही,प्रसन्न रही। जतबा सोचने रही ताहिसँ बेसीए पाबि गेल रही।

दस अप्रैल २०२४क भोरे हमसभ तैयार भए गेल रही। भोरुका चाहक प्रतीक्षामे रही। अतिथिगृहक कर्मचारीसभ सुतले रहए। कतहु ककरो कोनो अता-पता नहि छल। चाहकेँ तकैत हमसभ बाहर निकललहुँ। मुदा चारूकात ओएह माहौल छल। जेना सहरे सुतल होअए। बादमे आदरणीय श्री प्रेमकान्त चौधरीजी कहलनि जे एहिठामक जीवन पद्धतिक बारेमे कहबी छैक-लाहे,लाहे,माने जे सभकिछु हेतैक मुदा इतमिनानसँ,कोनो धरफरी नहि,कोनो तनाओ नहि। थोड़े कालक बाद वाहनचालक आबि गेल रहए। तेँ बिना चाह पीने हमसभ घुमबाक लेल बिदा भए गेलहुँ।

आइ सभसँ पहिने उमानंद महादेवक दर्शन करबाक योजना छल। उमानन्द ब्रह्मपुत्र नदीक बीचोबीच मोर द्वीप पर स्थित प्रसिद्ध शिव मंदिर अछि । कहल जाइत अछि जे उमानंद नदीक बीचमे अवस्थित दुनिआक सभसँ छोट द्वीप थिक। एहि मंदिरकेँ १६९४ ई. मे राजा गदाधर सिंहक आदेश पर बनाओल गेल छल, मुदा १८६७ मे भूकंप सँ ई क्षतिग्रस्त भए गेल रहए। एहि मंदिरमे किछु चट्टान कटल आकृति अछि, जे असमिया कारीगरक निपुण कौशलक परिचायक थिक। ब्रह्मपुत्रमे पानि कम भए गेल छल। वाहनचालक टैक्सीकेँ बाउलेमे चला कए हमरासभकेँ आगू धरि पहुँचा देलक। तकर बाद ओ उमानंद जाए बला स्टीमरक पता लगओलक। हमसभ ओहि स्टीमर पर पहुँचैत छी। दूटा बृद्ध यात्री पहिनेसँ ओहिपर बैसल रहथि। ओ एकटा निजी स्टीमर छल। ओकर प्रतिव्यक्ति एक दिसक दूसए टिकट छलैक। मुदा ओकर व्यवस्थापक चारू यात्रीकेँ दू हजारमे उमानंद लए जाएत आ वापसो आनत। आर यात्रीक प्रतीक्षा नहि करए पड़त। हमसभ एहि लेल तैयार भए गेलहुँ। ओहो दुनूगोटे अपन सहमति देलखिन। तकरबाद स्टीमर खुजि गेल।

ब्रह्मपुत्र नदीमे चलैत स्टीमरक बहुत आनन्दमय दृश्य छल। चारूकात शांत आ मनोरम वातावरणमे आगू बढ़ैत स्टीमरक दृश्य देखैत बनैत छल। हमसभ मोसकिलसँ पन्द्रह मिनटमे उमानन्द मंदिर लग पहुँचि गेल रही। स्टीमर रूकि गेल छल। ओहिपर सँ उतरब आ तकर बाद करीब साठिटा सीढ़ी चढ़ब कनी कष्टकर काज छल। हमरोसँ बेसी बएसक छलाह ओ दुनू यात्री। बंगालक कोनो गामसँ आएल छलाह। पत्नी हृदयरोगी छलखिन। तथापि उत्साहपूर्वक सीढ़ी चढ़ि रहल छलाह। हमहूँसभ हुनके संगे आगू बढ़ि रहल छलहुँ। बीच-बीचमे सुस्ताइतो छलहुँ। मंदिर परिसरमे पहुँचि हमसभ बहुत प्रसन्न रही,आनन्दमे रही। ओहिठाम कैकटा मंदिर अछि। बेरा-बेरीसभमे दर्शन केलहुँ। पंडितजी हमरालोकनिकेँ किछु-किछु मंत्र पढ़ओलनि,पूजा करबओलनि। हमसभ यथासाध्य दक्षिणा देलिअनि। तकर बाद बाहर निकलि थोड़ेकाल बैसलहुँ। कहि नहि सकैत छी जे ओ क्षण कतेक आनन्ददायक छल। ओहिठामसँ उठबाक मोन नहि भए रहल छल। मुदा स्टीमरसँ वापसी छल। बहुत काल नहि रहि सकैत छलहुँ। अस्तु,हमसभ थोड़ेकालक बाद वापस भए गेलहुँ। स्टीमरपर उतरब आ

चढ़ब दुनू मोसकिल काज छल। कारण तकर कोनो नीक ओरिआन नहि छल। स्टीमर जेना-तेना खुटेसल छल। लगपासमे राखल पाथरसभकेँ पकड़ि ओहिपर पहुँचबाक छल। जेना-तेना हमसभ वापस स्टीमरपर पहुँचि गेल रही। ओ आब फेर ब्रह्मपुत्र नदीमे वापसी यात्रापर चलि रहल छल। हमसभ एही पृथ्वीपर स्वर्गक आनन्द लए रहल छलहुँ ,मंत्रमुग्ध छलहुँ । ताबतमे स्टीमर बला अबाज देलक-

"उतरैत जाउ ।"

घाट आबि गेल छल। हमसभ स्टीमरसँ उतरलहुँ। टैक्सी बला हमरसभक प्रतीक्षा कए रहल छल। हमसभ टैक्सीपर बैसि आगू बढ़ि गेलहुँ।

आब हमरासभकेँ भूख लागि गेल छल। जलखै करब जरूरी छल। तकर बादे आगू बढ़ब। से बात टैक्सी बलाकेँ हम कहि देने रहिऐक। अस्तु,थोड़ेकालक बाद एकटा जलपानगृह लग टैक्सी रुकल। हमसभ ओतए नीकसँ जलखै केलहु,चाह पीलहुँ। टैक्सी बला हमरसभक आग्रहपर अपन पसिंदक जलखै-रसगुल्ला संगे चाह पीलक। हमसभ ओकर पसिंदसँ चकित रही। मुदा बादमे पता लागल जे ओहिठाम इएह चलैत छैक। जलखै केलाक बाद हमरासभकेँ आब फुरती आबि गेल छल। हमसभ टैक्सीपर बैसलहुँ आ बिदा भेलहुँ ब्रह्मपुत्र नदीक ओहिपार बनल डौल गोबिंद मंदिरमे दर्शनक हेतु। एहि मंदिरक निर्माण करीब एकसए पचास साल पुर्व कएल गेल छल। सन् १९६०मे एकर पुनर्निमाण कएल गेल। मंदिरमे फगुआ आ जन्माष्टमीक समय विशिष्ट आयोजन कएल जाइत अछि। एहिठाम पाँचदिन धरि फगुआक आयोजन होइत अछि। भगवान कृष्णक मंदिर हेबाक कारण एहिठाम जन्माष्टमी तँ बहुत नीकसँ मनाओले जाइत अछि। एहि मंदिरमे प्रसादक रूपमे बहुत नीक खीर खेबाक अवसर भेटल। एहन नीक खीर हमरा गामक कुट्टीपर झूलामे बनैत छल,से मोन पड़ि गेल। खीर खेबाक लालचमे हम दोबारा प्रसाद लेलहुँ। तकर बाद ओहिठामसँ बिदा भेलहुँ।

उमानंद मंदिरमे सीढ़ी चढ़बाक कारणसँ हमर श्रीमतीजी थाकि गेल रहथि,माथ से दुखेनाइ शुरू भए गेल रहनि। हुनकर दिक्कति बुझा रहल छल। तेँ आब बेसी नहि घुमि सकैत छलहुँ। तथापि घुरतीमे वशिष्ठ मंदिर गेलहुँ । बीचमे बालाजी मंदिर सेहो आएल। मुदा हमसभ एहिठाम नहि

रुकलहुँ। कहल जाइत अछि जे वशिष्ठ मंदिरक स्थापना वशिष्ठ मुनि केने छलाह। एहिठाम हुनकर आश्रम छलनि। एहिठाम कैकटा जलधारा बहैत अछि जे आगू जा कए वशिष्ठ नदी आ वाहिनी नदीक रुपमे सहर दिस बढ़ि जाइत अछि। हमसभ एहिठाम दर्शन केलहुँ, थोड़े काल सुस्तेलहुँ आ वापस अपन डेरा दिस बिदा भए गेलहुँ।

मंदिरसभमे अबैत-जाइत काल गुवाहाटी सहरक विभिन्न स्थानसभ सेहो देखैत गेलहुँ। पुरान आकार-प्रकारक एहि सहरक लोकसभ अपने ओहिठाम जकाँ लगैत छल। आसामी भाषाकक प्रति बेस अनुराग ओहिठामक लोकसभमे देखाएल। हिन्दी अखबार तकलोपर नहि भेटल। सभठाम नामपट्टपर असमिआ भाषामे विवरण लिखल छल। स्थानीय लोकसभ आसामी भाषामे गप्प केलासँ बेसी सहज देखाइत छल। की मधुबनी,दरभंगामे मैथिलीक वर्चस्व एहिना देखाइत अछि?उत्तर हमसभ जनैत छी।

शिलांग चेरापुंजीक यात्रा

पछिला दू दिनसँ ओ टैक्सी बला हमरा संगे काज कए रहल छल। कुलमिला कए हमरा ओ ठीक आदमी बुझाएल । ओकर कार छोट जरूर छलैक,मुदा ओ ठीक हालतिमे रहैक आ ओ चलबितो नीक रहए। पहाड़पर छोट वाहन बेसी बढ़िआँ होइत छैक। से सभ सोचि कए हम टैक्सी बलासँ शिलांग आ चेरापुंजी जेबाक बारेमे ओकर मंतव्य पुछलिऐक। ओ तँ जेना बाटे ताकि रहल छल।

“किएक ने जाएब।“- ओ छुटले बाजल।

“कतेक खर्चा हेतैक?”

“यदि भोरे पाँच बजे बिदा होइ तँ ओहीदिन राति धरि हमसभ गुवाहाटी लौटि सकैत छी। कतहु रहबाक प्रयोजन नहि होएत। यदि से करी तँ छओ हजार लागत।”

“हमसभ बूढ़ थिकहुँ। एक्के दिनमे चेरापुंजी गेनाइ ,भरिदिन ओतए घुमनाइ ,फेर रातिएमे गुवाहाटी लौटि गेनाइ संभव नहि अछि। मोन खराप भए जाएत तखन? फेर हमरासभकेँ शिलांगमे रहबाक ओरिआन अछि।

ओहिठाम रूकि गेलासँ सुस्ता लेब,शिलांग से घुमि लेब। दोसर दिन साँझ धरि गुवाहाटी लौटि जाएब।”

“तखन दू हजार आर लागत,माने दुनू दिनका भाड़ा आठ हजार।”

“कोनो हरजा नहि।”

तकर बादो ओ हमरासभकेँ मनेबाक प्रयास करैत रहल जे हमसभ एक्केदिनमे वापस भए जाइ। कहैत रहल-“शिलांगमे बहुत दिक्कति छैक,ओहिठामक पुलिस बहुत खच्चर होइत छैक। लोकोसभ कोना दनि,लगबे नहि करत जे अपने देश मे छी। हमरा तँ ओ जगह एकदम नीक नहि लगैत अछि। ओहिठाम खेबाक से बहुत दिक्कति छैक।“

जखन ओ अपने बात दोहरबैत रहल तँ हमसभ कहलिऐक-

“कोनो बात नहि। जखन तोरा नहि जेबाक मोन छह तँ हमसभ दोसर टैक्सी कए लेब।”

बात गड़बड़ाइत देखि ओ तुरंत तैयार भए गेल। मुदा पाँचसए रात्रि शुल्क अतिरिक्त लेत। हमसभ सेहो मानि गेलिऐक। तकर कारण ई जे ओ हमरा लोक ठीक बुझाएल। जाइत-जाइत ओ कहलक-

“हम भोरे पाँच बजे आबि जाएब। अहाँसभ तैयार रहब।”

“ठीक छैक।”

ओ चलि गेल। हमहूँसभ अपन डेरा वापस आबि गेलहुँ। मुदा डेरापर लौटलाक बाद हमर श्रीमतीजीक मोन बहुत खराप भए गेलनि। माथ दर्द,आर किछु,किछु समस्यासभ भए गेलनि। ओ दबाइ खेलथि आ सुति रहलथि। मुदा हम चिंतामे पड़ि गेलहुँ।

“एहन हालतिमे एतेक दूर कोना जा सकब?यदि मोन बेसी खराप भए गेलनि तखन?”

हम टैक्सी बलाकेँ फोन कए सभबात कहलिऐक। ईहो कहलिऐक जे काल्हि भोरे अपन घरसँ बिदा होमएसँ पूर्व एकबेर हमरा फोन कए लेत।

भोरे चारिबजे हम उठि गेलहुँ। हमर श्रीमतीजे सेहो जगले रहथि। स्वास्थ्यक बारेमे पुछलिअनि। कहलथि-“आब हम ठीक छी,चलि सकैत छी।”हुनकर बात सुनि मोनमे बहुत उसास भेल। हम तुरंत टैक्सी बलाकेँ फोन केलिऐक-“समयपर आबि जइअह।”

“ठीक छैक।”

हमसभ पाँच बजे भोरे तैयार भए गेल रही। एहि समयमे ओतए चाह भेटबाक कोनो जोगार नहि छल। अस्तु,हमसभ डेरासँ निकलि गेलहुँ। बाहर वाहनचालक प्रतीक्षा कए रहल छल। हमसभ टैक्सीमे बैसलहुँ आ शिलांग होइत चेरापुंजीक यात्रापर आगू बढ़ि गेलहुँ। सौंसे सहर शांत छल। जेना सभ सुतले होअए। ई तँ बुझाइए गेल छल जे भोरुका पहरमे एहिठाम देरीसँ कारबार शुरू होइत अछि। तेँ आब ओही हिसाबसँ कार्यक्रम बनाबी। थोड़बे कालक बाद हमसभ मेघालयक सीमा लग आबि गेल रही। सड़कक एक दिस आसाम आ दोसर दिस मेघालय। मेघालय मूलतः पहाड़ीपर बसल अछि। एहिठाम क्रिश्चन जनसंख्या बेसी अछि। तेँ सौंसे चर्च देखाएल। एकाधटा मस्जिद सेहो देखाएल,मुदा मंदिर एकटा नहि देखाएल। यदि कतहु रहबो कएल होएत तँ हमर सभक यात्रामार्गमे तँ नहिए छल। जेना-जेना हमसभ आगू बढ़ैत गेलहुँ तेना-तेना जंगल-पहाड़सभ देखा रहल छल। चारूकात हरिअर कंचन दृश्य छल। मौसम से बहुत नीक छल। क्रमशः बेसी ठंढ बुझा रहल छल। वाहनचालक तेजीसँ अपन वाहन चला रहल छल। ओ हमरासभकेँ रस्तामे प्रमुख स्थानसभक बारेमे बतबैत जा रहल छल। लगभग साढ़े सात बजे भोरे हमसभ शिलांग स्थित आयकर विभागक अतिथिगृह पहुँचि गेल रही। ओहिठाम पहिने फोन कए देने रहिऐक। जाइते देरी चाह बनि गेल। हमसभ चाह पीलहुँ। थोड़े काल सुस्तेलहुँ आ चेरापुंजीक लेल बिदा भए गेलहुँ।

शिलांगसँ चेरापुंजीक सड़कमार्गसँ ५७ किलोमीटर फटकी अछि। ई यात्रा अत्यंत मनोरम अछि। सड़कक दुनूकातक दृश्य अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्यसँ भरल अछि। थोड़े-थोड़े फटकी जलप्रपातसभ देखाइत अछि। असलमे गुवाहाटीसँ शिलांगक यात्रा अद्भुत प्राकृतिक दृश्य सभसँ भरल अछि। एक सँ एक दृश्य सामने अबैत रहल,ओकरा हमसभ देखैत

रहलहुँ,किछुकेँ अपन मोबाइल कैमरामे सुरक्षित रखैत गेलहुँ। ओहि मनोरम दृश्यसभमे किछुक बारेमे एतहु चर्च करैत छी।

शिलांग सहरसँ लगभग दसमिनटक बाद जमीनक सतहसँ १९६६ मीटर ऊँचपर अवस्थित अछि शिलांग पिक भ्यु प्वाइंट । ई स्थान बेसीकाल मेघसँ आच्छादित रहैत अछि। ओना मेघ तँ सामान्यतः एहि इलाकामे रहिते अछि। तेँ तँ एहि प्रान्तक नाम मेघालय राखल गेल अछि। एहिठामसँ शिलांग सहरकेँ संपूर्णतासँ देखल जा सकैत अछि। एहिठामसँ बंगलादेशक सीमा सेहो देखल जा सकैत अछि।

नोहशंगथियांग जलप्रपात मेघालयक पूर्वी खासी पहाड़ी जिलाक मावसई गाममे अवस्थित अछि, तेँ एकरा मावसई जलप्रपात सेहो कहल जाइत अछि। नोहशंगथियांग जलप्रपातक पानि लगभग १०३३ फीटक ऊंचाईसँ खसैत अछि जे सात भागमे विभाजित भए जाइत अछि। अस्तु,एहि जलप्रपातकेँ सेवन सिस्टर फॉल्स सेहो कहल जाइत अछि।

सोहरा सर्किटक शुरूएमे चेरापूंजी सहर सँ करीब १५ किलोमीटर दूर अवस्थित मॉकडोक डिम्पेप वैली व्यू सड़कसँ कनीके फटकी घाटीक मनोरम दृश्य देखाइत अछि । मॉकडोक डिम्पेप वैली व्यू चेरापूंजी के मौसिनराम जिलामे स्थित अछि। हमसभ एहिठाम थोड़े काल रुकलहुँ। सड़कक कातमे मकइक भुट्टा बिका रहल छल। भूख लगले रहए। हमदुनू बेकती दूटा मकइक भुट्टा कीनलहुँ। बड़ीकाल धरि ओकरा खाइतो रहलहुँ आ ओहिठामक अद्भुत दृश्यो देखैत रहलहुँ।

किनरेम जलप्रपात मेघालयक पूर्वी खासी हिल्स जिलेमे चेरापूंजीसँ बारह किलोमीटर फटकी अवस्थित एकटा आश्चर्यजनक जलप्रपात थिक। ई मेघालयक पूर्वी खासी हिल्स जिलामे चेरापूंजीक लोकप्रिय आकर्षण थांगखरंग पार्कक नामसँ प्रसिद्ध सुंदर पार्कक भीतर स्थित अछि। एकर ऊंचाई १००१ फीट अछि। ई भारतक सातम सभसँ ऊंच जलप्रपात थिक। किनरेम जलप्रपात तीन स्तरीय जलप्रपात छैक। ई जलप्रपात दू अलग-अलग धारामे पसरल छैक जे नीचाँ खसैत काल एक-दोसरमे मिलि कए आर तेजीसँ आगू बढ़ि जाइत अछि।

एकबजे धरि हमसभ चेरापुंजीक आसपासक महत्वपूर्ण स्थानसभ घुमैत रहलहुँ। वाहनचालक बेर-बेर बंगलादेशक क्षेत्रकेँ देखेबाक प्रयास करैत-

"ओएह देखू। बंगला देशमे लाइट जरि रहल अछि। आइ ओकरसभक पावनि छैक। तेँ उत्सव कए रहल होएत।"

आब सभकेँ बहुत भूख लागि गेल रहैक। वाहनचालक हमरासभकेँ पूर्ण शाकाहारी भोजनालय आरेंज रूट्स लए गेल। ओहिठाम बहुत भीड़ छल,मुदा व्यवस्थो गजब छल। लगबे नहि करैक जे एतेक लोक एक्केठाम भोजन कए रहल अछि। सभसँ पहिने पसिंदक भोजनक पुरजी कटाबक छल। हम ओहि खिड़की लग गेलहुँ। पुरजी काटएसँ पहिने ओ महिला पुछलक-"आधा घंटा प्रतीक्षा करए पड़त।"

"कोनो बात नहि।"

"हम ओकरा अपन पसिंद बतलिऐक,लोकक संख्या कहलिऐक,आ ओ तकर मूल्य बता देलक। हम तुरंत आनलाइन भुगतान कए देलिऐक। ओ हमरा पुरजी दए देलक। तकर बाद ओहि पुरजीकेँ एकटा महिलाकेँ दखए देलिऐक। ओ हमर नाम लिखि लेलक आ कहलक-

"अहाँसभ बैसि जाउ। हम आधाघंटामे बजा लेब।

ठीक आधाघंटाक बाद ओ महिला हमर नाम लेलक। हमसभ तुरंत ओकरा लग पहुँचैत छी। ओ हमरासभकेँ बैसबाक स्थान दिस इसारा करैत अछि। हमसभ अपन सीटपर जा कए बैसि गेलहुँ। तकर बाद तँ एक सँ एक महिला बारिकसभ घुमए लागल। तरह-तरहक भोजनक सामग्री प्लेटमे देने जाए। जे खाइ,जतेक खाइ। सभ बारिक महिले छलि आ से अभूतपूर्व व्यवस्थाक संग भोजन करा रहल छलीह। हमसभ भरिपेट भोजन केलहुँ आ बहुत आश्वस्त भावसँ ओहिठामसँ बिदा भेलहुँ। ओतहिसँ रामकृष्ण आश्रमक भवन सेहो देखा रहल छल। मुदा हमसभ ओतए जा नहि सकलहुँ। आब वापस शिलांग बिदा हेबाक छल। हमसभ टैक्सीपर बैसलहुँ। वाहनचालक सेहो भोजन कए चुकल छल। जल्दीए टैक्सी तेजीसँ वापसी यात्रा शुरू कए चुकल छल। फेर ओएह रमनगर दृश्यसभ देखैत-सुनैत

लगभग चारिबजे हमसभ शिलांग स्थित अपन अतिथिगृह पहुँचि चुकल छलहुँ।

रातिभरि शिलांग अतिथिगृहमे विश्रमाक बाद हमसभ भोरे चाह-जलखैक बाद लगभग नओ बजे शिलांगक हेतु टैक्सीसँ बिदा भेलहुँ। काल्हि शिलांगसँ चेरापुंजी जेबाक क्रममे शिलांग आ ओकर आसपासक अधिकांश प्रमुख स्थानसभ देखिए लेने रही। आइ जाइत-जाइत सेहो हमसभ वार्ड झील पहुँचलहुँ। एहि झीलमे वरिष्ठ नागरिकक प्रवेश हेतु मात्र दस रुपया लगैत अछि। हमसभ बीस रुपयामे दूटा टिकट लए कए एहिमे प्रवेश केलहुँ। तत्कालीन आयुक्त सर विलियम वार्डक आदेशपर कर्नल हॉपकिंस द्वारा एहि झीलक निर्माण वर्ष १८९४ मे कएल गेल छल। एहि झीलक चारूकात बहुत सुंदर-सुंदर फूलसभ लागल अछि। झीलक बीचमे काठक पूल अछि जाहि ठामसँ लोक अपने हाथे पानिमे हेलैत माछसभकेँ खुआ सकैत अछि। झीलमे नौकायनक सुविधा सेहो अछि। अनेक पर्यटकसभ ओहिठाम घुमैत रहथि। हमहूँसभ थोड़ेकाल ओतए बैसलहुँ। किछु फोटो खिचलहुँ। तकर बाद हमसभ शिलांगसँ पन्द्रह किलोमीटर फटकी शिलांग-गुवाहाटी सड़कपर अवस्थित उमियम झील लग रुकलहुँ। २२० किलोमीटरमे पसरल ई शिलांगक सभसँ पैघ कृतिम झील थिक। एहि कृतिम झीलक निर्माण जलविद्युत उत्पन्न करबाक लेल कएल गेल छल। चारू दिस पसरल सिल्वन पहाड़ी आर हरियर खासी चीड़ वृक्ष एहि विशाल झीलक वैभवकेँ कैक गुणा बढ़ा देने अछि।

फोटोमे उमियम झीलक पानि हरिअर रंगक देखाइत अछि। तकर कारण अछि उमियम झीलक चारूकात पसरल बृक्षसभ,जकर छाया पानिमे पड़ैत रहैत छैक । वाहनचालकक इच्छा रहैक जे हमसभ कनी नीचाँ उतरी,झीलक पानिमे अथवा ओहिसँ सटले ठाढ़ होइ । तखन ओकर वीडियो बनाओल जाए। मुदा ओहिठाम नीचाँ दिस बहुत ढलान रहैक,हिनकर ठेहुनमे समस्या रहिते छन्हि। कनीको संतुलन बिगड़लापर दुर्घटना भए सकैत छल। ई बात ओ बुझि नहि रहल छल। हमसभ थोड़े कालक बाद ओहिठामसँ बिदा भए गेलहुँ। आब सोझे गुआहाटी जेबाक छल। टैक्सी तेजीसँ आगू बढ़ि रहल छल। ओएह रस्ता,ओएह दृश्यसभ

फेरसँ सामने आबि रहल छल। हमसभ तकर आनन्द लैत आगू बढ़ैत रहलहुँ। आपसमे गप्प-सप्प करैत हमसभ एक बजे अपन अतिथिगृह पहुँचि गेल रही। तकर बाद हमसभ ओतए भोजन केलहुँ आ मोनमे सफल यात्राक संतुष्टि भावक संग भरिदिन विश्राम केलहुँ।

चीरोभाइ(पंडित श्री रत्नेश्वर मिश्र)

एहि बेरक कामाख्या यात्राक दूटा अविस्मरणीय प्रसंग छल हमर पितिऔत चीरो भाइसँ सपरिवार भेंट आ आदरणीय श्री प्रेम कान्त चौधरीजी हुनकर मित्र सहयोगी लोकनिसभसँ भेंट-घाँट। हम अपनयात्राक अंतिम दू दिन एही सभ हेतु बचा कए रखने रही। हम गुवाहाटी जेबाक कार्यक्रम बनएसँ पहिने चीरो भाइ(पंडित श्री रत्नेश्वर मिश्र) कैँ फोन केने रहिअनि। ओ पचासो सालसँ गुवाहाटीमे रहैत छथि। ईहो बुझल छल जे ओ ओहिठाम कामाख्या मंदिरसँ जुड़ल छथि। तेँ ओ माताक दर्शनमे मदति कए सकैत छथि। कार्यक्रम जखन बनि गेल,टिकट कटि गेल,गुवाहाटीमे पाँच दिन रहबाक जोगार ओहिठामक सीपीडब्लुडी अतिथिगृहमे भए गेल तखनो चीरोभाइकैँ फोन नहि केलिअनि। कारण श्रीमतीजी कहलनि जे माताक दरबारमे जा रहल छी,ओ स्वयं देखथिन।ककरो किछु कहबाक काज नहि। ओना हमर एकटा मित्र स्थानीय वरिष्ठ अधिकारीकैँ हमरासभकैँ मदति करबाक हेतु फोन कए देलखिन। हमरा हुनकर मोबाइल नंबर सेहो देलनि। हम हुनकासँ गप्पो केलहुँ। मुदा हुनकर पैरबीमे कोनो जान नहि बुझाएल। तकर बाद हम छोड़लहुँ हुनकर चक्कर।

हम १७ मार्च २०२४ कए जखन गाम जाइत रही तखन चीरो भाइक फोन आएल।

"अहाँक गुवाहाटी यात्राक कार्यक्रम केना की भेल? हमसभ उत्सुकतासँ बाट ताकि रहल छी।"

"नओ अप्रैलक टिकट कटा लेने छी।अखन गाम जा रहल छी। ओहिठामसँ लौटि कए हम फोन करब।"

तकर बाद हम गाम गेलहुँ,वापसो आबि गेलहुँ,किछु समयो बीति गेल मुदा हम हुनका फोन नहि कए सकलिअनि। तकर कारण तँ ऊपर लिखिए चुकल छी। ठीक नओ अप्रैल कए जखन हम कामाख्या मंदिरमे रही हुनकर फोन आएल। मुदा हम मिसकाल बादमे देखलिऐक। कारण मंदिरमे ततेक हल्ला होइत रहैक जे फोनक घंटी सुनबाक सबाले नहि होइत अछि। मंदिरसँ पूजा केलाक बाद जखन बाहर निकललहुँ तखन फेर हुनकर फोन आएल। एहिबेर फोनसँ गप्प भेल-

“हमसभ गुवाहाटी आबि गेल छी। माताक दर्शन करैत रही। तेँ फोन नहि देखि सकलहुँ।”

“हम अहाँकेँ लेबाक हेतु कखन आउ। आनठाम किएक ठहरल छी? हमरे ओहिठाम रहू। अपन घर अछि।कष्टे सही, संगे रहब,गप्प-सप्प करब।”

“ से तँ सत्ते। मुदा हमरा रहबाक नीक जोगार भए गेल अछि। तेँ तकर चिंताक बात नहि अछि। ओना हम अहाँक ओहिठाम अबस्स आएब। हमरो अहाँसँ भेंट करबाक हेतु बहुत मोन लागल अछि। ”

“ठीक छैक। हमरा फोन कए देब। हम अपन गाड़ीसँ अहाँकेँ लए आनब।”

चीरो भाइक आग्रहसँ हम चकित रही। ओना ओ हमर पितिऔत भाइ छथि,नेनेसँ संगी सेहो छथिहे। मुदा एतेक साल बीति गेलैक,कतेक तरहक बात भेलैक,तैओ ओ ओहिना भाव रखने छथि,अपितु बेसी घनिष्टता बुझा रहल अछि,से सोचि अभिभूत रही। नओसाल पहिने भतीजीक बिआहमे गामपर हुनकासँ भेंट भेल रहए सेहो कतेको सालक बाद से नहि मोन पड़ि रहल अछि। ओ हमरा गामक संस्कृत पाठशालासँ उत्तरमध्यमाक परीक्षा पास केने रहथि। थोड़ेक दिन गामेमे किछु-किछु केलथि। एकदिन अपन दोकानपर बैसल रहथि कि हुनकर पित्ती कहलखिन-

“पढ़ो फारसी बेचो तेल,देखो भाइ किस्मत के खेल।”

बस ई बात हुनकर मोनमे गड़ि गेलनि। ओही समयमे गुवाहाटीमे रहैत हुनकर सार किछु काजसँ हुनका ओतए बजओलखिन। बस ओहि

अवसरकेँ फएदा उठबैत ओ गामसँ गुवाहाटी बिदा भए गेलाह।तकरबाद जे ओ गुवाहाटी गेलाह से पचास वर्षसँ ओतहि छथि। आब तँ हुनका गुवाहाटीमे दूमहला मकान छनि,एकटा विकसित परिवार छनि। मधुबनीमे सेहो ओ मकान बनओने छथि। सालमे एक-दू बेर मधुबनी ,गाम जाइते रहैत छथि।

चीरो भाइक संघर्षक गाथा रोमांचक अछि। यद्यपि ओ संस्कृत पढ़ने रहथि,तथापि मेहनति कए अंग्रेजी सिखि कए सातमा धरिक अंग्रेजी माध्यमक बच्चासभकेँ सभ विषय ट्युशन पढ़बैत रहथि। ई काज ओ सोलह साल धरि केलथि। मनुष्यक जीवनमे कखनो काल एहन घटना घटित भए जाइत अछि जे ओकर दशा आ दिशा बदलि दैत छैक। गुवाहाटीमे एकबेर कोनो यज्ञ होइत रहैक। ओहिमे हुनको पंडितक काज हेतु आमंत्रित केलकनि। ओ ओहिठाम गेबो केलाह। ओहिमे हुनका एकावन टाका भेटितनि। मुदा ओहिठाम गेलाक बाद हुनका काज नहि देलकनि। केओ षड़यंत्र कए हुनकर नाम कटबा देलकनि। एहि बातसँ हुनका बहुत कष्ट भेलनि। कारण ओ हुनकर संघर्षक समय छल। एकावन टाका बहुत माने रखैत छल। हुनकर नाम एहि लेल काटि देलकनि जे ओ शिक्षकक काज करैत छथि,पंडिताइ नहि करैत छथि। चीरो भाइ तुरंत ओहिठाम उपस्थित पंडितसभकेँ चुनौती देलखिन। बात बहुत गरमा गेलैक। दोसर दिन भेने फेर ओहीठाम हुनका एकटा विद्वानसँ भेंट भेलनि। ओ संस्कृतमे हुनकासँ कैकटा प्रश्न पुछलखिन। चीरोभाइ सभटा प्रश्नक उत्तर सही-सही दए देलखिन। हुनकर संस्कृतक ज्ञान आ वुद्धिमत्तासँ ओ बहुत प्रभावित भेलाह आ हुनका पंडिताइ करबाक हेतु प्रेरित केलाह। तकर बादे ओ पंडिताइ शुरू केलनि जे अखन धरि चलिए रहल छनि। ओहिसँ हुनका बहुत नीक आमदनी भए जाइत छनि।

गुवाहाटीमे रहैत चीरोभाइ अपन कैकटा भाएसभकेँ नौकरी धरबओलनि। ओ सभ अपन-अपन क्षेत्रमे बहुत विकास केलाह। अखनहु ओ अपन एकटा विधवा बेटी सहित हुनकर तीनटा संतानक पालन-पोषण कए रहल छथि। ओ सभ बहुत नीक शिक्षा प्राप्त कए रहल छथि। एक व्यक्ति संघर्ष कए अपन जीवनकेँ कोना पलटि सकैत अछि तकर एकटा जीवंत उदाहरण छथि चीरो भाइ।

नओ अप्रैल २०२४ कए गुवाहाटी पहुँचलाक बाद चीरो भाइक फोन कैक बेर अबैत रहल। ओ आग्रहपर आग्रह करैत रहलाह जे हमरे ओतए रहू,एहिठाम एसी बला कोठरी अहाँक प्रतीक्षा कए रहल अछि। नवरात्रा चलि रहल छलैक। हुनका अपना घरमे तँ पाठ करबेक रहनि,आनोठाम भरि दिनका व्यस्तता चलि रहल छलनि। हम कहलिअनि जे गुवाहाटी घुमलाक बाद शिलांग जाएब,चेरापुंजी जाएब । तकर बाद गुवाहाटी लौटब। तखन अहाँसभसँ अबस्स भेंट करब। हम १२ अप्रैलक एक बजे शिलांगसँ वापस आबि गेल रही। तकर बाद भोजन कए विश्राम करैत रही कि चीरो भाइक फेर फोन आएल। ओ कहलाह-

"हम साँझमे आबि रहल छी। वापसीमे अहाँसभ संगे चलब। "

"अखन हमसभ बहुत थाकल छी। आइ कतहु गेनाइ संभव नहि बुझाइत अछि। ओना अहाँ आबी तँ स्वागत अछि।"

"कोनो बात नहि। हम काल्हि भोरे आठ बजे फोन करब।"

"ठीक छैक।"

भोरे फेर हुनकर फोन आएल। ओ नओ बजे वाहनक संगे अओताह। हमसभ ठीक नओ बजे तैयार रही। मुदा चीरोभाइकेँ अएबामे देरी भए गेलनि। टैक्सी बला विलंबसँ आएल छल। तकर बाद करीब साढ़े दस बजे ओ हमरसभक अतिथिगृह पहुँचलाह। बेस पैघ गाड़ी छल। हमसभ बाहरे प्रतीक्षा करैत रही। तुरंत गाड़ीमे बैसि हमसभ गप्प-सप्प करैत आधा घंटामे हुनकर आवासपर पहुँचि गेलहुँ। हमरासभकेँ देखितहि चीरो भाइक समस्त परिवार हमरासभक स्वागतमे लागि गेलाह। हुनकर दुनू नातिन,नाति, पुतहु,बेटी,पत्नी सभगोटे ततेक प्रसन्न रहथि जकर वर्णन करब मोसकिल। चीरोभाइ करीब घंटा भरि अपन संस्मरण,जीवनक संघर्ष गाथा सभ सुनबैत रहलथि। कहि नहि सकैत छी जे कतेक अपनत्वक भाव छलनि हुनकर गप्प-सप्पमे । आब भोजन तैयार भए गेल छल। हमसभ भोजनपर बैसलहुँ। अनेक प्रकारक व्यंजनसँ परिपूर्ण भोजनक आनन्द लेलहुँ। थहि-थहि भए गेल। अंतमे पान-सुपारी सेहो भेलैक।

आब चलबाक उपक्रम शुरू भेल।

एकटा बात लिखब तँ छुटिए गेल। चीरो भाइक कुकुरक अपनत्व सेहो वर्णनीय अछि। ओकरा भोजनमे विलंब भए गेल रहैक । तेँ ओ रुसि गेल छल। बाजि नहि रहल छल,भुकि नहि रहल छल। चुपचाप पड़ल छल। ओकरा चीरोभाइ बहुत दुलार-मलार कए बौसलनि। तकर बाद ओकरा अपने हाथे खुओलनि। भोजन केलाक बाद ओकरामे तेजी आएल। ओ एमहर-ओमहर घुमए लागल। सभसँ आश्चर्य तखन लागल जखन बिदा होइत काल ओ हमरासभसँ पहिने वाहनचालकक बगलमे जा कए बैसि गेल। ओ किन्नहु गाड़ी छोड़बाक हेतु तैयार नहि छल। बहुत मोसकिलसँ ओकरा गाड़ीसँ बाहर कएल गेल। तकर बादो ओ स्कूटीपर जा कए बैसि गेल। हमसभ चीरो भाइक गाड़ीपर बैसि गेल रही। कतबो कहलिअनि जे हमसभ ओला कए चलि जाएब। मुदा ओ नहि मानलाह। हमरासभकेँ अपने गाड़ीसँ बिदा कइए कए मानलथि। बिदा होअएसँ पहिने समस्त परिवारक संग फोटो खिचल गेल। हमरासभकेँ बिदाइ सेहो देल गेल। तकर बादे हमसभ ओहिठामसँ हुनके गाड़ीसँ अपन डेरा दिस आगू बढ़लहुँ।

चीरो भाइ हुनकर परिवारक सदस्यलोकनिक संग बिताओल गेल समय हमर सभक गुवाहाटी यात्राक अविस्मरणीय क्षण छल। एहन अपनत्व,स्वागत हेतु एतेक आतुरता आ व्यवहारक ओ माधुर्य आजुक समयमे बहुत दुर्लभ अछि। हमसभ अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक हुनका ओहिठाम रहलहुँ। ओहिठामसँ वापस अएलाक बादो कतेक काल धरि हुनके लोकनिक चर्चा करैत रहलहुँ। असलमे चीरो भाइ एकटा सफल संघर्षक नायक छथि। जीवनमे सभ तरहक उठा-पटक देखि-भोगि एकटा सुंदर आ प्रशंसनीय ठेकानपर पहुँचि गेल छथि,प्रशंसनीय उपलव्धि प्राप्त केने छथि। से तँ जे छनि से छनि,ओ हृदयक बहुत उदार आ भावुक व्यक्ति छथि। ईश्वर हुनका लोकनिकेँ एहिना सतत सुखी आ संपन्न राखथि सएह मनोकामना।

श्री आशीष अनचिन्हार

ओहि समयमे हम भुवनेश्वरी मंदिरमे दर्शन कए निकलि रहल छलहुँ। करीब साढ़े चारि बाजि रहल छलहुँ। हमर फेसबुकपर पोस्ट कएल गेल कामाख्या भगवती मंदिर लगक फोटो देखि श्री आशीष अनचिन्हारजी फोन केलथि-

“फेसबुकपर देखलहुँ जे अपनेसभ कामाख्यामे छी।”

“आइए गुवाहाटी पहुँचलहुँ। कामाख्या भगवतीक दर्शनक बाद भुवनेश्वरी मंदिरमे दर्शन कए बाहर निकलि रहल छी।”

“बहुत प्रसन्नताक बात। कतए रुकल छी।”

“गुवाहाटी स्थित सीपीडब्लुडी अतिथिगृहमे।”

गप्प-सप्प भइए रहल छल कि फोन कटि-कटि जाइ। पहाड़ी सभक कारण नेटवर्क वाधित भए जाइत छल।

“बेर-बेर फोन कटि रहल अछि। डेरा पहुँचैत छी। फेर गप्प करब।”

गप्पेक क्रममे ओ कहलनि जे भुवनेश्वरी मंदिर दरभंगा महराजक बनाओल छनि। साँझमे डेरा पहुँचलाक बाद हम अपन पता हुनका ह्वात्सएपपर पठा देलिअनि। ओ तुरंत लिखैत छथि-

“हम अस्सी किलोमीटर फटकी रंगियामे रहैत छी। तथापि अपनेसँ भेंट करबाक हेतु उत्सुक छी। की पता फेर एहन अवसर कहिआ भेटत ?”

“हमरो अपनेसँ भेंट करबाक बहुत इच्छा अछि। हम चौदह तारिख भेंट-घाँटेक हेतु खाली रखने छी।ओहिसँ पूर्व चेरापुंजी,शिलांग जेबाक अछि।”

“अच्छा अहाँ ओमहरसँ वापस होउ। प्रयास करब जे हमसभ बीचमे कतहु भेंट करी। ”

तकर बाद फोन कटि गेल। चेरापुंजीसँ लौटलाक बाद तेरह अप्रैल कए अनचिन्हारजीसँ भेंट करबाक हेतु हम मोने-मोन कार्यक्रम बनबिते रही कि हुनकर फोन आएल-

“हमरासभक भेंट नहि भए सकत। कार्यालयमे किछु जरूरी काज आबि गेलैक अछि। ताहिमे रविओ दिन व्यस्त रहब।”

की कहितिअनि? तकर बाद बड़ी काल धरि मैथिलीसँ जुड़ल विषयसभपर हमसभ चर्च करैत रहलहुँ। विदेह पत्रिकामे हुनकर अनेक सालसँ कएल जा रहल योगदानक चर्च तँ भेबे कएल। निश्चित रूपसँ अनचिन्हारजी कतेको सालसँ विदेह पत्रिकाक माध्यमसँ आदरणीय श्री गजेन्द्र ठाकुरजी आ हुनकर अन्य सहयोगी लोकनिक संग बहुत महत्वपूर्ण

काज कए रहल छथि। मैथिली गजलक क्षेत्रमे हुनकर योगदानक चर्च होइते रहैत अछि। एमहर आदरणीय गजेन्द्रजी आ हुनकर श्रीमतीजीसँ जुड़ल साहित्यिक विषयपर ,प्रीति कारण सेतु बान्हल, नामसँ पुस्तक संपादित केलनि अछि। एहन सृजनशील आ मैथिलीप्रेमीसँ भेंट कए बहुत नीक लगैत। मुदा कोनो बात नहि। ओ स्वस्थ रहथु,एहिना सक्रिय आ सृजनशील बनल रहथु। आइ ने काल्हि भेंट हेबे करतैक। ओहुना विदेहक माध्यमसँ तँ हमसभ निरंतर संपर्कमे रहिते छी।

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी

१० मार्च २०२४ कए हमसभ गुवाहाटी स्थित अपन डेरापर वापस जाइत रही कि आदरणीय श्री कामेश्वर चौधरीजीक फोन आएल। गप्प-सप्पक क्रममे हम कहलिअनि जे गुवाहाटीमे छी। ओ तुरंत कहैत छथि-

“प्रेमकान्त चौधरीजीसँ संपर्क केलिअनि कि नहि?”

हुनकर नाम हमरो सुनल रहए। गुवाहाटीमे मैथिलीक पुरान खाम्ह छथि ओ। मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटीक स्थापक अध्यक्ष रहथि आ एक्कैस वर्ष धरि ओहि पदपर रहलथि। अखनहु पूर्वोत्तर मैथिल पत्रिकाक संपादक छथि। फोनपर सेहो एकाध बेर हुनकासँ गप्प भेल अछि। तेँ हुनकासँ भेंट तँ करबाक छलहे। मुदा सोचने रही जे पहिने चेरापुंजीसँ घुमि आबी। तकर बाद ई सभ कएल जेतैक। ताहि हेतु १३,१४ अप्रैलक समय हम रखनो रही। फेर भेल जे अपन कार्यक्रमक जनतब पहिनेसँ दए देबनि तँ बढ़िआँ रहत। हम ह्वात्सअपपर अपन कार्यक्रमक जनतब हुनका देलिअनि। ओ तुरंत उत्तरो देलनि।

तेरह अप्रैलक भोरे सबाआठ बजेक आसपास आदरणीय श्री प्रेमकान्त चौधरीजीक फोन आएल-

“अपनेक कोना की कार्यक्रम अछि?”

“अखन तँ हम अपन ग्रामीणक ओहिठाम जाएब। ओहिठामसँ लौटलाक बाद खाली रहब। काल्हि सेहो भरिदिन खालीए छी।”

“अपनेक ग्रामीणक की नाम छनि?”

“रत्नेश्वर मिश्र”

"ओ हमरा जनैत छथि कि नहि?"

"जनिते हेताह।"आ से बात सही निकलल। श्री प्रेमकान्त चौधरीजीकेँ ओ नीकसँ जनैत छथिन। ओएह नहि,अपितु गुवाहाटीमे रहनाहर साइते केओ मैथिल हेताह जे हुनकर नाम नहि सुनने होथि। तकर कारण हुनकर मैथिली-मिथिलासँ प्रेम थिक । हुनकर स्वभावसे बहुत मिलनसार अछि। ई सभ बात हमरा तखन बेसी नीक जकाँ बुझाएल जखन १४ अप्रैलक दुपहर बारह बजेक आसपास हमरासँ भेंट करए ओ हमर सीपीडब्लुडी अतिथिगृह अएलाह। बेस नमगर-पोरगर धुआ ,गोर वर्ण आ आकर्षक छवि। देखितहि लागल जेना कतेक दिनसँ परिचित होथि। हमसभ सोझे अपन कोठरी संख्या तीनमे चलि जाइत छी। प्रेमकान्तजी अपन विजिटिंग कार्ड देलनि। ओहिमे वर्णित हुनकर योग्यता,अनुभव देखि चकित रही। सम्मान आ पुरस्कारक तँ जेना हुनकापर वर्षा भेल छनि। अतिथिगृहमे चाहक हेतु पहिनेसँ कहने रहिऐक। ओ सभ चाह अनबो केलक ,मुदा मीठ आ दुध बला चाह प्रेमकान्तजी पिबैत नहि छथि। ओकरा हुनका हेतु बिना दूधक चाह अनबाक हेतु कहलिऐक। प्रेमकान्तजी ओकरा स्वयं असमिआमे नीकसँ बुझा देलखिन जे केहन चाह बनेबाक छैक। से सभ सुनि कए जे ओ गेल से गेल। आधा घंटासँ बेसीए समय बीति गेल। हमरा बहुत संकोच भए रहल छल। मुदा कएले की जाइत? ताबेमे ओकरा चाह अनैत देखलिऐक। प्रेमकान्तजी चौल करैत कहलखिन-

"पत्ती आनए चाह बगान चलि गेल छलह की?"

ओ लजा गेल,किछु उत्तर नहि दए सकलनि, चाह राखि कए चलि जाइत रहल। एहि बीच हमसभ अनेक विषयपर गप्प-सप्प करैत रहलहुँ। प्रेमकान्तजीक चाह सठि गेल छलनि। हमसभ तँ चाह पहिने पिबि लेने रही। आब भोजनक समय भए रहल छलैक। अतिथिगृहक भोजनालयसँ भोजन करबाक आग्रह कएल जा चुकल छल। हम प्रेमकान्तजी केँ सेहो भोजन करबाक निवेदन केलिअनि। बहुत मोसकिलसँ ओ ताहि हेतु तैयार भेलाह। हमसभ संगे-संगे भोजन केलहुँ। आब करीब दू बाजि रहल छल। प्रेमकान्तजीकेँ कार्यालय जेबाक छलनि। हमसभ हुनकासँ गप्प-सप्पमे

ततेक आनन्दित रही जे फराक हेबाक मोन नहि होअए। मुदा हुनका तँ जेबाक छलनिहे। आखिर हुनका बिदा केलिअनि। जाइत-जाइत ओ कहैत गेलाह जे साँझमे हुनकर कार्यालयमे मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटीक बैसार हेतैक। ओहिमे अपने दुनूगोटेकेँ अएबाक अछि।

हमसभ बहुत आतुरतासँ साँझक प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ। अपन माटिसँ एतेक फटकी रहिओ कए गुवाहाटीमे प्रेमकान्तजी आ हुनकर मैथिल मित्रलोकनि मैथिली-मिथिलाक झंडा फहरओने छथि से बहुत महत्वपूर्ण बात थिक। साँझमे छओ बजे हमसभ जीएस रोडपर एबीसी पुलिस प्वाइंट लग प्रेमकान्तजीक कार्यालय पहुँचलहुँ। प्रेमकान्तजी पहिनेसँ ओतए छलाहे। मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटीक वर्तमान अध्यक्ष आदरणीय श्री सत्य नारायण साहुजी सेहो उपस्थित रहथि। सत्य नारायणजी बहुत योग्य व्यक्ति छथि। ओ पंजाब नेशनल बैकमे महाप्रबंधक(जीएम) क पदसँ सेवानिवृत्त भेल छथि। अपन सेवाकालमे ओ कतेको महत्वपूर्ण पदसभपर रहल छथि। आसाम ग्रामीण विकास बैकक अध्यक्ष सेहो रहल छथि। एहन सुयोग्य व्यक्तिसँ भेंट होएब निश्चित रूपसँ बहुत भाग्यक बात छल। ओहिठाम आठ-दसगोटे मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटीक वर्तमान आ भूतपूर्व अधिकारी लोकनि कार्यक्रममे भाग लेबाक हेतु आएल रहथि । हुनकासभसँ सेहो परिचय भेल। असलमे १४ अप्रैलक चौबीस सालपूर्व मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटीक स्थापना भेल छल। आइए ओकर स्थापना दिवस छल। एतेक दिनसँ बहुत रास परेसानीक अछैत ई संस्था निर्वाध रूपसँ चलि रहल अछि से गौरवक बात थिक। संस्थाक गतिविधिपर आदरणीय प्रेमकान्तजी आ आदरणीय सत्यनारायणजी अपन-अपन बात रखलनि। आनो गोटे सेहो अपन विचार देलनि। ओही बीचमे ओ सभ हमरा दुनू बेकतीक विधिवत स्वागत केलनि। स्मृति चेन्ह सेहो देलनि। कार्यक्रममे हमहूँ अपन साहित्यिक यात्राक बारेमे बजलहुँ। चाह-पान भेलैक। फोटो खिचल गेलैक। तकर बाद सभगोटे बेरा-बेरी ओहिठामसँ बिदा भेलहुँ। प्रेमकान्तजी हमरा अतिथिगृह धरि छोड़ि देलनि। जाइत-जाइत कहलथि-

“हम भोरे फेर आएब। अपनेक हेतु किछु उपहार रखने छी। आबए काल बिसरा गेल।”

हम बहुत मना केलिअनि । मुदा भोरे साते बजे ओ फोन केलथि- “हम दस मिनटमे आबि रहल छी। कनी रूकि जाएब।”

हमसभ हबाइ अड्डा जेबाक हेतु तैयार रही। मुदा हुनकर आग्रह टारब संभव नहि बुझाएल। कनीके कालक बाद ओ हाथमे एकटा झोरा लेने आबि गेलथि। हुनकर स्नेहपूर्ण उपहारकेँ सम्हारि कए रखलहुँ।कनी काल हमसभ गप्पो केलहुँ।आब समय समाप्त भए रहल छल। हुनकासँ बिदा लेब अनिवार्य भए गेल छल। अस्तु,हमसभ टैक्सीपर बैसि गेलहुँ। प्रेमकान्तजी हमरासभकेँ प्रणाम केलनि। कहि नहि सकैत छी कतेक आत्मीय आ भावपूर्ण छल हुनकर व्यवहार। किछु तँ विशेषता हुनकामे छनिहे जे एतेक लोकप्रिय छथि,सेहो एतेक दिनसँ। अंत-अंत धरि ओ हमरासभक लगीचमे रहलथि। टैक्सीपर बहुत दूर धरि बढ़ि गेल रही। मुदा प्रेमकान्तजीक प्रेमपूर्ण व्यवहारसँ अभिभूत रही,आनन्दित रही। मोनमे एकटा संतुष्टि भाव छल जे हमरसभक ई यात्रा माता कामाख्याक असीम अनुकंपासँ बहुत सफल आ आनन्ददायक रहल।

२३।०४।२०२४

अहमदाबाद,सोमनाथ आ द्वारका यात्रासँ संवंधित किछु चित्र

साबरमती आश्रम,अहमदाबाद

अटल सेतु, अहमदाबाद

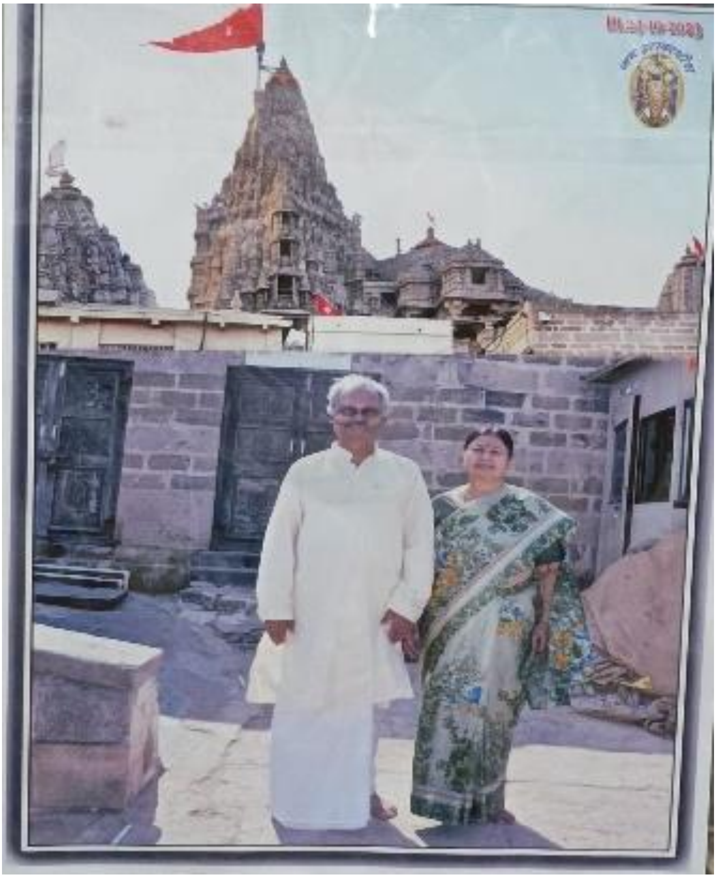

द्वारिकाधीश मंदिर

इन्दौर,महाकाल,ओंकारेश्वर यात्रासँ संवंधित किछु चित्र

राजबाड़ा इन्दौर

खजराना गणेश मंदिर इन्दौर

भैरव मंदिर ,उज्जैन

जहाज महल माण्डू

गया यात्रासँ संवंधित किछु चित्र

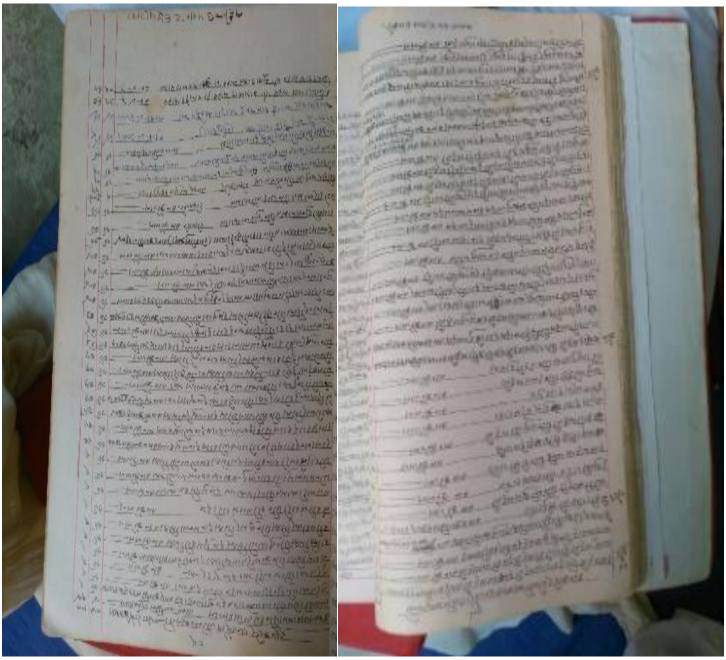

गयाक पंडाक खाता

फल्गु नदीमे पिण्डदान

पंडाजी ओहिठाम ब्राह्मण भोजन

चित्रकुट यात्रासँ संवंधित किछु चित्र

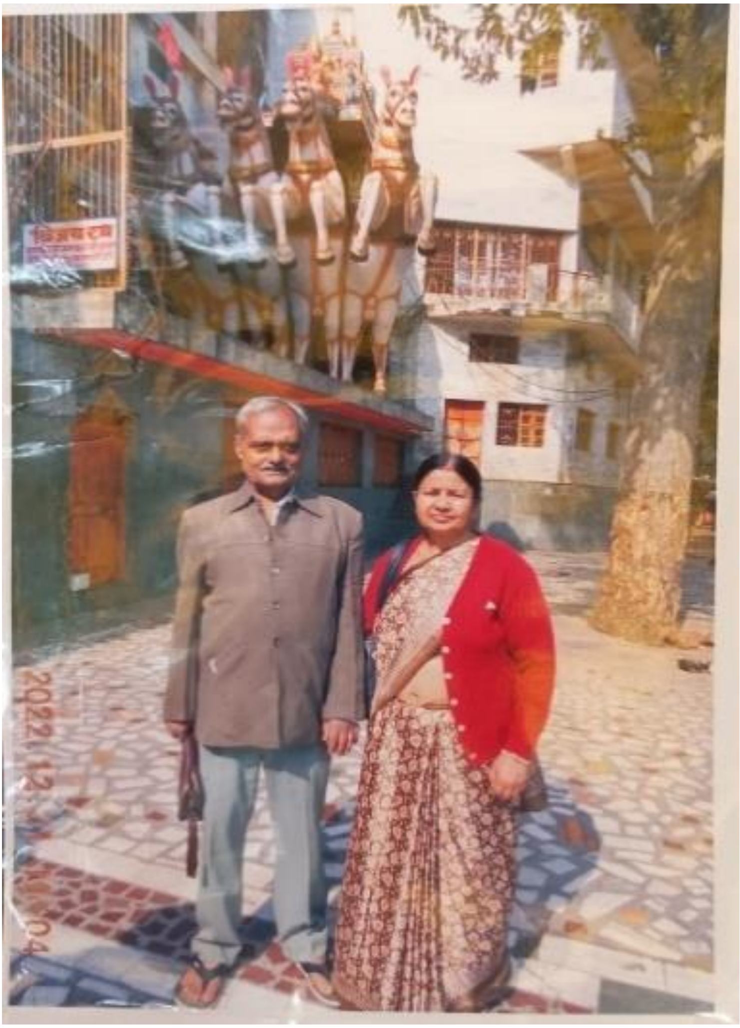

अनसुइआ मंदिर,चित्रकूट

मंदाकिनी नदीक रामघाटपर संध्या आरती

चित्रकुटमे बानर

वृंदावन यात्रासँ संवंधित किछु चित्र

प्रेम मंदिर: वृन्दावन

दरभंगा,अड़ेर डीह,निर्मली त्रासँ संवंधित किछु चित्र:

डाक्टर कमलाकान्त भंडारीजीक आवास(सिनुआरा,अड़ेर)

आदरणीय जगदीश प्रसाद मंडल,डाक्टर उमेश मंडल संग निर्मली

सगर राति दीप जरय,निर्मलीमे

सगर राति दीप जरए निर्मलीमे कथापाठ

गुवाहाटी,कामाख्या,शिलांग ,चेरापुंजी यात्रासँ संबंधित चित्र

कामाख्या भगवती मंदिर

भुवनेश्वरी मंदिर

बोरापानी झील,शिलांग

किनरेम जलप्रपात चेरापूंजी

चीरो भाइ,गुवाहाटी

उमानन्द मंदिर,गुवाहाटी

उमियम झील शिलांग

वार्ड झील शिलांग

मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति गुवाहाटी

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198699.
स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.
शंखनाद(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/200903.
इएह थिक जीवन(संस्मरण)
https://pothi.com/pothi/node/202488.
ढहैत देबाल(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/203720.
पाथेय
https://pothi.com/pothi/node/205009.
हम आबि रहल छी(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/206093.
प्रलयक परात(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/207234.
बीति गेल समय(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/208351.
प्रतिबिम्ब(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/208632.
बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/209281.
राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)

https://bit.ly/3The07Y

दीप जरैत रहए(उपन्यास)

https://t.ly/nU_E.

ठेहा परक मौलाएल गाछ(उपन्यास)

https://shorturl.at/abhkJ

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.